पतन

पतन

पतन

लेखक

आल्बेयर कामू

रूपान्तरकार

उमा राव



राजकमल प्रकाशन
दिल्ली इलाहाबाद बम्बई पटना

मूल्य २.२५ रुपये

फ्रेंच उपन्यास La Chute १९५६ का हिन्दी रूपान्तर

मूल प्रकाशक गैलीमार, पेरिस

मुद्रक हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली

श्रीमान वेना न मानें तो मैं आपकी सहायता करूँ ! मुझे डर है कि आप उस बनमानुस को, जो इस जगह का भाग्यविधाता है, अपनी बात समझा न सकेंगे। बात असल म यह है कि वह डच भाषा के अलावा और कोई भाषा नहीं जानता। अगर आप मुझे अपनी ओर से वकालत करने की इजाजत न देंगे तो शायद वह अनुमान ही न कर पाएगा कि आप जिन शराब की माग कर रहे हैं। लीजिए, उम्मीद है कि वह मेरी बात समझ गया—उसके सिर हिलाने के तो यही मतलब हुए कि उसने मेरी बात मान ली है। लीजिए, वह चल पड़ा। वाह ! उसकी जल्दबाजी म भी एक प्रकार की सावधानी और सकल्प है। आप भाग्य शाली हैं कि उसने वह स्वर नही निकाला। जब वह किसी की खिदमत नही करना चाहता तो बस गुर्रर की-सी एक आवाज कर देता है। कुछ जोर-जबरदस्ती नहा करता। बडे-बड जन्तुओ को ही तो अधिकार है अपनी तबीअत के मालिक होने का। अच्छा श्रीमान, अब मैं चलता हूँ। आपकी सेवा कर सका इसकी मुझे प्रसन्नता है। धन्यवाद ! अगर मुझे यह निश्चय होता कि मैं आपको परेशान नही कर रहा हूँ तो अवश्य ले लेता आप बहुत ज्यादा मेहरबान हैं तो मैं अपना गिलास यहीं लिए आता हूँ।

आप ठीक कहते हैं। इसका मौन हमें बधिर बना देता है। आत्मिकता का निम्नस्थता है वह मौन, विभीषिकाओ की मार से वाचिन्न। कभी-कभी तो मैं अचम्भे म पड जाता हूँ कि वह कितने हठ के साथ सभ्य भाषाओ की उपेक्षा करता है। इसका धंधा है एम्स्टरडम के

इस ऱाराबखाने म हर देश के नाविकों का मन बहलाना—और इस शराबखाने का नाम इसने रख छोड़ा है जाने क्या, मेक्सिको सिटी'। क्या आपका खयाल नहीं है कि इस तरह के काम म अपने अनजान के कारण दिक्कत उठाने का उसे डर होगा? जरा कल्पना कीजिए, डामनोन मनुष्य की बबल की मीनार म बन्द! बेशक वह हक्का-बक्का रह जाएगा अपनी जानी-पहचानी दुनिया से बिलकुल बाहर। पर इसे तो अपने निर्वासन का कोई आभास नहीं है। यह तो अपने ही रास्ते चलता जाता है कोई चीज इस पर असर नहीं करता। इसके मुख स एक दुलभ वाक्य मैंने सुना था जब इसने घोषणा की थी कि लना हो तो लो, वरना जाने दो। वह क्या चीज थी जिसे कोई लेता या जाने देता? जरूर वह हमारा यार खुद ही रहा होगा। मैं मानता हूँ कि ऐसे जीव मुझे बहुत आकर्षित करते हैं जो समूचे एक ही खण्ड से गढे गए हों। ऐसे किसी भी व्यक्ति के मन म, जिसने व्यवसाय की खातिर या अन्त प्ररणा से मानव के विषय म चिन्तन किया हो स्तनपायी योनि के लिए कसक उठती ही है। कम-से-कम उनकी प्रेरणाओं का कोई परोक्ष हेतु तो नहीं होता।

सच कहूँ तो हमारे मेजबान के मन म कुछ तो है ही, जिसे वह अपने मन की गहराई म छिपाए रहता है। अपने सामने की जाने वाली बातों को न समझ पाने की वजह से वह बड़ा अविश्वासी प्रकृति का हो गया है। तभी तो उसके चेहरे पर एक गम्भीर भाव टपकता रहता है मानो उसे इसमें सन्देह हो कि मनुष्य म सब-कुछ सर्वथा दोष हीन नहीं है। उसकी इसी प्रवृत्ति के कारण उसके व्यवसाय के अतिरिक्त बाकी विषयों पर उससे बातचीत करना मुश्किल है। मिसाल के लिए, उसके सिर के ऊपर पीछे की दीवार पर वह खाली चौकोर जगह देख रहे हैं न वहाँ से कोई तस्वीर उतार दी गई लगती है। सचमुच वहाँ एक तस्वीर लगी थी बड़ी उम्दा तस्वीर थी एक सही मायना म उत्कृष्ट कलाकृति। इस जगह के मालिक ने जब उसे प्राप्त किया था

ग्रौर जब उसमे विदा ली तब दोनो अवसरों पर मैं मौजूद था। दोनो ही अवसरो पर उसने एक-सा निश्चय अनिश्चय इतना सोचा विचारा। इस दृष्टि से आप मानेंगे कि समाज ने उसके स्वभाव की सहज निष्कपटता का कुछ दूषित कर दिया है।

आप यह न समझें कि मैं उसके बारे में कोई फैसला दिये दे रहा हूँ। मैं उसके अविश्वास को मुनासिब समझता हूँ और अगर मेरा वाचाल स्वभाव इसके विरुद्ध न होता तो उसके अविश्वास में साझा भी बँटाता। पर अफसोस मैं बहुत बातूनी हूँ और बड़ी जल्दी दोस्ती कर लेता हूँ। हालांकि मैं आचार-व्यवहार में दूरी बनाए रखना भी जानता हूँ, पर बातचीत करने के अवसर मैं हाथ से नहीं जाने देता। जब मैं फ्रांस में था और अगर मुझे कोई बुद्धिमान व्यक्ति मिल जाता तो फौरन उसके संग लगने की कोशिश करता। यदि यह मूर्खता है तो आप मेरे इस सभाव्य-कारक के प्रयोग पर मुस्करा रहे हैं। मैं मानता हूँ कि यह कारक मुझे खास पसंद है और बस ही सुसस्कृत सम्भाषण भी। आप सच मानिए कि अपनी इन कमजोरियों का मैं स्वयं बड़ा आलोचक हूँ। मैं खूब जानता हूँ कि अन्दर रेशमी कपड़े पहनने के यह अनिवार्य अर्थ नहीं होते कि आपके पैर गन्दे हैं। जो भी हो, विशुद्ध रेशम की तरह शैली के पीछे भी खाज छिपा रहता है। मैं अपने को यह कहकर सात्वना दे लेता हूँ कि भाषा के हत्यारे भी तो पाक-साफ नहीं होते। हाँ जरूर एक गिलास शराब और लें।

आप क्या एम्स्टरडम में अभी कुछ दिन ठहरेंगे? बड़ा सुन्दर शहर है है न? मनमोहक? यह विशेषण मैंने बहुत दिन से नहीं सुना था जब से पेरिस छोड़ा, तब से—वर्षों हुए। पर स्मृतियों की बात ही निराली होती है। हमारा उस रमणीय राजधानी की—या उसके घाटों की—कोई भी बात मैं नहीं भूला हूँ। पेरिस वास्तव में एक मरीचिका है एक भव्य रंगमच चालीस लाख छायाचित्रों से आबाद। पिछली जन-गणना के अनुसार पचास लाख। अब तो और भी बढ़ गए होंगे। खैर यह

काई आश्चय की बात नही। मुझे हमेशा लगता था कि हमारे नाग-रिक प्रभुओ के दो ही व्यसन हैं—विचार और व्यभिचार। जिसको कह लीजिए न कोई अथ न कोई तुक। फिर भी हम उनकी निन्दा न ही करें तो अच्छा। वे अकेले तो एस नही, सारे यूरोप का ही यह हाल है। *कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि भविष्य के इतिहासकार हमारे विषय म क्या कहग ?* आधुनिक मानव के लिए एक वाक्य पर्याप्त है—उसने व्यभिचार किया और अखबार पढे। और अगर आप इजाजत दे तो मैं कहूँगा कि इस आजपूण परिभाषा पर इस विषय की इतिश्री हो चुकेगी।

पर हाँ, डच जाति की बात नही है, व तो कहीं कम आधुनिक हैं। उनक पास समय है। देखिए तो उन्ह वे करत क्या हैं ? य सज्जन जो इधर बठे है वहाँ बठी उन महिलाओ का मेहनत पर जीते हैं। और ये सब नर और मादा, दोनो बिलकुल मध्यम-वर्गीय जीव हैं जो यहा हमशा की तरह कल्पना-जगत म रहने की इच्छा से या मूरतावश आये हैं या दूसरे शब्दो म या कह कि अत्यधिक या अति-न्यून कल्पना-शक्ति के कारण। कभी कभी य सज्जन छुरे या पिस्तौल के खेल खेल लेते हैं, पर आप यह न समझ लीजिएगा कि इन्ह उनम कोई विशेष रुचि है। य केवल अपना पाट अदा करने के लिए यह सब करते हैं और गोली चलने-चलाने के समय उनकी जान निकलती रहती है। फिर भी मैं इन्हे उन लोगो स अधिक नतिकतापूण समझता हूँ जो परिवार की परिधि क अन्दर ही पारस्परिक सघष की प्रक्रिया म व्यक्ति की हत्या कर डालते हैं। क्या आपने कभी इस पर ध्यान नही दिया कि हमारे समाज की व्यवस्था इसी ढग की समष्टि के लिए की गई है ? आपने ब्राज़ील की उन छोटी-छोटी मछलियो के बारे म तो सुना ही होगा जो असाव धान तराक पर हजारो की सख्या म आक्रमण कर देती हैं और नन्ही मे कुतर-कुतर कर उसका मांस साफ कर देती हैं—और तब रह जाता है केवल एक ढाँचा। जी हाँ यही उनकी व्यवस्था है। 'क्या तुम एक

अच्छा, साफ-सुथरा जीवन चाहते हो, जैसा औरों का है?' आप जवाब देते हैं 'हाँ अवश्य। कोई ना कर ही कैसे सकता है? 'ठीक है साफ-सुथरा बना दिया जाएगा—यह रही तुम्हारी नौकरी, यह तुम्हारा परिवार और यह तुम्हारा व्यवस्थित विश्राम।' और फिर वे नुकीले दांत मांस को छेद-छेदकर हड्डी तक पहुँच जाते हैं। पर मैं अन्याय कर रहा हूँ। मुझे व्यवस्था 'उनकी' नहीं कहनी चाहिए, यह तो 'हमारी' है। सवाल यह है कि कौन किसे साफ-सुथरा कर देगा।

लीजिए हमारी शराब आखिर आ ही गई। आपकी सम्पन्नता बढ़े। हाँ बनमानुस ने 'डॉक्टर' कहकर मुझे सम्बोधित करने के लिए अपना मुंह खोला था। इन देशों में हर कोई या तो डॉक्टर कहा जाता है या प्रोफेसर। ये लोग आदर प्रकट करना पसन्द करते हैं—कुछ तो दया के कारण और कुछ विनय से। कम-से-कम इन लोगों में विद्वेष भावना एक राष्ट्रीय संस्थान नहीं बन गई है। इसके अलावा मैं डॉक्टर हूँ भी नहीं। आप अगर जानना ही चाहें तो मैं यहाँ आने से पहले वकील था। और अब मैं कह सकता हूँ कि मैं एक अनुतापी निर्णायक हूँ।

मुझे अपना परिचय देने की आप इजाजत दें—जॉ बपटिस्ट क्लेमेंस आपकी सेवा में हाज़िर है। आपसे मिलकर खुशी हुई। आप निश्चय ही व्यापारी होंगे। एक प्रकार से? क्या खूब जवाब है! समझ-बूझ का भी है। हर जगह हम जो भी हैं एक प्रकार से ही तो हैं। अब मुझे जासूसी करने की इजाज़त दें। आपकी आयु एक प्रकार से मेरी आयु के बराबर है आपकी नजर चालीस साल की उम्र के दुनियादार आदमी की नज़र है जिसने एक प्रकार से सब-कुछ देखा और अनुभव किया है। आपकी वेशभूषा सुरुचिपूर्ण है, एक प्रकार से जैसा कि हमारे देश में लोगों की रहती है और आपके हाथ मुलायम हैं। इसलिए आप बूर्जुआ हैं—एक प्रकार से। पर एक सुसंस्कृत बूर्जुआ। सम्भाव्य-कारक के प्रयोग पर मुस्कराना वास्तव में आपकी संस्कृति को दूनी स्पष्टता से सिद्ध करता है, क्योंकि एक तो आपने उसे पहचाना और फिर अपने को उससे

श्रष्ठतर अनुभव किया। और अन्त म मैं आपके लिए विनोद की सामग्री हूँ। आत्मश्लाघा न समझ इसे आप। आपकी इस प्रवृत्ति म उदारता निहित है। इसलिए आप एक प्रकार से पर जाने भी दीजिए। व्यव साया म मुझ सम्प्रदायो से भी कम रुचि है। आप मुझे दो सवाल पूछने दें और अगर उन्हे नामुनासिब समझें तो जवाब न दीजिएगा। आपकी कोई सम्पत्ति है? कुछ है? बहुत खूब! उसके उपभोग म आपने गरीबो को शामिल किया है? नही? तो मैं आपको सदूसी कहूँगा। आप यदि धमग्रन्था स भली भाँति परिचित नही हैं तो मैं मानता हूँ कि यह बात आपकी समझ म न आएगी। समझ म आ गई? तो आप धमग्रन्थो से परिचित हैं। निश्चय ही आपको जानन की मरी इच्छा बलवती हो रही है।

और मेरे बारे म आप स्वय निणय कर ल। कद, कन्धा और चेहरे म मुझ बताया गया है मैं फुटबाल के खिलाडी की तरह लगता हूँ। है न यह बात? पर अगर मरी बातचीत स अन्दाज लगाएँ तो यह मानना पडगा कि सूक्ष्मता मे कुछ गुण मुझम हैं। जिस जानवर के बाला स मरा ओवरकोट बना है वह हो सकता है कि गन्दा रहा हो, पर मरे नाखून तो अच्छी तरह सँवरे हुए हैं। मैं भी दुनियादार हूँ पर मैं बिना आगा-पीछा सोचे मात्र आपकी आकृति क आधार पर विश्वास करके य सब बातें कर रहा हूँ। और अन्त म शिष्ट आचरण और सुस स्कृत भाषा क बावजूद मैं जोदिक पर स्थित नाविका के इन शराबखाने म बराबर आया करता हूँ। बोलिए छोड भी दीजिए। मरा व्यवसाय दुहरा है बस—मनुष्य की तरह। मैंने आपको अभी बताया ही है कि मैं अनुतापी निर्णायक हूँ। केवल एक चीज मरे बारे म सरल है कि मेरी कोई सम्पत्ति नहीं है। हाँ मैं धनी था। नही मैंने गरीबो क साथ कुछ बँटाया नहीं। इसस क्या साबित होता है? कि मैं भी सदूसी था—आह! सुनिए। बन्दरगाह म कुहासे क बिगुल की आवाज सुनायी द रही है? आज रात जुइडरजी पर कुहासा रहेगा।

आप अभी न चल दिए? क्षमा करें, मैंने शायद आपको रोके रखा। नहीं-नहीं, मेरी प्रार्थना है मैं आपको दाम न चुकाने दूंगा। 'मैक्सिको सिटी' में मैं मेजबान हूँ और आपको मेहमान बनाकर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई। मैं निश्चय ही कल भी यहीं रहूँगा, जैसे कि हर शाम रहता हूँ और आपका निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार करूँगा। वापस जाने का रास्ता? हूँ, अगर आपको आपत्ति न हो तो सबसे आसान तो यही होगा कि मैं बन्दरगाह तक आपके साथ चला चलूँ। वहाँ से यहूदी बस्ती के किनारे से निकलकर आप उन आलीशान सड़कों पर पहुँच जाएँगे जहाँ फूलों से लदी ट्रामगाड़ियाँ गरजती हुई दौड़ती हैं। आपका होटल उन्हीं में से एक पर है—'दामराक' पर। पहले आप। मैं यहूदी बस्ती में रहता हूँ—या कहिए कि जो तब तक यहूदी बस्ती थी जब तक कि हमारे हिटलरपन्थी भाई-बन्दों ने उसके घनेपन का ध्यान नहीं दिया। क्या सफाई की गई थी! पचहत्तर हज़ार यहूदियों को या तो निर्वासित कर दिया गया था या मौत के घाट उतार दिया गया था। इसे कहते हैं 'वैक्यूअम क्लीनिंग'। उनके परिश्रम की और नियम से चलने के धीरज की मैं दाद देता हूँ। आदमी में चारित्रिक दृढ़ता न हो तो नियमों का पालन आवश्यक है। यहाँ तो उसने कमाल ही कर दिखाया, कोई इस बात से इन्कार नहीं कर सकता। और मैं जहाँ रहता हूँ वह स्थान इतिहास के घोरतम अपराधों में से एक का घटनास्थल रहा है। शायद इसी कारण मैं उस वनमानुस और उसकी मनोवृत्ति को सन्देह करने की प्रवृत्ति को समझ पाता हूँ। इस तरह मैं अपनी प्रकृति के विरुद्ध, जो मुझे रुचिकर चीज़ों की तरफ खींचती है, संघर्ष कर पाता हूँ। जब मुझे कोई अनजानी शक्ल दिखायी देती है, तो मेरे भीतर खतरे की घण्टी बज उठती है 'आहिस्ता! खतरा है!' जब आकर्षण अधिकतम होता है तब भी मैं सतर्क रहता हूँ।

आप जानते हैं मेरे छोटे-से गाँव में प्रतिशोध के सिलसिले में एक जर्मन अफसर ने बड़ी शालीनता से एक वृद्धा से निवेदन किया था, 'आप कृपया चुनाव कर लें कि आपके दोनों बेटों में से कौनसा बन्धक

के रूप में गानी से उड़ा दिया जाए ?" चुनाव कर लें ! कल्पना कर सकते हैं आप इसकी ? वह ? नहीं, यह ? और फिर उसे जाते हुए देखें। खैर हम लोग उसकी और चर्चा क्या करें ? पर विश्वास कर श्रीमान् *अचम्भे की कोई भी बात सम्भव है। मैं जानता था एक शुद्ध हृदय था।* अविश्वास उसने त्याग दिया था। वह शान्तिवादी और स्वाधीनतावादी था। समस्त मानव-जाति यहाँ तक कि पशुओं को भी समान रूप से प्यार करता था। विलक्षण आत्मा था, इतना तो निश्चित है। हाँ तो, यूरोप के पिछले धर्मयुद्ध के दौरान उसने गाँव की शरण ली। अपनी देहरी पर उसने लिख रखा था— तुम जहाँ कहीं से भी आये हो अन्दर आओ तुम्हारा स्वागत है। और क्या आप सोच सकते हैं कि इस उदात्त निमन्त्रण को किसने स्वीकार किया ? नागरिक सेना ने। वह अन्दर घुसी मकान में पसरकर फैल गई—और उस उदार मकान मालिक की अंतड़ियाँ-पसलियाँ फाड़ फेंकीं।

ओह श्रीमतीजी ! क्षमा प्रार्थी हूँ। पर उन्होंने तो धर्मे शब्द भी न समझा था। इतने सारे लोग ? इतनी देर हुए भी बाहर घूम रहे हैं—बारिश के बावजूद जो कई दिन से थमने का नाम ही नहीं लेती है ? *भाग्य से 'जिन' शराब तो है—इस अन्धकार में प्रकाश की एक* मात्र झलक ! आपको भी लगता है न कि वह एक सुनहले तांबे के रंग का प्रकाश आपके अन्दर जगाती है ? 'जिन' शराब का गरमाहट में मुझे शाम के वक्त शहर की सड़कों पर घूमना अच्छा लगता है। मैं रातों घूमता रहता हूँ, सपने देखता रहता हूँ या निरन्तर अपने आपसे वार्तालाप करता रहता हूँ। हाँ इस शाम की तरह—मुझे डर है कि मेरी बातों से आपका सिर न चकराने लगा हो। शुक्रिया आप बहुत मेहरबान हैं। पर यह तो मेरा उफान है। जैसे ही मेरा मुँह खुलता है शब्द उफनने लगते हैं। इसके अलावा इस देश से मुझे प्रेरणा मिलती है। शहर की पटरियों पर उमड़ती भीड़ मुझे पसन्द है। घरों और नहरों के बीच की थोड़ी-सी जमीन में सवालब भरे हुए कुहासा, ठण्डी भूमि और

पीले कपड़ा की तरह सुखाते हुए समुद्र के कदी ! मुझे यह सब पसन्द है। इसमें दृढ़ है। यह यहाँ भी है अन्यत्र भी।

हा-हा। इस भीगी सड़क की पटरी पर परों की भारी आवाज़ सुन-कर और गम्भीरता से दूकानों के अन्दर-बाहर जान आन दबकर (उन दूकानों से जो सुनहली 'हेरिंग' मछलियों से और पीली पत्तियों के रंग के आभूषणों से भरी हैं) आप सोचते होंगे कि वे लोग आज शाम को यहीं हैं। आप भी औरों की तरह ही हैं। आप भी सोचते हैं कि ये भद्र लोग व्यापारी और व्यवसायी सभा के सदस्य हैं जो अपने अमरत्व की सम्भावनाओं के साथ सुनहली अशर्फियों को भी गिनते हैं, जिनके जीवन की गतात्मकता इतनी ही है कि वे कभी-कभी बिना अपनी चौड़े किनारों की टोपियाँ पहने शरीर-विज्ञान का पाठ पढ़ लेते हैं। आप गलती कर रहे हैं। वे हमारे साथ टहल रहे हैं। देखिए पर देखिए उनके दिमाग कहाँ हैं? उस कुहासे में जो नियॉन प्रकाश, जिन शराब और दूकानों पर लगे लाल और हरे साइन-बोर्डों में से उठती हुई पिपरमेंट की सुगन्ध से बना है? हॉलैण्ड देश एक सपना है श्रीमान्—धुएँ और सोने का सपना दिन में धुएँ से भरा रात को सुनहले प्रकाश में जगमगाता हुआ। और रात दिन उस कल्पना-देश में ऐसे ही जन लोहेंग्रिन भरे रहते हैं, ऊँचे हैंडल लगी वाली साइकिलें स्वप्नावस्था में चलाते हुए, मानो वे अन्त्य-सन्देशवाहक हंस हों—देश भर में समुद्रों के चारों ओर नहरों के किनारे किनारे निरन्तर तरते हुए। उनका मन ताम्रवर्ण बादलों में उड़ता रहता है वे सपने देखते रहते हैं चक्कर काटते घूमते रहते हैं, वे उपासना करते हैं कुहासे के सुनहले भाग धूम्र में नींद में चलते हुए—वे अब यहाँ नहीं हैं। वे हज़ारों मील दूर जा चुके हैं जावा के उस सुदूर द्वीप की ओर। वे इंडोनेशिया के विकृत मुख वाले देवताओं की आराधना करते हैं जिनसे उन्होंने अपनी दूकानों की सब खिड़कियाँ सजा रखी हैं और जो इस समय निरुद्देश्य हमारे सिर पर मँडरा रहे हैं—नीचे उतरने के पहले जैसे वे कोई भड़कीले बन्दर हों जो सीटी-शोर करता

और साइनबोर्डों पर उतरेंगे और घर की याद से बेचैन इन उपनिवेश वासियों को याद दिलाएँगे कि हालैण्ड केवल व्यापारियों का यूरोप नहीं है, समुद्र का भी है—वही समुद्र जो उन दूसरे द्वीपों की राह दिखाता है जहाँ मनुष्य उन्मत्त और आह्लादित होकर मृत्यु पाते हैं।

पर मैं तो अपनी बातों में बहने लगा, इनकी वकालत ही करने लगा। क्षमा प्रार्थी हूँ। आदत श्रीमन् और पेशा और साथ ही यह आकांक्षा भी कि इस शहर को आप पूरी तरह समझ लें और हर चीज़ के मूल तत्त्व को जान सकें। क्योंकि यहाँ हम मूल केन्द्र पर पहुँच गए हैं। आपने इस ओर ध्यान दिया कि यहाँ की घुमावदार नहरें नरक के चक्रों के समान हैं—मध्यमवर्ग का नरक जो दुःस्वप्नों से भरा है। जब कोई बाहर से आता है और उन चक्करों में घूमता है, जीवन सघनतर होता जाता है और अधिक अंधकारमय। इसी कारण उसके पाप भी। अब हम आखिरी चक्कर में पहुँच गए हैं, यह है ? अच्छा आप जानते हैं ? सचमुच आपका वर्गीकरण कठिनतर होता चला जा रहा है। तो आप समझते हैं कि मैं क्यों कहता हूँ कि सारी चीज़ों का मूल केन्द्र यही है, यद्यपि हम इस महाद्वीप के केवल एक छोर पर ही हैं। एक संवेदनशील व्यक्ति के लिए इन विलक्षणताओं को समझ लेना कठिन नहीं। खैर, अखबार पढ़ने वाले और व्यभिचार करने वाले इसके आगे तो जा नहीं सकते। यूरोप के चारों कोनों से आकर वे अन्तर्देशीय समुद्र की ओर मुँह किए उसके मलिन तट पर रुक जाते हैं। वे कुहरे के बिगुल सुनते हैं, कुहरे के गर्भ में धुंधली नावों के छायाचित्रों को ढूँढ़ने की व्यर्थ चेष्टा करते हैं फिर नहरों के ऊपर से लौटते हुए वर्षा में भीगते अपने घर चले जाते हैं। हड्डियों तक ठंड से ठिठुरते हुए वे मेक्सिको सिटी में पहुँच कर तमाम भाषाओं में शराब की माँग करते हैं। मैं वहीं उनकी प्रतीक्षा करता हूँ।

कल तक के लिए विदा श्रीमान्—मेरे स्वदेशवासी बन्धु ! आपको अब आसानी से रास्ता मिल जाएगा। मैं इस पुल तक आपको छोड़

दूगा। मैं रात को कभी पुल पार नहीं करता मैंने शपथ ली थी। मान लीजिए कि कोई पानी म कूद पड । दो म मे एक ही बात सम्भव है—या तो आप उसे वाहर निकालने के लिए खुद भी वही रास्ता अपनाएँगे जो इस ठण्ड के मौसम म खतरे मे खाली नहीं है, या आप उसे वही छोड देंगे। छलाग मारने की इच्छा का दमन करने से कभी-कभी एक विचित्र व्यथा उत्पन्न होती है। नमस्कार ! क्या ? उन खिडकियो के पीछेवाली व महिलाएँ ? सपना श्रीमन् एक सस्ता सपना—इंडीज की यात्रा। वे मसालो की गध से अपना शरीर सुवासित करती हैं। आप अन्दर जाते हैं परदे खीच लिये जाते हैं और यात्रा आरम्भ हो जाती है। उन नग्न शरीरो म देवता उतर आते हैं द्वीप तरने-उतराने लगते हैं वायु म लहराते हुए ताड-वृक्षो के अव्यवस्थित केशो का मुकुट पहने खोयी हुई आत्माएँ। जाइए, देखिए !

अनुतापी निर्णायक होता क्या है ? तो मैंने आपका कुतूहल जगा दिया ? विश्वास कीजिए मेरा तनिक भी बुरा इरादा न था। अच्छा मैं अपनी बात ज्यादा साफ करके कह देता हूँ। एक तरह म कहूँ तो यह मेरे दफ्तर के कामो म स एक है। पर पहले मुझे कुछ तथ्य आपके सामने रखने होंगे ताकि आप मेरी रामकहानी सहज समझ जाएँ।

कुछ साल हुए मैं पेरिस म वकालत करता था, और सच पूछिए तो काफी नामी वकील था। हाँ, मैंने आपको अपना असली नाम तो बताया ही नहीं। ऐसे मामलो म जो नेक काम माने जाएँ, मेरी विशेष रुचि थी, जैसे विधवा और अनाथ। कहा जाता है जाने क्या ऐसी भी विधवाएँ होती हैं जो छल-कपट करती हैं और अनाथ ऐसे भी हैं जो बर्बर होते हैं। पर मेरे लिए तो इतना ही काफी था कि मुझे प्रतिवादी पर अत्याचार की गध-मात्र मिल जाए और मैं मैदान म कूद पडता था। सो कूदना भी कैसा झझावात की तरह ! मेरा हृदय खुला हुआ रहता था। आप

यहाँ तक वह सकन थ कि नीति हर रात मरी हो गोद म सोती थी। मुझे विश्वास है कि अदालत के सामन मेरे स्वर की विशुद्धता, मेरे सवेगा की उपयुक्तता, वक्तताओं की प्रेषणीयता यथा सवेदनशीलता, और आत्मोग के गमम को आप अवश्य सराहना करते। प्रकृति न मेरे शारीरिक गठन के सम्बन्ध म उदारता दिखायी है और मुझ दाक्षिण्य की मुद्रा सहज ही प्राप्त हो जाती है। इसके अलावा दो सच्ची भावनाएँ मुझे ऊपर उठाए रखती थी। एक तो थी वकील-समाज म प्राप्त प्रतिष्ठा का सन्तोष और दूसरी न्यायाधीश-वग के प्रति स्वाभाविक अवहेलना। शायद अवहेलना का भाव इतना स्वाभाविक नहीं था। अब मैं जान गया हूँ कि उसके पीछे कई कारण थे। पर या बाहर स देखने म वह एक तरह का उन्माद लगता था। इसस तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि कम-स-कम अभी कुछ समय क लिए हम न्यायाधीश रखने ही पडगे। क्या ? मैं यह नहीं समझ पाया था कि कोई भी व्यक्ति ऐसा विचित्र काम करने के लिए अपन को कस तयार कर लेता है। उस तथ्य को मैं इसीलिए स्वीकार कर लेता था कि मुझे वह सामने दीख पडता था। यह कुछ उसी तरह था जसे मैं टिड्डियो के दल को स्वीकार कर लेता हूँ। अन्तर केवल इतना था कि उन जन्तुओं के आक्रमण से तो मेरा एक पसे का भी लाभ न होता था, जब कि मेरी आजीविका चलती थी ऐसों के साथ सलाप करके जिनका मैं तिरस्कार करता था।

सर मैं सत्य क पक्ष म था और अपन अन्तमन की शान्ति के लिए मेरे लिए यही पर्याप्त था। न्याय का ससग, सत्य के पक्ष म होने का सन्तोष आत्म-गौरव का भान—श्रीमन् य अनुभूतियाँ हम सच्चा बनाए रखने के लिए, या आगे बढ़ने के लिए बलवती प्रेरणा देती हैं। दूसरी तरफ अगर आप लोगों को इन भावनाओं से वचित कर देते हैं तो आप उन्हें क्रोध स पागल कुत्तो म परिणत कर देते हैं। जाने कितने अपराध किये जाते हैं केवल इसलिए कि उनके करने वाले गलती पर होना बरदाश्त नहीं कर पाते। मैं एक ऐसे व्यापारी को जानता था जिसकी पत्नी म

कोई कमी न थी। सब उसकी प्रशंसा करते थे, फिर भी उस व्यक्ति ने अपनी पत्नी को धोखा दिया। अपनी गलती के एहसास में आप सब मानिए, वह क्रोधावेश में पागल हो गया था, क्योंकि सदाचार की सनद पाने या अपने को देने के वह योग्य नहीं रह गया था। उसकी पत्नी जितना ही सद्गुणों का प्रदर्शन करती थी उतना ही इसका कोप बढ़ता जाता था। निदान गलती पर रहते हुए जीवन बिताना उसके लिए असहनीय हो गया। सोच सकते हैं आप कि उसने क्या किया? अपनी पत्नी को धोखा देना छोड़ दिया? जी नहीं, जरा भी नहीं। उसने उसकी हत्या कर डाली। उससे मेरा सम्बन्ध इसी घटना से स्थापित हुआ था।

मेरी स्थिति अत्यधिक ईर्ष्या करने योग्य थी। अपराधियों के गुट में शामिल होने की कोई आशंका तो मेरे लिए थी नहीं (और पत्नी की हत्या करने की तो जरा भी नहीं थी क्योंकि मैं अविवाहित था), मैं तो उनका भी पक्ष लेने को तैयार रहता था केवल इस आधार पर कि वे उदात्त हत्यारे हों—उसी तरह जिस तरह और लोग उदात्त बदमाश होते हैं। जिस ढंग से मैं उनकी वकालत करता था मुझे उसमें बहुत काफी सन्तोष मिलता था। मेरा व्यावसायिक जीवन सर्वथा अनिंद्य था। यह बहुत कहने की तो जरूरत नहीं है कि मैंने कभी कोई घूस नहीं ली, न ही मैंने चुके छिपे कोई काम किया। और—यह और भी दुर्लभ है—मैं कभी किसी पत्रकार की खुशामद करने पर नहीं उतरा कि वह मेरा पक्ष में हो जाए और न ही किसी सरकारी अफसर की, जिसकी मित्रता मेरे लिए उपयोगी हो सकती थी। यह मेरा सौभाग्य रहा कि दो-तीन बार 'लीजन आफ ऑनर' मुझे भेंट किये जाने का प्रस्ताव किया गया, जिसे मैं गम्भीर आत्म-गौरव के साथ अस्वीकार कर सका। वास्तव में मेरा सच्चा पुरस्कार यही था। और आखिरी बात यह है कि मैंने गरीबों से कभी कुछ नहीं लिया, और न ही कभी इसका ढिंढोरा पीटा। बन्धु, आप यह न समझें कि मैं शेखी बघार रहा हूँ। इसके लिए मैं कोई श्रेय नहीं लेता।

हमारे समाज में लालच की जिस भावना को महत्त्वाकांक्षा समझ लिया जाता है उस पर मुझे हमेशा हँसी आती रही है। मेरा लक्ष्य इससे ऊँचा था। आप देखेंगे कि यह कथन मेरे सम्बन्ध में बिलकुल ठीक बैठता है।

आप मेरे परिताप की कल्पना तो कर ही सकते हैं। मैं अपने स्वभाव का पूरा रस लेता था और हम सब जानते हैं कि आनन्द इसी में है। यद्यपि एक-दूसरे का सान्त्वना देने के लिए ऐसे सुख को हम स्वार्थ कह-कर भर्त्सना करने का ढोंग कर लिया करते हैं। मैं अपने स्वभाव के कम-से-कम उस अंश में तो रस ले ही लेता, जिसकी प्रतिक्रिया विधवा और अनाथ के लिए इतनी समीचीन होती थी, अभ्यास करते-करते अन्त में यह मेरे समूचे जीवन पर छा गया। मिसाल के लिए अन्धों को सड़क पार करने में सहायता देना मुझे बहुत प्रिय था। सड़क की पटरी पर जहाँ तक मेरी नजर जा सकती अगर किसी के हाथ की छड़ी संकोच करती दीखती तो मैं झपटकर पहुँचता। कभी-कभी तो अपने मन में केवल एक क्षण पहले करुणा से आगे बढ़े किसी दूसरे के हाथ से, अपने अतिरिक्त दूसरे के दया भाव से अन्धे को छुड़ा लेता और आती-जाती गाड़ियों के रेले के बीच हाथ थामे धीरे धीरे, किन्तु दृढ़ता से पैदल रास्ते से दूसरे पार की पटरी की शरण में उसे पहुँचा देता, जहाँ पहुँचकर हम भावुकता के साथ एक-दूसरे से अलग होते। उसी तरह मुझे प्रिय था राहगीरों को सड़क बताना, सुलगानी दियासलाई पेश करना, भारी सामान ढोने की गाड़ियाँ ठेलने में सहायता करना, बिगड़ी हुई मोटर ढकेलना, 'सालवेशन आर्मी' की लड़की से अखबार लेना और बुढ़िया फेरीवाली से फूल खरीदना—हालाँकि मैं जानता था कि उसने य मोपार-नास के कब्रिस्तान से चुराए हैं। और मुझे पसन्द था—यह बात कहना मुश्किल ही है—मुझे दान देना पसन्द था। मेरे एक अति धर्मात्मा मित्र ने स्वीकार किया था कि घर की तरफ आते हुए भिखमंगे को देख कर आदमी के मन में पहला भाव जो उठता है वह घृणा का होता है।

पर मेरे साथ जो बात थी वह तो और भी खराब थी, मैं मस्त हो उठता था। परन्तु छोड़िए इस किस्से को।

मेरी शिष्टता को ही ले लीजिए। वह विख्यात थी। कोई मेरी तरफ उँगली नहीं उठा सकता था। सच तो यह है कि शिष्टाचार से मुझे बड़े-बड़े आनन्द मिले। अगर किसी दिन सुबह मुझे अण्डरग्राउण्ड गाड़ी या बस में किसी एम व्यक्ति के लिए अपनी जगह छोड़ सकने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता जो स्पष्ट ही मुझसे योग्यतर पात्र हो या किसी वृद्ध महिला की गिरायी हुई वस्तु अपनी सुपरिचित मुस्कान के साथ उन वापस कर सकता, या केवल इतना ही कि किसी ऐसे व्यक्ति के लिए अपनी टकसी का त्याग कर सकता जो मुझसे ज्यादा जल्दी में हो, तो वह मेरे लिए मंगल दिवस होता था। मुझे यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि उन दिनों जब सार्वजनिक यातायात के साधनों की हड़ताल होती थी तो मैं आह्लादित हो उठता, क्योंकि बस-स्टॉप पर खड़े, घर पहुँचने में असमर्थ बेचारे अपने कुछ सह-नागरिकों को अपनी मोटर में भरकर ले जाने का मुझे अवसर मिलता। थियेटर हॉल में अपनी जगह छोड़ देता ताकि कोई दम्पति साथ बैठ सकें रेलगाड़ी में किसी युवती का सूटकेस उठाकर ऊपर रखना, ये सब काम औरों से ज्यादा मैं इसलिए करता था कि मैं अवसरों की ताक में ज्यादा रहता था और उनसे प्राप्त सुख का उपभोग ज्यादा कर पाता था।

इसी कारण मैं उदार समझा जाता था—और था भी। मैं प्रकट और गुप्त रूप में बहुत-कुछ दिया करता था। किसी वस्तु अथवा किसी धनराशि से विदा लेते समय कष्ट होना तो दूर, मुझे निरन्तर सुख ही पहुँचते रहते थे। उन्हीं में विषाद का वह भाव भी था जो इन दान-कृत्यों की निष्फलता और सम्भाव्य अकृतज्ञता के विचार से कभी-कभी मेरे मन में उठता था। दान में मुझे इतना सुख होता था कि अगर ऐसी स्थिति आ जाए कि देने में असमर्थता-सी आ खड़ी हो तो मुझे अत्यन्त क्षोभ होता था। हिसाब-किताब के कठोर नियमों में मैं इतना अधिक

उनका जाता था कि उनका पालन मैं काफी मनोभव तरीके से करता था। अपनी उदारता का स्वामी मैं स्वयं ही रहना चाहता था।

ये तो कुछ छोटी मोटी बातें रही पर इससे आप इतना तो समझ ही जाएँगे कि अपने जीवन में और खास तौर से अपने पेशे में, मुझे अनवरत कितने सुख मिलते रहते थे। कचहरी के दालान में किसी प्रतिवादी की पत्नी द्वारा रोका जाना जिस प्रतिवादी का पक्ष आपने केवल न्यायपरता या करुणावश लिया हो—मेरा मतलब है बिना फीस लिये—और उस महिला का फुसफुसाकर आपसे कहना कि आपने उनके लिए जो किया उसका मूल्य कभी नहीं चुकाया जा सकता है और आपका उत्तर देना कि वह तो कोई ऐसी बात नहीं थी इतना तो कोई भी करता। और फिर आगे आने वाले बुरे दिनों के लिए कुछ आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव करना और फिर—उद्गारों का वेग रोकने के लिए ताकि उनकी भावनाएँ सुरक्षित रह सकें—उस अभागिनी महिला का हाथ चूमकर खिसक लेना—विश्वास मानिए श्रीमान यह प्राप्ति, सामान्य महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति की प्राप्ति से कहीं अधिक है और यह आपको उस सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा देती है, जहाँ सदाचार अपना ही प्रतिदान है।

अच्छा तो इस ऊँचाई की चोटी पर जरा ठहरें। अब आप समझ गए होंगे कि जब मैंने ज्यादा ऊँचे लक्ष्य की बात की थी तो मेरा मतलब क्या था। वास्तव में मैं उन्हीं सर्वोच्च शिखरों की बात कर रहा था। केवल वही एक स्थान है जहाँ मैं वास्तव में साँस ले सकता हूँ। हाँ ऊँचे परिवेश के अलावा और कहीं मुझे चैन नहीं मिलता। रोजमर्रा की बातों में भी मुझे ऊँचाई का अनुभव करने की आवश्यकता प्रतीत होती थी। अंडरग्राउण्ड गाड़ी की अपेक्षा मुझे बस ज्यादा पसन्द थी टैक्सी की अपेक्षा खुली गाड़ियाँ अन्दर रहने की अपेक्षा खुली छतें। मैं उन हवाई जहाजों का तरफदार था जिनमें चालक का सिर बाहर खुले में रहता है। और समुद्री जहाजों पर मैं हमेशा सबसे ऊँचे डेक पर टहल

कदमी करने वाला म होता था। पहाड़ी स्थानों म घाटियों से भागकर मैं पठारों और दर्रों पर जा पहुँचता था, मानो कि मैं ऊँचे स्थानों का निवासी था। यदि नियति के आदेश से मुझे खराद पर और छतों पर काम करने क बीच चुनाव करना पड जाता, तो मैं छतों को ही चुनता, और ऊँचाई पर सिर चकराने के अनुभव से परिचित होता। कोयले की खानों, जहाज़ों के निचले हिस्सों, जहाँ सामान रहता है, ज़मीन के नीचे आने जाने की सड़कों गुफाओं और गड्ढों स मुझे घृणा थी। भूगभगामियों से तो मुझे विशेष घृणा हो गई थी। उनका दुस्साहस था कि हमारे समाचारपत्रों के मुखपृष्ठ उनकी करामातों से भर दिए जाते थ, और उन करामातों स मुझे मतली आती थी। दो हज़ार फुट नीचे उतरने की चेष्टा करना—यह खतरा उठाते हुए कि चट्टानों की कीप म सिर न फँस जाए (उन्हें वे मूत्र नली कहते हैं) मुझे तो लगता था कि विकार-ग्रस्त व्यक्तियों का काम है। उसकी तह म कोई अपराध प्रवृत्ति है।

दूसरी तरफ किसी १५०० फुट ऊँचे प्राकृतिक छज्जे पर जहा म सूर्य के प्रकाश म नहाता समुद्र दीख पडता हो, मैं सबसे ज्यादा खुलकर सौंस ले सकता था—विशेषकर अगर अकेला होता मानवी चींटे-चींटियों स बहुत ऊपर। मैं खूब समझ सकता था कि धार्मिक प्रवचन, निश्चयात्मक उपदेश और अग्नि-परीक्षाएँ सुगम ऊँचाइयों पर ही सम्भव क्यों होती थीं। मेरी राय म तहखानों या कारावास की कोठरियों म किसी ने चिन्तन न किया होगा (व कोठरियाँ किसी मीनार मे रही हो, जहा स दूर-दूर तक दीख पडता हो, तो और बात है), नहीं तो आदमी म फफूँदी लग जाती है, बस। और मैं उस व्यक्ति के मनोभाव भी समझ सकता था जिसने धार्मिक पन्थ मे प्रवेश करने के बाद केवल इसलिए उसे त्याग दिया कि उसकी कोठरी से प्राकृतिक दृश्य का विस्तार दीखने क बजाय एक दीवार दीखती थी। इतना तो तय मानिए कि जहाँ तक मेरा प्रश्न था मुझमें फफूँदी नहीं लगी। हर पहर अपने अन्दर म और दूसरों के बीच मैं ऊँचाइयों को लाँघकर भास्वर अग्नि प्रज्वलित करना

था और एक आह्लादमय जयघोष मेरी ओर उठता चला आता था। इस प्रकार कम-से-कम मैं जीवन का और अपनी श्रेष्ठता का आनन्द उठा लेता था।

भाग्यवश मेरा पेशा ऊँचाइयों की मेरी प्रवृत्ति को तृप्ति प्रदान करता था। पड़ोसी के प्रति कटुता घुल जाती थी और मैं उस पर हमेशा एहसान किया करता था—हालाँकि मेरे ऊपर उसका कुछ देय नहीं था। यह भाव मुझे निर्णायक से श्रेष्ठतर बना देता था और मैं स्वयं उसके विषय में निर्णय देता था, प्रतिवादी के अतिरिक्त जिसे मैं विवश करता था कि मेरा आभार माने। मेरे मित्र सोचिए जरा मुझे जीवन में दण्ड विमुक्ति प्राप्त थी। किसी भी निर्णय से मेरा कोई निमित्त नहीं था, मैं न्यायालय में उपस्थित नहीं रहता था वल्कि नेपथ्य में रहता था—उन देवताओं की तरह जो नाटक की भूमिका की परिणति करके उसे अर्थ प्रदान करने के लिए किसी यन्त्र द्वारा ऊपर से मंच पर उतारे जाते हैं। आखिर ऊंचाई पर रहकर ही तो अधिकतम व्यक्तियों को दर्शन देना और उनका अभिवादन पाना सम्भव है।

मेरे किन्हीं भले अपराधियों ने इसी भावना के वशीभूत होकर ही तो हत्या की थी। बाद में अपनी उस असहाय स्थिति में जहाँ वे तब तक पहुँच चुके थे, समाचारपत्रों को पढ़कर निःसन्देह उन्हें एक प्रकार का वेदनामय परितोष मिला होगा। बहुतों की तरह उन्हें भी अज्ञात रहना असह्य हो गया था और उनकी इस बेचैनी ने भी उन्हें दुर्भाग्य की इस सीमा तक पहुंचाया था। बदनामी के लिए अपने द्वार रक्षक की हत्या करना ही काफी है। बदकिस्मती से यह ख्याति साधारणतः क्षण भंगुर होती है। उन कितने ही द्वार रक्षक हैं जो हत्या के पात्र होते हैं और इस परिणति को प्राप्त भी करते हैं। अपराध को अखबारों में शीर्षासीन होने का एकाधिकार मंच में प्राप्त है किन्तु अपराधी तो क्षणिक प्रकट हो पाता है एक अपराधी का स्थान दूसरा लेता रहता है। संक्षेप में कहें तो ऐसी क्षणिक सफलता बहुत महंगी पड़ती है। पर इन

प्रभाग महत्वाकांक्षियों के पथ में खड़ा होना वास्तव में ख्याति प्राप्त करने का सुगम मार्ग सिद्ध होता है, सो भी उच्च स्थानों में, उसी समय और अधिक मितव्ययिता के साथ। परिणामस्वरूप इससे मुझे और भी अधिक पुण्य प्रयास करने की प्रेरणा मिलती थी कि उन्हें (मेरे मुवक्किलों को) कम-से-कम मूल्य चुकाना पड़े। किसी हद तक दाताओं के मेरी जगह चुरा ही रहे थे। जो आभार जो याचना और जो भावुकता मैं उन पर निछावर करता था प्रतिदान में वह आभार की उस भावना को उँडेल देते थे, जो मेरे मन में उनके लिए उठ सकती थी। न्यायाधीश दण्ड देते थे, प्रतिवादी प्रायश्चित्त करते थे और मैं कर्तव्य के भावों से सर्वथा विमुक्त, निर्णय तथा दण्ड दोनों से समानतः परिरक्षित मैं था निन्द्य ज्योति स्नात, निर्बाध महिमा-मण्डित।

और सब बताइए बन्धु क्या वह स्वर्ग नहीं था? जीवन और मेरे बीच कोई मध्यवर्ती नहीं! ऐसा था मेरा जीवन। मुझे कभी यह नहीं सीखना पड़ा कि जिया कैसे जाता है। उसके बारे में मैं जन्म लेते ही सब-कुछ जान गया था। कुछ लोगों की समस्या होती है कि कैसे मनुष्यों से अपनी रक्षा करें, या कम-से-कम कैसे उनसे समझौता कर लें। पर मेरे लिए तो समझौता पहले ही हो चुका था। मेरी संगति सदा ठीक बैठती थी। उचित होता तो पुनः मिल जाता आवश्यकता पड़ती तो मौन रहता। आचार-व्यवहार में गम्भीरता और सहज स्वाभाविकता दोनों के लिए समान रूप से समर्थ था। इसीलिए मेरी लोकप्रियता बहुत थी और समाज में मेरी सफलताएँ अनगिनत थीं। मेरी आकृति स्वीकार्य थी, बिना थके नाच सकने की क्षमता और विनयपूर्ण विद्वत्ता दोनों ही मैंने अपने आपमें प्रदर्शित की थी और मैंने नारी और न्याय दोनों से एक साथ प्रेम करने का—यह सरल नहीं है—सामर्थ्य प्राप्त कर लिया था। मैं ललित कलाओं और खेल-कूद दोनों में रम लेता था। पर बहुत हुआ अब मैं और न कहूँगा, नहीं तो कहीं आप यह शक न करने लगें कि मैं डींग हाँक रहा हूँ। मेरा तो इतना अनुरोध है कि

आप जरा b करना कीजिए एक एसे व्यक्ति की, जो अपनी शक्ति की पराकाष्ठा पर है, जिसका स्वास्थ्य उत्तम है, जिसको प्रतिमाएँ प्रदान करने में नियति ने उदारता दिखायी है जो शारीरिक तथा मानसिक व्यापारों म कुशल है जो न निधन है न धनवान, जिसे चन की नीद आती है और जो मूलत आत्म-तुष्ट है पर जो इस भाव को अपनी सहज मिलनसारिता के अतिरिक्त और किसी तरह नहीं दिखाता। आप आसानी से समझ जाएँगे कि मैं कसे श्लाघा के बिना सफल जीवन की बात कर सकता हूँ।

हाँ मुझमें ज्यादा सहज-स्वाभाविक कुछ ही जीव और रहे होंगे। मने जीवन के साथ पूर्ण एकरूपता प्राप्त कर ली थी, ऊपर से नीचे तक म उससे मेल खाता था उसके निहित किसी व्यग्य गौरव अथवा दासत्व का परित्याग किय बिना। विशेष रूप से काया प्रकृति या, सक्षप मे कहूँ तो भौतिक तत्त्व जो बहुतरा को अकेलपन या श्रम के क्षणो मे विमुख या हतोत्साहित करते हैं मुझे बिना किन्हीं बन्धनों म बाँधे निरन्तर सुख पहुचाते रहे। म तो जसे शरीर भोगने के लिए बना था। उसीसे प्राप्त वह सतुलन और वह अनायास उत्पन्न सुक्रम था जिसे लोग अनुभव करते थे यहाँ तक कि कभी-कभी मुझसे यह भी कहते थे कि उससे उन्हे जीवन म सहायता मिली है। उसकी वजह से मेरी सोहबत की बहुत माँग रहती थी। अक्सर लोगो को यो लगता था कि वे मुझसे पहले कहीं मिल चुके हैं। जीवन उसके जन्तु और उसके उपहार मेरे लिए प्रस्तुत थे और मैं साभिमान कृपालुता से श्रद्धाजलि के इन चिह्नो को अगीकार करता था। सच बात तो यह है कि चूंकि मैं एक सहज और सम्पूर्ण मानव था, मैं अपने को कुछ-कुछ अतिमानव समझने लगा था।

मैं एक प्रतिष्ठित पर गरीब परिवार म पैदा हुआ था। मेरे पिता एक सामान्य कमचारी थ पर मैं सविनय स्वीकार करता हूँ कि किसी किसी दिन मुझे लगता कि मैं किसी राजा का बेटा हूँ—इस वजह से नहीं कि मुझे पूरा विश्वास था कि म सबसे ज्यादा बुद्धिमान हूँ। इस

विश्वास में कोई लाभ भी नहीं न जाने कितने मूख ऐसा ही समझते हैं। बात यह थी कि यद्यपि ऐसा कहने में मुझे सकोच होता है—नियति की कृपाओं की प्रचुरता से मैं अपने को विशिष्ट व्यक्ति समझने लगा था, मानो स्वयं से एक दीघकालीन और अनवरत सफलता के लिए व्यक्तिगत रूप से मुझे ही चुना गया हो। ऐसा समझना भी मेरी विनयशीलता का ही परिणाम था। उस सफलता का श्रेय अपनी योग्यताओं को देना मुझे स्वीकार नहीं था और न ही मैं यह विश्वास कर पाता था कि एक ही व्यक्ति में इतने विविध और उत्कृष्ट सद्गुणों का होना केवल सयोग हो सकता है। इसीलिए अपने खुशहाल जीवन में मुझे लगता था कि मेरा सुख किसी उच्चतर आदेश द्वारा अधिकृत किया गया है। जब आपको यह विदित होगा कि मेरा किसी धर्म में विश्वास नहीं था, तब आप और भी अच्छी तरह अनुमान लगा सकेंगे कि मेरी यह धारणा कितनी विलक्षण थी! खैर वह साधारण रही हो या नहीं कुछ समय के लिए तो रोजमर्रा की जिन्दगी से मुझे ऊपर उठाने के काम आई और मैं कुछ वर्षों वास्तव में उड़ानें भरता रहा। और सच कहूँ तो आज भी उनके लिए मेरा जी तड़प उठता है। मैं उड़ानें भरता रहा उस शाम तक, जब—पर नहीं, वह बात ही और है, उसे भुला देना चाहिए। और शायद मैं कुछ बढ़ा चढ़ा कर बातें कर रहा हूँ। यह तो सच है कि मैं हर तरह से मजे में था, पर साथ ही किसी भी चीज से सन्तुष्ट न था। एक सुख की प्राप्ति दूसरे की आकाक्षा मेरे मन में जगाती थी। एक आनन्दोत्सव से दूसरे आनन्दोत्सव में मैं घूमता रहता था। कभी-कभी मैं रातें नाचते बिताता, लोगों और जीवन के बारे में अधिकाधिक पागल होता हुआ। कभी कभी काफी रात बीते जब नाच, एक हल्का सरूर मेरा निर्बाध उत्साह और हर एक का प्रचण्ड असयम मुझे एक शान्त और परामूत हर्षोन्माद से भर देते थे तब—शांति की चरम सीमा पर पहुँचकर क्षण भर के लिए, मुझे लगता कि आखिर इस ससार और उसके जन्तुओं का रहस्य

मरी समझ म आ ही गया। पर दूसरे ही दिन मेरी थकान गायब हो जाती और उसके साथ ही रहस्य का ज्ञान भी। और मैं फिर नये सिरे से निकल पडता था। इसी तरह मैं दौड लगाता रहा, सदा उपहारों के भार से लदा, सवत्र अतप्त, यह न जानते हुए कि कहाँ रुक जाना चाहिए उस दिन तक—या कहना चाहिए—उस शाम तक, जब संगीत थम गया और प्रकाश बुझ गया। उस चटवती महफिल म जहाँ मैं इतना खुश रह चुका था—पर मुझे अपने मित्र उस प्राग्जिजीव, को धुत्रान की इजाजत द। इसका शुक्रिया अदा करने के लिए अपना सिर हिला दीजिए और एक प्याला शराब पीने म मेरा साथ दीजिए मुझे आपकी सहानुभूति की आवश्यकता है।

देखता हूँ कि इस घोषणा स आप स्तम्भित हैं। क्या आपको कभी अचानक सहानुभूति आश्रय या मित्रता की आवश्यकता नहीं पडी है? जरूर पडी होगी। मैं मात्र सहानुभूति से सन्तुष्ट हो लेना सीख लिया है। वह ज्यादा आसानी से मिल जाती है और इसके अलावा उसम कोई बंधन भी नहीं। यह कहना कि मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी सहानुभूति पर विश्वास कर किसी भी अन्य बातों का प्राक्कथन होता है, इसका कि अब हम दूसरे विषयों पर आएँ। यह तो सभाध्यक्ष की ही भावुकता है। किसी महाविपत्ति के बाद यह कह देना सस्ता पडता है। मित्रता इतना सरल नहीं। उसे पाना मुश्किल है और पाने म काफी समय लगता है पर जब मिल जाती है तो उससे मुक्ति पाने का भी कोई उपाय नहीं। उसे भुगतना ही पडता है। पल भर के लिए भी यह न समझ बैठियेगा कि आपके मित्र हर शाम आपको टेलीफोन करेंगे, जो उन्हें करना चाहिए यह पता करने के लिए कि कहीं आपने आत्महत्या करने का निश्चय तो नहीं कर डाला है या सिर्फ इतना ही पूछने के लिए कि आपको संग-साथ की जरूरत तो नहीं या आपका कहीं बाहर जाने का जी तो नहीं हो रहा है? नहीं, निश्चिन्त रहें व फोन करेंगे तो उस शाम को जब आप अकेले न होंगे जब जिन्दगी

हमीन होगी। और रहा आत्महत्या की, सो व शायद आपको उस तरफ धकेलने में ही ज्यादा सहायक होंगे, इस आधार पर कि आपका अपने प्रति दायित्व क्या है ? बन्धु, मित्र द्वारा ऊँचे सिंहासन पर बिठाए जाने से भगवान् रक्षा करें ! और जिनका कर्तव्य ही है कि हम प्यार करें, मेरा मतलब है कुटुम्बियों और सम्बन्धियों से (वाह ! क्या शब्द हैं !)—उनकी बात ही और है। उन्हें उपयुक्त शब्द मिल ही जाते हैं, और निशाना अचूक बैठता है, वे तो ऐसे फोन करते हैं मानो चाँदमारी कर रहे हों, और निशाना लगाना वे खूब जानते हैं।

क्या ? कौनसी शाम ? उस पर भी आऊँगा, जरा धीरज रखिए। एक तरह से तो चिपका ही हुआ हूँ अपने विषय से, मित्रों और सम्बन्धियों की ये सब बातें करके। बात यह है कि मैंने एक ऐसे आदमी के बारे में सुना है जिसका मित्र कैद कर लिया गया था और वह अपने कमरे के फर्श पर इसलिए सोने लगा था कि उस आराम का भोग न करे जो उसके मित्र से छीन लिया गया था। हमारे लिए बन्धु कौन फर्श पर सोएगा ? क्या मैं ही ऐसा कर सकता हूँ ? मैं जरूर चाहूँगा कि कर सकूँ और कर भी सकूँगा। हाँ एक दिन हम सब ऐसा कर सकेंगे, और वही हमारा मोक्ष होगा। पर यह आसान नहीं है, क्योंकि मित्रता अन्यमनस्क होती ही है या कम-से-कम क्या तो होती ही है। अपनी इच्छा पूर्ण करने में वह असमर्थ है। शायद उसकी इच्छा काफी तीव्र न होती हो। शायद जीवन से हमारा पर्याप्त लगाव न हो। आपका ध्यान कभी इस पर गया है कि केवल मृत्यु हमारी भावनाएँ जगाने में समर्थ होती है ? हम अपने उन मित्रों को कितना प्यार करते हैं जो अभी अभी हमसे बिछुड़े हैं ! अपने उन गुरुओं का कितना आदर करते हैं जिनकी वाणी बन्द हो चुकी है जिनके मुँह मिट्टी से ढाँप दिए गए हैं ! तब श्रद्धा के भाव सहज व्यक्त हो उठते हैं—उसी श्रद्धा के जिसकी आशा शायद वे जीवन भर हमसे करते रहे। पर जानते हैं आप, हम मृतकों के प्रति अधिक उदार और

न्यायशील क्या होते हैं ? कारण सरल है। बन्धन या उनके साथ कोई प्रश्न नहीं। व हम मुक्त छोड़ देते हैं और हम अपनी सुविधा के अनुसार अपनी श्रद्धा या प्रमाणपत्र देने का समय किसी कॉकटेल-पार्टी और प्रमिका के साथ अभिसार के बीच यानी अपने फालतू वक्त में नियत कर सकते हैं। अगर वे हमें बाध्य करें भी तो केवल याद रखने के लिए ही तो करेंगे और हमारी स्मृति काफी मन्द होती है। हाँ, हम अपने मित्रों में हाल के मरे हुओं से ही लगाव रखते हैं, दुखदाई मनका से ही, स्वयं अपनी भावनाओं से, अन्ततः अपने आप से ही।

उदाहरणार्थ मेरे एक मित्र थे, जिनसे मैं बहुत बचता था। वह मुझे उबा देते थे और इसके अलावा वह कुछ उपदेशक भी थे। पर जब वह अपनी मृत्यु-शय्या पर पड़े थे तो मैं जा पहुँचा। मैंने एक दिन का भी नागा नहीं किया। वह मुझसे सन्तुष्ट होकर मरे मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में लिए हुए। और एक औरत थी जो मेरे पीछे पड़ी थी—बिलकुल बेकार। उसने बुद्धिमानी की कि युवावस्था में ही मर गई। कितनी जगह निकल आई अचानक मेरे दिल में उसके लिए! और जब साथ में आत्महत्या की हो! उफ ईश्वर, तब कैसी सुखद हलचल मचती है! आपके टेलीफोन की घण्टी बजती है आपका हृदय उमड़ने लगता है अब भरे और जान-बूझकर छोटे किये वाक्यांश आपकी मयत पीड़ा, और हाँ, और अपने ऊपर थोड़ा-सा दोषारोपण भी!

मनुष्य बना ही ऐसा है, बन्धु! उसके दो चेहरे हैं। आत्म प्रेम के बिना वह प्रेम नहीं कर सकता। अपने पड़ोसियों पर गौर कीजिए। मान लीजिए कि जिस मकान में वे रहते हैं उसमें कोई मौत हो जाती है। वे अपनी नित्यप्रति की जिन्दगी में डूबे हुए हैं कि मान लीजिए द्वार पाल की मौत हो जाती है। तुरन्त वे चौकन्ने हो जाते हैं, हाय-हाय करते दिखाने लगते हैं। छोटी-से छोटी बातों का पता लगाते हैं, सहानुभूति प्रकट करते हैं। कोई मरा नहीं कि नाटक का आरम्भ हो जाता है। जानते नहीं आप कि उन्हें दुःखद घटनाओं की जरूरत होती है। वह

उच्च-मचरण की उनकी छोटी-मोटा चेष्टा है मुख लगाने की चीज। पर क्या मैंने चौकीदार की बात केवल दया से की ? मेरा भी था एक अदमूरत, मूर्तिमान विद्वेष क्षुद्रता और दुर्भावना से भरा राक्षस, ऐसा कि जो प्रामिस्कन पादरी को भी हाथ न धरने देता। मैंने तो उससे बोलना तक बन्द कर दिया था पर अपने अस्तित्व मात्र से वह मेरे मन्त्र सन्तोष को विचलित करता रहता। जब वह मरा तो मैं उसके अन्तिम संस्कार में शामिल हुआ। आप बता सकते हैं क्या ?

खैर, बहरहाल संस्कार के पहले के दो दिन बहुत रोचक रहे। चौकीदार की पत्नी बीमार थी, छोटे-से कमरे में पड़ी थी और पास ही पाया पर ताबूत रखा था। हर एक को अपने खत लेने खुद ही जाना पड़ता था। आप दरवाजा खोलते और कहते 'नमस्कार, श्रीमतीजी, स्वर्गत स्नेहपात्र की प्रशंसा के कुछ शब्द सुनते जो वह उनके शरीर की तरफ इशारा करते हुए कहती थी अपने खत उठाते और चले आते। इस बात में कोई विशेष मनोरंजन नहीं था पर उस भवन का प्रत्येक निवासी उनके कमरे से जो कार्बोलिक की बू से भरा रहता था गुज-रता जरूर था। किरायेदार अपने नौकरों को नहीं भेजते थे, स्वयं ही जाते थे, ताकि इस अप्रत्याशित आकर्षण का रस ले सकें। नौकर भी जाते अवश्य थे, पर लुक-छिपकर। अन्त्येष्टि क्रिया के दिन यह पता चला कि ताबूत दरवाजे से ज्यादा चौड़ा है। दइया रे दइया !' पत्नी ने पलंग पर से ही कहा अचम्भे के साथ जिसमें हर्ष और व्यथा दोनों शामिल थे। 'कितने बड़े थे वह !' 'आप चिन्ता न करें श्रीमतीजी अण्डरटेकर ने जवाब दिया, 'हम ताबूत को खड़ा करके एक किनारे से निकाल लेंगे।' खड़ा करके ही उसे निकाला गया और फिर लिटा दिया गया। और केवल मैं (एक नाट्यशाला के भूतपूर्व द्वारपाल के साथ जो पता चला कि रोज शाम स्वर्गवासी के साथ बैठकर परनोड पिया करता था) कब्रिस्तान तक गया, और एक ऐसे ताबूत पर फूल चढ़ाए जिसकी विशालता ने मुझे चकित कर दिया था। फिर मैं चौकीदार की पत्नी

गे भट करने गया, उसका आभार प्राप्त करने के लिए और उसने किसी महान दु:खान्त नाटक की नायिका की भाँति उस व्यक्त किया। अब बताइए इस सबके पीछे कारण क्या था ? कुछ नही, केवल भूख जगाने वाली चाज।

इसी तरह मैंन बार एसोसियशन के एक सहयोगी को दफनाया था। वह एक क्लक था, उसकी ओर कोई ध्यान नही दता था, हालांकि मैं हमशा उसस हाथ मिला लेता था। खर, जहाँ मैं काम करता था, वहाँ हर एक से हाथ मिलाता ही था बहुतो स ता दो दो बार। मरा कुछ लगता थोड था और इस तरह की शिष्टतापूण सादगी मुझ वह लोकप्रियता दिला दती थी, जो मर सन्ताप के लिए बहुत जरूरी थी। बार-एसोसियशन के अध्यक्ष न हमारे इस क्लक के अन्त्येष्टि सस्कार म कुछ खास किया नही। पर मैंन किया, और सो भी यात्रा पर जाने के ठीक पहले जिस बात का पर्याप्त प्रचार भी हुआ। मैं जानता था कि मेरी उपस्थिति लागा का ध्यान आकर्षित करगी और उसकी सराहना भी की जाएगी। इसलिए उस दिन गिरती हुई बफ भी मुझे पीछे नही हटा सकी।

क्या ? ना हाँ जी हाँ म अभी पहुँचता हूँ उस पर, आप चिन्तित न हो। मैंन विषय छोडा ही कब है ? पर पहल म यह अज कर दूँ कि मरे चौकीदार की पत्नी, जिसन क्रास की प्रतिमा और ताबूत के लिए चाँदी और बनूत के हैंडल बनवान म इतना खच इसलिए किया था कि अपन उद्गारो का पूरा रस लन का उस मौका मिल। तब ही महीने बाद एक बाँके क यहाँ जिसकी आवाज बडी सुरीली थी बठ गई। वह उस पीटता था, दर्दनाक चीखें सुनायी पडती थीं और फिर तुरन्त ही वह खिडकी खालकर अपनो विशष पसन्द क गीत की टर लगाता था— नारी, तुम कितनी सुन्दर हो ! 'हाँ-हाँ ठीक है मगर तो भी पडासी कहा करते। तो भी क्या ? मैं आपस ही पूछता हूँ। ठीक है जो कुछ खास घटना था वह गायक के खिलाफ था, और चौकीदार की पत्नी के भी पर कोई

बात ऐसी नहीं थी जो यह सिद्ध करे कि वे एक-दूसरे से प्रेम नहीं करते थे। और कोई ऐसी बात भी नहीं थी जो यही सिद्ध करे कि वह औरत अपने पति से प्रेम नहीं करती थी। और जब वह दोस्त अपनी बातों और रात को थककर भारी बना हुआ तो उस पति-परायणा पत्नी ने फिर से अपने स्वाभिमानी पति का स्तुतिगान शुरू कर दिया। और फिर मैं ऐसों को भी जानता हूँ जिनके पास में सब-कुछ दाम्पत्य पड़ता है पर जो विशेष स्वच्छ और पक्के नहीं होते। मैं एक आदमी को जानता था जिसने एक पगली औरत पर अपनी ज़िन्दगी के बीस साल निछावर कर दिए, अपना सब-कुछ उसकी ख़ातिर लुटा दिया—अपने मित्र, अपना पेशा यहाँ तक कि अपने जीवन का मान सम्मान भी—और फिर एक शाम उसे यह पता चला कि उसने उस औरत से कभी प्रेम नहीं किया था। वह अधिकांश लोगों की तरह ज़िन्दगी से केवल ऊबा हुआ था। इसलिए उसने शादी करके अपने लिए कठिनता और नाटकीयता से भरे जीवन का निर्माण कर लिया था। कुछ तो होना ही चाहिए। अधिकांश मानवी वासनाओं का कारण इसी में निहित है। कुछ तो होना ही चाहिए, चाहे वह प्रेम शून्य वासना ही क्यों न हो, युद्ध या मृत्यु ही क्यों न हो। तो फिर जय हो अस्पष्ट-सम्बन्धों की!

पर मेरे पास कम-से-कम यह बहाना नहीं था। मुझे ऊब नहीं सता रही थी, क्योंकि मैं तो उखड़ी हुई लहर के शिखर पर सवार था। जिस शाम की मैं चर्चा कर रहा था उस शाम को तो मैं कह सकता हूँ कि और दिनों से भी कम ऊबा हुआ था। तो भी बात यह है, बन्धु! पतझड़ की सुहावनी शाम थी। शहर के वातावरण में गरमी थी, पर नद पर नमी छा चुकी थी। रात हो चली थी, आकाश में पश्चिम की ओर तब तक उजाला था, पर अंधकार छाने लगा था। सड़क की बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं। मैं दायें किनारे [illegible] की तरफ़ घाट पर धीरे-धीरे चलता हुआ जा रहा था। सेकण्ड हैण्ड किताबें बेचने वालों की छोटी दुकानों के प्रकाश के बीच नदी चमक रही थी। घाटों पर बहुत कम

लोग थे। पेरिस का नगर रात के गाने पर बढ चुका था। मैं धूल भरी पीली पत्तियों को, जो ग्रीष्म की याद दिलाती थीं, रौंदता हुआ चल रहा था। धीरे धीरे आकाश तारों से भरता जा रहा था, सडक की एक बत्ती छोड़ दूसरी की तरफ जाते हुए वे एक क्षण को दीख जाते थे। मैं शान्ति की वापसी, सन्ध्या की मृदुता और पेरिस के सूनेपन का रस ले रहा था। मैं सुखी था। दिन अच्छा गुजरा था। एक अन्धा, सजा म कमी, जिसकी मैंने आशा की थी, मुवक्किल का पूरे दिल से हाथ मिलाना, उदारता के कुछ काम और दोपहर को मित्रमण्डली में शासक-वर्ग की कठोर-हृदयता और नेताओं के पाखण्ड पर प्रत्युत्पन्नमतित्व का प्रदर्शन।

मैं पोंडजाट से तब पहुँच गया था। उस समय वहाँ सुनसान था। मैं नदी को देखने के इरादे से गया था, रात हो जाने के कारण उसका पता लगाना कठिन था। वन-बालों की प्रतिमा की तरफ मुह किये खडा मैं उस द्वीप पर छा रहा था। मुझे अपने अन्तर से एक विराट शक्ति की अनुभूति उठती हुई जान पडी, और—नहीं जानता कैसे कहूँ—और सम्पूर्णता की। उसने मेरे हृदय को उल्लास से भर दिया। मैं तनकर खड़ा हो गया, और सिगरेट जलाने ही जा रहा था—सन्तोष की सिगरेट—जब उसी समय मेरे पीछे एक हँसी फूट पडी। चौंककर मैंने घूमकर देखा, वहाँ कोई नहीं था। मैं रेलिंग तक गया, कोई नाव या बजरा भी नहीं। मैं फिर द्वीप की तरफ मुडा और फिर मुझे वही हँसी अपने पीछे सुनायी पडी—जरा दूर जैसे धारा के प्रवाह में नीचे की ओर जा रही हो। मैं वहीं स्थिर खड़ा रहा। हँसी क्षीण होती जा रही थी पर मैं अब भी उसे अपने पीछे साफ सुन सकता था। जाने कहाँ से आ रही थी अगर पानी से नहीं तो! साथ ही मुझे अपने दिल की धड़कन बढ़ती हुई लगी। आप मुझे गलत न समझें। उस हँसी में कोई रहस्य नहीं था—अच्छी सुनी हुई यह सकते हैं कि मित्रता की हँसी थी जिसने हर चीज को उचित स्थान पर बिठा दिया था। और वैसे भी कुछ देर बाद मुझे

फिर कुछ भी सुनायी न दिया। मैं घाटों पर लौट आया, रूदोर्फ़ की राह पकड़ा, सिगरेट खरीदे जिनकी मुझे आवश्यकता नहीं थी। मेरा सिर चकरा रहा था और मेरी सांस तेज चल रही थी। उस शाम का मैंने एक मित्र को फ़ोन किया, वह घर पर नहीं था। बाहर जाने के बारे में मेरे मन में दुविधा हो रही थी, जब कि सहसा अपनी खिड़की के नीचे मुझे हँसी सुनायी दी। मैंने खिड़की खोल दी। नीचे सड़क की पटरी पर कुछ नौजवान शोर मचाते हुए एक-दूसरे से विदा ले रहे थे। खिड़की बन्द करते हुए मैंने सोचा, जाने दो। आखिर मेरे पास एक मुकद्दमा तैयार करने को था ही। एक गिलास पानी पीने मैं गुसलखाने में गया। शीशे में मेरा चेहरा मुस्करा रहा था, पर मुझे लगा कि मेरी मुस्कराहट दोहरी है।

क्या? माफ़ कीजिए मैं कुछ और सोचने लगा था। मैं शायद आपसे कल मिलूँगा। जी हाँ, कल। नहीं-नहीं, मैं ठहर नहीं सकता। उसके अलावा वह जो भूरा भालू वहाँ बैठा है मेरी राय लेने के लिए मुझे बुला रहा है। अच्छा आदमी है बेचारा पुलिस बेवजह दुराग्रहवश, नोचना से उसे सता रही है। आपके खयाल में उसकी आकृति हत्यारों-जैसी है? विश्वास रखिए, उसके कर्म उसकी आकृति से ही मेल खाते हैं। चोरी भी वह उसी प्रकार करता है। और आपको जानकर आश्चर्य होगा यह आदिम-जीव कला-कृतियों के व्यापार का विशेषज्ञ है। हॉलैंड देश में हर आदमी कला-कृतियों और ट्यूलिप के फूलों का विशेषज्ञ होता है। यह जो है, यह जो बड़ा विनयशील लगता है, यह सबसे प्रसिद्ध चित्र चोर का कर्ता है। कौनसा चित्र? किसी दिन शायद आपको बताऊँ। पर मेरी जानकारी पर आप आश्चर्य न करें। यद्यपि मैं एक अनुतापी निर्णायक हूँ यहाँ पर मेरा एक धन्धा है। इन सज्जनों का मैं कानूनी सलाहकार हूँ। मैंने इस देश के कानून का अध्ययन किया और इस मोहल्ले में मुवक्किलों की जमात इकट्ठा कर ली। यहाँ कानूनी डिग्री की आवश्यकता नहीं पड़ती। आसान नहीं था पर मैं दूसरों में विश्वास

जगाता हूँ, हूँ न ? मेरी हंसी बढ़िया, खुली हुई है मेरा हाथ मिलाना शानदार है, और ये गुण तुरुप के पत्ते हैं। इसके अलावा मैंने कुछ जटिल मुकद्दमों को हल किया था, कुछ मैं अपने हित के लिए और बाद में ठीक समझकर। यदि चोर और दलाल हर बार सजा पा जाएँ तो सब मर्यादापूर्ण व्यक्ति यह सोचने लगेंगे कि वे स्वयं निरन्तर निर्दोष रहे हैं और मेरी राय में हाँ हाँ आ रहा हूँ भाई उस परिणति का तो किसी भी मूल्य पर परिहार करना ही चाहिए। नहीं तो सब-कुछ एक उपहास बन जाएगा।

मैं वास्तव में बहुत अनुगृहीत हूँ, मेरे प्यारे स्वदेशवासी बन्धु आपकी जिज्ञासा के लिए। पर मेरी गाथा में कुछ भी असाधारण नहीं है। चूंकि आपने दिलचस्पी दिखाई है इसलिए मैं आपको बताता हूँ कि कुछ दिन उस हँसी के बारे में मैंने सोचा विचारा फिर मैं उसे भूल गया। कभी-कभी मुझे अपने अन्दर में वह सुनायी पड़ जाती थी। पर ज्यादातर बिना कोई प्रयत्न किए मैं और चीजों के बारे में सोचता रहता था।

तो भी यह मुझे बताना पड़ेगा कि पेरिस के घाटों पर टहलना मैंने छोड़ दिया। जब कभी किसी मोटर या बस में मैं घाटों के किनारे से गुजरता था तो एक प्रकार का मौन मेरे ऊपर छा जाता था। मैं शायद इंतजार करता था। पर मैं सेन पार कर लेता था और होता कुछ नहीं था राकी साँस फिर चलने लगती थी। उसी समय स्वास्थ्य की ओर से भी मुझे कुछ चिंता रही। कोई निश्चित रोग नहीं शायद उदासी अपना उल्लास फिर से प्राप्त करने में एक प्रकार की कठिनाई। मैं डॉक्टरों के पास गया उन्होंने मुझे स्फूर्तिदायक दवाइयाँ दीं। मेरे मन में एकान्तर क्रम से कभी स्फूर्ति और कभी थकान के भाव आते-जाते रहे। मेरे लिए जीवन कुछ कम सरल हो गया। जब शरीर उदास हो तो हृदय भी व्यथित रहता है। मुझे लगता था मैं उस चीज को भुलाए

दे रहा हूँ जो मैंने कभी सीखी नहीं था, पर जानना बहुत अच्छी तरह था—यानी जीना। हाँ, मैं मानता हूँ सब-कुछ उसी गुण था।

पर आज शाम भी मैं पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हूँ। आज तो मुझे बात करने में भी कठिनाई हो रही है। मुझे लगता है कि मैं ठीक से बोल नहीं पा रहा हूँ और अपने शब्दों के बारे में मुझे वांछित आत्मविश्वास नहीं है। शायद मौसम का असर है। सांस लेने में मुश्किल हो रही है। वातावरण में इतना भारीपन है कि सीने को दबा रहा है। आपको बाहर चलकर शहर में घूमने में कोई एतराज तो न होगा बंधु? शुक्रिया!

आज शाम ये नहरें कितनी सुन्दर लग रही हैं! मुझे स्थिर, प्रवाह-हीन जल की गंध प्रिय है, नहर में डूबी हुई सूखी पत्तियों की गन्ध प्रिय है, और फूलों से लदे बजरों पर से उठती हुई अन्त्य-गन्ध प्रिय है। नहीं-नहीं, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस रुचि में कुछ भी दूषित नहीं है, बल्कि यह तो मेरा एक निश्चयात्मक कम है। सच बात तो यह है कि मैं इन नहरों को पसन्द करने के लिए अपने आपको मजबूर करता हूँ। आपको बताऊँ, संसार में मुझे सबसे अधिक प्रिय है सिसली और विशेषकर एटना की चोटी से सूर्य के प्रकाश में उसका दृश्य, बशर्ते कि समुद्र और द्वीप पर मैं छाया हुआ होऊँ। जावा भी प्रिय है पर केवल व्यापारी वायुओं के समय। हाँ मैं युवावस्था में वहाँ गया था। सामान्यतः मुझे सब द्वीप प्रिय हैं। उन पर छा जाना ज्यादा आसान है।

प्यारा मकान है, है न? ऊपर जो आप दो सिर देख रहे हैं वे हब्शी गुलामों के हैं। दूकान का साइनबोर्ड है। घर गुलामों के एक व्यापारी का था। उन लोगों में आत्म-विश्वास था। वे घोषणा करते थे— 'देखते हैं आप मैं समृद्धिशाली हूँ मैं गुलामों का व्यापार करता हूँ, काले माँस का सौदागर हूँ।' आप सोचते हैं आज कोई खुले आम कह सकेगा कि यह है उसका धन्धा? उफ़, कैसा अनाचार है! मानो मुझे अपने परिसी सहयोगियों के स्वर सुनाई दे रहे हैं। वे इस विषय के सम्बन्ध में

दढ हैं। दो-तीन घोषणा पत्र प्रकाशित करने म उन्हें सकोच न होगा—या दो-तीन से ज्यादा भी। और सोच विचारकर मैं भी अपना दस्तखत उन दस्तखतो म शामिल कर देता। गुलामी? कदापि नही। हम उसके विरुद्ध हैं। अपने घरो या कारखानो म इस स्थान देने की लाचारी हम हो सकती है—पर वह तो स्वाभाविक है पर उसके बारे मे बढ-चढकर बातें करना! बिलकुल हद है!

मैं खूब जानता हूँ कि बिना आधिपत्य जमाए या सेवा स्वीकार किये आप काम नही चला सकते। हर एक व्यक्ति को गुलामो की उसी प्रकार आवश्यकता है जिस प्रकार स्वच्छ वायु की। आदेश देना, साँस लेना है आप सहमत है मुझसे? फिर अत्यधिक दीन-हीन भी साँस लेते ही हैं। सामाजिक शृखला की निम्नतम कडी पर जो व्यक्ति है उसके भी बीवी बच्चे तो हैं ही। और अगर अविवाहित है तो उसके पास कुत्ता तो है। मूल बात तो यह है कि आप ऐसे व्यक्ति पर गुस्सा हो सकें जिसे उलटकर जवाब देने का अधिकार न हो। 'अपने पिता को उलटकर जवाब नहीं दिया जाता', आप जानते हैं न इस उक्ति को? एक तरह से यह बडी विचित्र बात है। दुनिया म जवाब कोई किसे दे, अगर उसे नहीं जिसम प्रेम करता हो? दूसरी तरह यह बात विश्वासजनक है। किसी न किसी को तो आखिरी बात कहनी ही होगी। नहीं तो हर एक तर्क के जवाब म दूसरा तर्क हाजिर किया जा सके और इस तरह कभी किसी बात का अन्त हो न हो। दूसरी तरफ शक्ति हर मामले को हल कर देती है। समय तो लगा, पर अन्त म यह बात हमारी समझ म आ गई। मिसाल के लिए आपने गौर किया होगा कि हमारे पुरातन यूरोप की दार्शनिकता आखिरकार अब सही रास्ते पर आ गई है। पुराने सीधे सादे जमाने म हम जसे कहते थे अब नहीं कहते कि 'यह मेरा मत है। आपकी क्या आपत्तियाँ हैं?' हम ज्यादा स्पष्ट हो गए हैं। संलाप के स्थान पर हमने विज्ञप्ति प्रतिष्ठित कर दी है। 'सत्य यह है" हम कहते हैं आप जितनी चाहे इस पर बहस कर ले हम कोई दिलचस्पी नहीं,

पर कुछ साल में पुलिस आपको दिखा देगी कि हमारी बात सही ही है।

और यह प्यारा पुरातन ग्रह! अब सब-कुछ साफ़ हो गया है। हम अपने आपको जान गए हैं, हम अपनी क्षमता से परिचित हो गए हैं। मुझे ही ले लीजिए—विषय न सही, उदाहरण में ही परिवर्तन ला दें। मेरी हमेशा इच्छा रही है कि मेरी सेवा मुस्कराते हुए की जाए। अगर नौकरानी की मुखमुद्रा दुःख भरी होती थी तो मेरे दिन विषाक्त हो जाते थे। बेशक, उसे प्रसन्न न रहने का अधिकार था। पर मैं अपने-आपसे कहता था कि उसके लिए बेहतर होगा कि रो-रोकर काम करने के बजाय हँसते-हँसते करे। असल में बेहतर तो मेरे लिए था। फिर भी शान बघारने का सवाल नहीं है, पर मैं समझता हूँ कि मेरा तर्क कोई मूर्खतापूर्ण नहीं था। यों ही मैं चीनी रेस्तराँ में खाने से सदा इन्कार करता रहा। क्यों? क्योंकि जब वे मौन रहते हैं और गोरी चमड़ी वालों के सामने रहते हैं तो पूरब के रहने वालों के चेहरे पर अक्सर अवज्ञा के भाव होते हैं। स्वाभाविक है कि खाना परोसते समय भी उनके चेहरे का भाव वही बना रहता है। फिर इस दशा में कैसे आप मुर्गे का मज़ा ले सकते हैं? और सबसे बड़ी बात, कैसे आप उनकी तरफ़ देखते हुए भी सोच सकते हैं कि आप हर तरह से ठीक-ठाक हैं?

तो मैं यों कहूँगा कि दासता मुस्कराती हुई इसीलिए अनिवार्य है। पर हम यह बात स्वीकार नहीं करनी चाहिए। क्या यह बेहतर नहीं कि जो गुलामों के बिना अपना काम नहीं चला सकता वह उन्हें 'स्वाधीन' घोषित करे? पहले तो सिद्धान्त के नाते और दूसरे इसलिए ताकि वे घोर नैराश्य में न डूब जाएँ। यह मुआवज़ा तो उन्हें हमारी तरफ़ से पाने का अधिकार है ही क्या? इस तरह वे मुस्कराते रहेंगे और हम अपने मन को परितुष्ट बनाए रख सकेंगे। नहीं तो हमें अपने बारे में अपनी राय पर पुनर्विचार करना पड़ जाएगा, हम वेदना से पागल हो उठेंगे या फिर विनीत बन जाएँगे, क्योंकि कुछ भी सम्भव है।

परिणामस्वरूप दुकानों पर साइनबोर्ड न होंगे और यह साइनबोर्ड तो बहुत ही बुरा लगता है। इसके अलावा अगर हर आदमी सब कुछ बता दे, अपना सच्चा व्यवसाय और सच्चा परिचय दे, तो हमारी समझ में न आएगा कि किधर जाएँ। जरा ध्यान तो दीजिए विजिटिंग कार्डों का—'ड्यूपो विश्वसनीय दार्शनिक' या 'धर्मनिष्ठ जमींदार' या 'व्यभिचारी मानवता वादी'। मन पूछिए तो बड़ा ही विस्तृत क्षेत्र है। पर एकदम नारकीय हो जाएगा सब। हाँ, नरक ऐसा ही होगा—दुकानों के साइनबोर्डों से भरी सड़कें और अपना आशय स्पष्ट करने का कोई उपाय नहीं। एक बार जो वर्गीकरण हो गया सो हो गया।

आप अपने को ही ले लीजिए मेरे स्वर्गवासी बन्धु, जरा ठहर कर सोचिए तो कि आपका साइनबोर्ड क्या होगा? आप चुप हैं? खैर बाद में बताइएगा। मैं अपना तो जानता हूँ—दो मुँह वाला प्यारा जेनस और ऊपर मस्या का आदर्श-वाक्य 'इस पर विश्वास न करो।' और मेरे कार्डों पर होगा 'जौं-बपतिस्त क्लेमेंस नाटक खेलने वाला।' जिस शाम की मैंने आपसे चर्चा की थी उसके बाद मुझे एक बात पता चली। जब मैं किसी अन्धे को पटरी तक पहुँचाकर विदा लेता था तो अपनी टोपी उठाकर। साफ है कि टोपी उठाकर अभिवादन करना अन्धे के लिए तो था नहीं वह तो देख ही नहीं सकता था। था किसके लिए? जनता के। अपना पाट खत्म करके मैं जनता को सलाम झुकाता था। कुछ बुरा नहीं क्यों? उन्हीं दिनों एक दिन जब एक मोटर चलाने वाले ने सहायता के लिए मुझे धन्यवाद दिया तो मैंने कहा 'कोई भी इतना न करता।' मेरा मतलब था 'इतना तो कोई भी कर देता।' पर उस कमबख्त भूल का बोझ मेरे मन पर बना रहा। विनयशीलता में तो मैं वाकई लाजवाब था।

मुझे नतशिर होकर स्वीकार करना पड़ता है मेरे स्वर्गवासी बन्धु कि मैं दम्भ से भरा था। मैं मैं मैं यही मेरी जीवन रागिनी की टेर रही है और जो भी बात मैं करता था उसी में यह सुनायी पड़

सकती थी। बिना ज्ञान प्रचार मैं बात ही नहीं कर सकता था। खास तौर से तब, जब मैं अपनी ध्वस्तकारी विवेक की गली को अपनाता था, जिसका मैं पंडित था। यह बिल्कुल सच है कि मैं जीवन में हमेशा स्वतन्त्र और शक्तिशाली रहा। औरों के साथ अपने सम्बन्धों में मैं अनुभव करता था कि मैं मुक्त हूँ, सिर्फ़ इसलिए कि मैं किसी को अपने बराबर का नहीं मानता था। मैं आपको बता ही चुका हूँ कि मैं अपने को हर एक से ज्यादा बुद्धिमान समझता था। मैं अपने को ज्यादा कुशल और ज्यादा सुदर्शनीय भी समझता था, अचूक निशानेबाज, बेजोड़ ड्राइवर और प्रेम-व्यापार में अनुपम। उन मामलों में भी जहाँ मुझे अपनी हीनता का प्रमाण पाना मुश्किल नहीं था, जैसे टेनिस में—मैं बस साथ खेल भर लेता था—मेरे लिए यह सोचना कठिन था कि अभ्यास करने का थोड़ा समय मिलने से मैं श्रेष्ठतम खिलाड़ियों से आगे न पहुँच जाऊँगा। मुझे अपने अन्दर श्रेष्ठताओं के अलावा और कुछ न दीखता था और इसीलिए मैं शान्त प्रकृति का था, सौजन्य से भरा रहता था। जब मैं दूसरों के मामलों में पड़ता था तो मात्र कृपा से प्रेरित होकर पूरे रूप से स्वाधीन। पर सारा श्रेय मुझे ही प्राप्त होता था। मेरा आत्म-श्लाघा एक डिग्री और बढ़ जाती थी।

कुछ और वास्तविकताओं के साथ-साथ इनकी भी उस शाम के, जिसकी मैंने आपसे चर्चा की थी, बाद के वर्षों में धीरे धीरे मुझे जानकारी हुई। सब-कुछ एक साथ ही नहीं न ही बहुत स्पष्ट रूप में। पहले तो मुझे अपनी स्मरण-शक्ति फिर से प्राप्त करनी पड़ी। धीरे धीरे मुझे ज्यादा साफ़ दीखने लगा। मुझे जो ज्ञान प्राप्त था उसी को मैंने सीखा था। उस समय तक मुझे विस्मरण की विलक्षण सामर्थ्य से सदा सहायता मिलती रही थी। मैं सब-कुछ भूल जाता था, सुस्थान अपने संकल्पों से हटती थी। कोई बात ऐसी नहीं थी जिसका गहरा प्रभाव पड़े। युद्ध, आत्महत्या, प्रेम, गरीबी सब मेरा ध्यान आकर्षित करने अवश्य थे जब परिस्थितियाँ बाध्य करती थीं तब, पर वह केवल

औपचारिक और सतही ध्यान होता था। कभी-कभी म अपने दनिक जीवन के बाहर की किन्ही बातो के लिए भी उत्तेजित होने का ढोग किया करता था। पर बिलकुल सच पूछिए तो म वास्तव म उनम पडता नही था—सिवा उस वक्त जब मेरी स्वतन्त्रता म बाधा पहुँच रही हो। कसे कहूँ म इस बात को ! हर एक चीज़ मेरे ऊपर म फिसल जाती थी—हाँ बस सरकती जाती थी।

पर इन्साफ करें हम लोग। कभी-कभी मेरा भुलक्कडपन प्रशसा के योग्य होता था। आपने देखा होगा कि कुछ लोगो का धम यही है कि सबके कसूर माफ कर द और व माफ कर भी देते हैं पर उन्ह भुला नही पाते। म इतना भला तो नही था कि कसूरो को माफ कर दता पर अन्त म सब उन्ह भुला दिया करता था। और फिर, जो आदमी सोचता था कि म उससे घृणा करता हूँ उसके आश्चय का ठिकाना न रहता था जब देखता था कि मैं टोपी उठाकर मुस्कराता हुआ उसका अभिवादन कर रहा हू। तब अपने स्वभाव के अनुरूप वह या तो मेरे महान चरित्र की स्तुति करता या या मेरे अशिष्ट आचरण की भत्सना। वह यह न समझ पाता था कि कारण इतना सही सीधा-सादा है। मैं उसका नाम तक भूल चुका होता था। वही कमज़ोरी जो कि ही स्थितियो म मुझे कृतघ्न या उदासीन बना देती थी ऐसी स्थितियो म अत्यन्त उदार भी बनाती थी।

परिणामत दिन-पर दिन मेरे जीवन की शृखला को बाँधन वाला और कुछ न रहा केवल वही म म म। औरतो के सग पाप और पुण्य म—आने वाले कल का कोई ध्यान नही—हर दिन अपने म ही सीमित—जसे कुत्ता पर हर दिन म अपनी जगह पर जमा हुआ। इस तरह म जिन्दगी की सतह पर जीता रहा नाम शब्दो की दुनिया म वास्तविकता स परे। वे सारी किताबें नाम क लिए पढी हुई व सारे दोस्त, जिनस मुहब्बत नाम क लिए थी व सारे शहर जिनको नाम भर क लिए देखा था और व सारी औरतें नाम मात्र क लिए

अपनाई हुई। या तो ऊब म या अनमनेपन म मैं मान चेष्टाएँ करता रहा। फिर आव इन्सान व चिपक जाना चाहन थ, पर उन्हें थामने के लिए कुछ मिला नहा, और यह दुभाग्य की बात थी, उनके लिए। रही मरी बात, सा मने भुला दिया। मुझे अपने अलावा और किसी चीज की याद ही नहीं रहती थी।

फिर धीरे धीरे मेरी स्मरण शक्ति वापस लौटी। या कहें कि म ही उस तक वापस पहुँचा और उसम मुझे वह स्मति मिली जो मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। पर उसकी चर्चा करने के पहले आप इजाजत दें तो कुछ मिसालें पेश करूं। मेरा विश्वास है कि य आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी—बताने के लिए कि मैंने अपनी खोज के दौरान म क्या-क्या पाया।

एक दिन अपनी मोटर म जाते हुए जब मैंने चौराहे पर हरी बत्ती का इशारा पाकर भी आग बढ़ने म सुस्ती की और हमारे कई सन्तापी नागरिक फौरन मेरे पीछे जोर-जोर से हान बजाने लग तो मुझ सहसा एक घटना याद हो आई जो इसी तरह की परिस्थिति मे घटी थी। चश्मा लगाए और प्लस फोर पहने एक दुबले-पतले जरा-से आदमी ने अपनी मोटर-साइकिल मेरे सामने ला आकर लाल बत्ती के पास खड़ी कर दी थी। जब उसने मोटर-साइकिल रोकी तो उसका इंजन बन्द हो गया था, और उसे फिर स चालू करने का वह व्यर्थ चेष्टा कर रहा था। जब रोशनी बदली ता मैंने अपनी सामान्य शालीनता से उससे प्रार्थना की कि वह अपनी मोटर-साइकिल रास्ते से हटा ले ताकि मैं आगे बढ़ सकूं। वह बेचारा अपने खो-सा करते हुए इंजन म जूझ रहा था, अतः उसने परिसी शिष्टता के अनुसार जवाब दिया, 'जाओ, जाकर कर पर चढ़ जाओ।' मैंने फिर जोर दिया—शालीनता से ही पर अधीरता का हल्का-सा भाव अपने स्वर म लाते हुए। फौरन मुझसे कहा गया—और काफी स्पष्ट शब्दों म कहा गया—कि मैं जहन्नुम को जा सकता हूँ। उधर तब तक अनेक हान मेरे पीछे बजने लग थ। बड़ी दृढ़ता म मैंने

अपने प्रतिवादी से प्रार्थना की कि वह भलमनसाहत से पेश आए और यह समझे कि वह सारा ट्रैफिक रोक रहा है। उस चिड़चिड़ आदमी ने—शायद तब तक वह अपने इंजन के दुर्व्यवहार से बहुत परेशान हो चुका था—मुझे ज्ञापित कराया कि अगर मैं खूब अच्छी तरह से अपनी मरम्मत करवाना चाहता होऊँ तो वह बड़ी खुशी से करने को तैयार है। इस प्रकार के बहप्पन ने मुझमें एक स्वस्थ आक्रोश उत्पन्न कर दिया और मैं इस इरादे से अपनी मोटर से उतरा कि उस बदज़बान की अच्छी तरह पिटाई करूँ। यह मैं नहीं समझता कि मैं कायर हूँ। (पर क्या क्या विचार आदमी के मन में नहीं उठते!) मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी से एक बालिश्त लम्बा था और मेरी मांसपेशियाँ भी हमेशा दृढ़ और सुडौल रही हैं। अब भी मेरा विश्वास है कि मरम्मत उसकी होती न कि मेरी। पर मैंने ज़मीन पर पैर रखा ही था कि जमा होती हुई भीड़ में से एक आदमी आगे बढ़ा और मुझसे बोला कि मैं धूल का कीड़ा हूँ और वह मुझे उस आदमी पर हाथ न उठाने देगा जिसके पैरों के नीचे मोटर-साइकिल है और जिसकी वजह से मैं उसके साथ उलझन में फायदे में हूँ। मैं उस योद्धा की तरफ मुड़ा, पर सच कहूँ तो मैंने उसे देखा भी नहीं। मैंने अपना सिर घुमाया ही था कि मुझे मोटर-साइकिल की फटफट सुनाई पड़ी और बड़े ज़ोर का एक घूँसा मेरी कनपटी पर पड़ा। इससे पहले कि मैं समझूँ-बूझूँ कि हुआ क्या, मोटर-साइकिल चली गई। चक्कर खाता हुआ सिर लिए मैं यन्त्रवत् फिर दर्शनार्थियों की तरफ बढ़ा कि उसी समय अब तक काफी संख्या में इकट्ठी मोटरों में हॉर्नों का तुमुल-नाद शुरू हो गया। बत्ती हरी होने लगा था। तब कुछ किंकर्तव्यविमूढ़-सा उस मूर्ख की मरम्मत किये बिना ही दुम दबाए मैं अपनी मोटर पर वापस चला गया और मोटर स्टार्ट कर दी। जब मैं उस मूर्ख के पास से गुज़रा तो उसने 'बेवकूफ! गधा!' कहकर मेरी भर्त्सना की। मुझे आज भी याद हो आती है।

बिलकुल ही तुच्छ कथा है आपकी राय में? हाँ, शायद। फिर भी

उसे भुलाने म मुझे कुछ समय लगा और यही तत्त्व की बात है। मेरे पास वहाने थ बेशक। मैंने बिना जवाब दिए मार खा ली थी लेकिन मुझ पर कायरता का आरोप नहीं लगाया जा सकता था। अचानक एक साथ दो तरफ से सम्बोधित किए जाने पर मैं चकरा गया था, मेरे दिमाग म सब गडबडा गया था, और मोटर के हार्नों की भा भों ने तो मेरी घबराहट का बचा-खुचा हिस्सा भी पूरा कर दिया था। पर मैं उसके बारे म इस तरह दुखी था जैसे मैंने मर्यादा के नियमों का उल्लंघन किया हो। मेरी नजरों के सामने बिना किसी प्रतिक्रिया के मोटर की तरफ अपना वापस जाना याद आता था, भीड की व्यंग्य भरी दृष्टि मुझ पर थी और वह भीड, जहाँ तक मुझे याद है, इस वजह से और भी ज्यादा आनन्द ले रही थी क्योंकि मैं एक बढिया नीला सूट पहने था। मेरे कानों म 'बेवकूफ गधा' गूंजता रहा और सब बातों के बावजूद यह मुझे मुनासिब ही लगता था। संक्षेप म कहूँ तो जनता के सामने मेरा मानमर्दन हो गया था। बेशक परिस्थितियों के भ्रम के कारण, पर परिस्थितियाँ तो हमेशा ही रहती हैं। बाद म मुझे साफ दीखा कि मुझे क्या करना चाहिए था। मैं कल्पना करता कि मैंने हार्नोनियों को जबड पर घूसा मारकर गिरा दिया है, अपनी मोटर म वापस पहुँचा हूँ, उस बन्दर को, जिसने मुझे मारा था, मैंने पीछा किया है उसे पकड लिया है, उसकी मोटर-साइकिल दबाकर किनारे लगवा दी है और एक तरफ ले जाकर खूब अच्छी तरह से उसकी मालिश की है, जो कि उसने पूरा तरह कमाई थी। कुछ हेर-फेर करके यह छोटी-सी फिल्म सैकडों बार मेरे कल्पना-पट पर आती-जाती रही। पर मौका हाथ से निकल चुका था और कई रोज तक एक कडवा आक्रोश मुझे कचोटता रहा।

अरे पानी फिर बरसने लगा! आइए क्यों न हम लोग इस बरसाती के नीचे रुक जाएँ! ठीक। हाँ, तो मैं कहाँ था? हाँ-हाँ मान-मर्यादा। मुझे जब उस घटना का पुन स्मरण हुआ तो मेरी समझ म आया कि उसका अर्थ क्या है। आखिरकार मेरा स्वप्न यथार्थ के सामने टिक नहीं

पाया था। यह साफ ज़ाहिर था कि मैंने एक सम्पूर्ण मानव होने का सपना देखा था—एक ऐसे मानव का जो व्यक्तिगत रूप में और अपने व्यवसाय में सम्मान प्राप्त कर सका था। आप चाहें तो वह लें आधा नेता और आधा डि गोल। थोड़े में कहूँ तो मैं हर चीज़ पर छा जाना चाहता था। इसीलिए मैं शान दिखाता था दिमागी प्रतिभा के बजाय शारीरिक कला-कौशल का प्रदर्शन करना चाहता था। पर सबके सामने बिना चूँ चपड़ किये मार खा लेने के बाद मेरे लिए सम्भव न था कि अपना वह चित्र सजोए रख सकूँ। अगर मैं सचाई और बुद्धिमानी के प्रति इतना निष्ठावान होता, जितना कि मैं कहता था कि मैं हूँ तो वह घटना मेरे लिए क्या महत्व रखती ? जो उसके साक्षी रहे थे वे तो उसे भुला चुके थे। मैं बिना वजह गुस्सा हो जाने के लिए अपने को कुछ कोस लेता और कुछ इसके लिए भी कि गुस्सा करने के बाद दिमाग सही न रख सकने के कारण अपने गुस्से के परिणामों का भी समुचित सामना नहीं कर सका। उसकी बजाय मैं बदला लेना चाहता था मारकर विजय पाना चाहता था। जैसे मेरी सच्ची आकांक्षा पृथ्वी पर सबसे अधिक बुद्धिमान होने की या सबसे अधिक उदार होने की न रही हो बल्कि यह रही हो कि जिसे मैं चाहूँ मारकर गिरा सकूँ, यानी बिलकुल प्राथमिक अर्थों में अधिक शक्तिशाली सिद्ध होऊँ। सच बात तो यह है कि हर बुद्धिजीवी गुण्डों का सरदार होने के और समाज पर मात्र शक्ति के सहारे आधिपत्य जमाने के सपने देखता है। चूँकि यह उतना सरल नहीं है जितना कि जासूसी उपन्यासों में लिखा रहता है इसलिए आदमी ज्यादातर राजनीति का सहारा लेता है और लपककर क्रूरतम दल में शामिल हो जाता है। इससे क्या है अगर अपने विवेक का अपमान करके मनुष्य हर एक पर आधिपत्य जमाने में सफल हो सके ? मुझे अपने अन्दर में भावना जमाने के मधुर सपनों का आभास मिला।

कम-से-कम इतना तो मैं जान ही गया कि मैं अपराधी और दोषी का पक्ष उसी हद तक लेता हूँ जहाँ तक कि उनका अपराध मुझे कोई

हानि न पहुँचाए। उनका अपराध मेरी वाक्पटुता प्रकट करता था, क्योंकि मैं उनका शिकार नहीं था। इस घटना ने मेरे लिए होना था मैं न केवल निर्णायक बन जाता बल्कि उससे अधिक — एक आधी स्वामी बन जाता, जो चाहता था कि न्याय के सिद्धान्तों की अवहेलना करने वालों पर आघात कर उसे घुटन के बल टिका दे। उसके बाद, मेरे स्वदेशी नामी प्रभु इस पर विश्वास करते रहना कठिन था कि आदमी न्याय का पक्ष लेने के लिए बना है और विधवा और अनाथ का रक्षा का भार भाग्य ने उसे सौंपा है

चूँकि पानी और भी जोर से बरस रहा है और हमारे पास समय है क्या मुझे इजाजत है एक और बात आपको बताने की, जिसकी खोज मैंने जल्दी ही (अपनी स्मृति में) की थी? आइए हम बारिश में बच कर इस बेंच पर बैठें। सदियों से पानी पीने वाले इसी नहर पर ऐसा ही पानी बरसते देखते रहे हैं। जो बात मुझे आपको बतानी है वह कुछ ज्यादा मुश्किल है। इस बार उसका सम्बन्ध एक औरत से है। पहले तो आप यह जान लें कि औरतों के साथ मुझे हमेशा सफलता मिलती रही बिना कोई विशेष प्रयत्न किए। मैं यह नहीं कहता कि सफलता उन्हें सुखी करने में या उनके द्वारा अपने को ही सुखी करने में मिलती रही। नहीं बस सफलता मिलती रही। अपना लक्ष्य मैं जब भी चाहता था प्राप्त कर लेता था। कहा जाता था कि मेरा आचार-व्यवहार आकर्षक है। सोचिए तो जरा आप जानते हैं कि यह आकर्षण है क्या—बिना कोई स्पष्ट प्रश्न किए ही उत्तर में 'हाँ' कहलवा लेना। और उस समय मेरे बारे में यह सच था। आपको आश्चर्य होता है? मान भी लीजिए इन्कार क्या करते हैं? मेरा चेहरा जैसा अब है उसमें तो यह स्वाभाविक ही है। अफसोस! एक अवस्था प्राप्त कर लेने के बाद अपनी आकृति का दायित्व हर व्यक्ति पर भार बन जाता है। मेरा? पर उसका क्या? यह अपनी जगह पर सच है कि समझा जाता था कि मुझमें आकर्षण है और मैंने उसका खूब फायदा उठाया।

पर बिना कोई जोड़-तोड़ लगाए मैं ईमानदारी बरतता था या, करीब-करीब। औरतों से मेरे सम्बन्ध सहज-स्वाभाविक और मुक्त थे। उनमें कोई कपट न था, सिवाय उस प्रकट कपट के जिसे वे श्रद्धार्जित समझती हैं। मैं उन्हें प्रेम करता था उस पावन कथन के अनुसार ही जिसका मतलब है कि मैंने उनमें से किसी से कभी प्रेम नहीं किया। मैं हमेशा नारी विरोध को बेहूदा और मूर्खतापूर्ण समझता रहा और जितनी भी औरतों से मेरी मुलाकात हुई उनमें प्रायः सभी को मैंने अपने से बेहतर ही पाया। फिर भी ऊँचे आसन पर बिठाकर मैंने सेवा करने की अपेक्षा उनका उपयोग ही अधिक किया। फिर इसका किसी को पता भी कैसे चल सकता है?

यह बात तो है ही कि सच्चा प्रेम असाधारण होता है एक शताब्दी में कम दो या तीन बार और क्या? बाकी समय या तो माया होती है या ऊब। रही मेरी बात सो मैं किसी हालत में भी दर्द पुतगाना भक्तिन तो था नहीं। मैं कठोर हृदय नहीं हूँ उससे बहुत दूर बल्कि उसके विपरीत, करुणा से भरा हुआ हूँ यहाँ तक कि मेरे आँसू पलकों पर रखे रहते हैं। बस यही है कि मेरी भावनाएँ सदा मेरी ही ओर उन्मुख होती हैं। करुणा के मेरे भाव अपने ही लिए होते हैं। यह बात सच नहीं है कि मैंने कभी प्रेम नहीं किया। अपने जीवन में कम-से-कम एक महान प्रेम की भावना तो मेरे मन में उठी ही, जिसका पात्र हमेशा मैं स्वयं ही रहा। उस दृष्टि से, युवावस्था की अनिवार्य कठिनाइयों के बाद मैं जल्दी ही सुव्यवस्थित हो गया था। मेरे प्रेम जीवन में केवल विषयासक्ति का प्रमुत्व था। मैं केवल भोग विलास की और परास्त करने की सामग्री की तलाश में रहता था। मेरा रूप इसमें मेरा सहायक था। प्रकृति ने मेरे प्रति उदारता दिखायी थी। मुझे उस पर गर्व था और उसके द्वारा मैंने बहुत से परितोष प्राप्त किये जो अब मैं नहीं जानता कि केवल शारीरिक सुख से थे या प्रतिष्ठा प्राप्ति से। आप अवश्य कहेंगे कि मैं फिर डींग बघार रहा हूँ। मैं इससे इन्कार नहीं करूँगा और न मुझे इस

पर कोई गव ही है क्योंकि इस समय मैं उस बात की टीग हाक रहा हूँ जो मच है।

ना भी हो मरी विषयासक्ति (उसी तक अपने को सीमित रखू) इतनी वास्तविक थी कि दस मिनट की मौज के लिए भी मैं माँ-बाप का त्याग कर सकता था चाहे बाद म उसके लिए कितना ही अनुताप क्या न करता। नहीं, यो कहूँ कि दस मिनट का मौज के लिए तो खास तौर मे कर सकता था, और विशेषकर तब जब मुझे यह विश्वास होता कि इसका कोई उपसहार न होगा। सिद्धान्त मेरे भी थे, जैसे यही कि मित्र की पत्नी पुनीत है। पर मैं बिलकुल सच्चे मन से दो-चार दिन पहले वाछित स्त्री के पति के प्रति मित्र भाव त्याग देता था। शायद मुझे इसे विषयासक्ति नहीं कहना चाहिए। विषयासक्ति अरुचिकर नहीं है। हम उदारतापूवक इसे दुबलता कह लें—एक प्रकार की अ मजात दुबलता जो प्रेम-व्यापार म शरीर के सिवाय और कुछ नहीं देख पाती। पर वह दुबलता थी खूब सुविधापूण। मेरी विस्मरण की क्षमता के साथ मिल कर वह मेरी स्वच्छन्दता म योग देती थी। साथ ही एक प्रकार की अनस्यता का आभास देकर और एक अविचार स्वतन्त्रता प्रदान कर वह मुझे नयी-नयी सफलताएँ प्राप्त करने के अवसर देती थी। रोमांटिक न होने के परिणामस्वरूप मैंने रोमांस को कुछ निमित्त प्रदान किया। हमारी महिला मित्रा की बोनापाट के साथ एक समानता है वे समझती हैं कि जहाँ और सब असफल रहे हैं वहा वे अवश्य ही सफलता प्राप्त कर लेंगी।

इस व्यापार विनिमय म अपनी विषयासक्ति के अतिरिक्त मैंने एक और भूख भी शान्त की—जुआ खेलने की अपनी तीव्र भूख। और तो भी मैंने प्रेम उनम किया जो एक प्रकार के खेल म मेरा साथ देती थीं जिसम कम-से-कम निष्पाप होने का स्वाद होता है। मैं आपको बताऊँ अब मुझे असह्य है मैं जीवन म मन-बहलाव के साधनों का ही आनन्द ले सकता हूँ। कोई भी सम्पत्ति चाहे वह कितनी भी जगमगाती हुई क्यों न हो,

मुझे शीघ्र ही उबा देती है पर अपनी मनचाही औरतों से मुझे कभी ऊब नहीं हुई। मुझे यह स्वीकार करते हुए कलश होता है, पर ग्राइस्टाइन से दस रुपया की बातचीत मैं किसी खूबसूरत कारस-गल से पहली मुलाकात पर आसानी से निछावर कर देता। यह बात और है कि उससे दसवीं मुलाकात तक पहुचते-पहुँचते ग्राइस्टाइन के लिए या किसी गम्भीर ग्रन्थ के लिए मेरा मन बेचैन हो उठता। सच कहूँ तो बड़ी बड़ी समस्याओं की मुझे अपनी विलासिता के बीच के अवसरों के अतिरिक्त और कभी फिक्र न होती थी। क्या बताऊँ कितनी बार पटरी पर खड़े हुए मित्रों के साथ बड़े जोर के वादविवाद के बीच तर्क का तार मेरे हाथ से छूट जाता था क्योंकि उसी समय कोई गजब की खूबसूरत औरत सड़क पार करती हुई दीख जाती थी।

मन में यह खेल खेलता रहा। मैं जानता था कि उन्हें यह पसन्द नहीं आता कि आपका उद्देश्य चट से पता चल जाए। पहले बातचीत होना जरूरी था, जिसे वे कहती थीं प्रेमालाप। मैं भाषणों से नहीं घबराता था वकील जो था और न कटाक्षों में क्योंकि अपनी सैन्य सेवा के दौरान में एमचर थियेटर रह चुका था। मैं अक्सर अपना पाट बदलता रहता था पर नाटक हमेशा वही रहता था। मिसाल के लिए पहले तो एक छोटा-सा अबूझ अबोधगम्य आकर्षण के अभिनय का रहता था, रहस्यमयी कोई बात थी, इसका कि यह एकदम समझ में नहीं आता मैंने बिलकुल नहीं चाहा कि आकर्षित होऊँ यहाँ तक कि मैं तो प्रेम से थक गया था—आदि आदि। यह सदा सफल रहता था, यद्यपि यह नाटक-संहिता के सबसे पुराने अंकों में था। फिर वह दूसरा—एक प्रकार का भेद भरा सुख पाने का जो सुख किसी और औरत से प्राप्त रहा हो सकता था। हो सकता है कि यह अधूरी रही हो है हो (क्योंकि कोई भी अपने को पूरी तरह नहीं बचा सकता) पर यह है अद्वितीय। इसके अलावा मैंने एक छोटे-से भाषण की तैयारी कर ली थी जिसका सदा ही सानन्द स्वागत किया गया और जिसे, मेरा पूरा विश्वास है,

आप भी मुराहैंगे। उन अब का सार दद मरी वेबसी के साथ जोर से इस बात का वर्णन मे था कि 'मैं कुछ नहीं हूँ, मेरे साथ फँसने म कुछ नहीं रखा है मरा जीवन कहीं और ही है, उसका दिन प्रतिदिन के सुख स कोई सम्बन्ध नहीं—जो सुख शायद मुझे और सबमे अधिक प्रिय होता, पर अब तो कोई चारा नही समय निकल गया।' समय निकल जान के कारणों को मैं गोपन रखता क्योंकि मैं समझता था कि रहस्य म आवत होकर शय्या पर जाना बहतर है। एक तरह मे इसके अलावा मैं जो कहता था उस पर विश्वास भी करता था मैं जिस भूमिका म उतरता था उसे जीवन्त बना देता था। फिर आश्चय क्या कि मेरी साथिनें भी मेरी ही तरह उत्साहपूवक मच पर थिरकने लगती थी। उनम जो सर्वाधिक सवदनशील थी उन्होंने मुझे समझने की चेष्टा की और उसम व एक प्रकार के विमर्षित विषाद की स्थिति म पहुँच गई। और दूसरा जो था व इसीस सन्तुष्ट होकर कि मैं खेल क नियमों का पालन कर रहा हूँ और कायस्न होने के पहने सवाद करने की ध्यवहार कुशलता का प्रदर्शन कर रहा हूँ, शीघ्र ही वास्तविकताओं पर उतर आती थी। इसके अथ होते थे कि मैंने विजय पायी और दोहरी विजय पायी क्योंकि उन्हें प्राप्त करने की जो कामना मेरे मन म थी उसे तृप्त करने क अतिरिक्त मैं अपने लिए अपने प्रेम को भी तृप्त कर रहा था—हर बार अपनी विशिष्ट शक्ति को प्रमाणित करके।

यहाँ तक कि उनमें से कुछ यदि केवल थोड़ा-सा ही सुख पहुँचाती थीं, तो भी मैं लम्बे अन्तराल के बाद उनसे पुन सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा करता था, निश्चय ही उस कामना से प्रेरित होकर जो अनुपस्थिति द्वारा पोषित होती रहती है और किन्हीं सम्बन्धों के पुनरा विष्कार के बाद आता है पर शायद इसलिए भी कि मैं इस बात को प्रमाणित कर सकूँ कि हमारे सम्बन्ध-पाश सुरक्षित रहे हैं और उन्हें कसने का अधिकार केवल मेरा है। कभी-कभी तो मैं यहाँ तक करता था कि उनसे प्रतिज्ञा करा लेता था कि व किसी और पुरुष का साथ

समपण नहीं करूँगी, ताकि इस सिलसिले में मैं बिलकुल निश्चिन्त हो जाऊँ। पर मेरा हृदय ज़रा भी उस चिन्ता का भागी नहीं था और न ही मेरी कल्पना। एक प्रकार का मिथ्याभिमान मुझमें कुछ इस प्रकार जम गया था कि मेरे लिए कल्पनातीत था यह सोचना यथार्थ के बावजूद, कि कोई औरत जो एक बार मेरी हो चुकी है कभी किसी और की हो सकती है। जो प्रतिज्ञा वे मुझसे करती थीं वह मुझे तो स्वतन्त्र कर देती थी, और उन्हें बाँध देती थी। जैसे ही मुझे निश्चय हो जाता था कि वे और किसी की नहीं हो सकती, मुझे इसका अवसर मिल जाता था कि मैं उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर दूँ—जो करना वैसे मेरे लिए करीब करीब असम्भव होता। जहाँ तक उनका प्रश्न था मैं अपनी बात सिद्ध कर चुका होता था और काफी दिनों के लिए अपना अधिकार सुरक्षित कर चुका होता था। विचित्र है है न? पर था ऐसा ही, मेरे प्यारे स्वदेशवासी बन्धु! कुछ लोग की पुकार होती है कि मुझे प्यार करो' तो कुछ की मुझे प्यार मत करो। पर एक प्रकार का जीव होता है सबसे बुरा और सबसे दुखी, जो पुकारता है मुझे प्यार मत करो पर मेरे प्रति ईमानदार बने रहो।

बस यही है कि अन्त में कोई भी प्रमाण कभी सनातन नहीं होता इसलिए हर व्यक्ति के साथ नये सिरे से प्रारम्भ करना पड़ता है। बार बार आरम्भ करते रहने के कारण आदमी को आदत पड़ जाती है। जल्द ही बिना सोचे भाषण ज़बान पर आने लगता है और अनायास आचरण उसका अनुगमन करता है। और फिर एक दिन ऐसा भी आता है कि बिना किसी विशेष कामना के भी आप स्वीकार कर लेते हैं। सच मानिए, कुछ लोगों के लिए दुनिया में सबसे मुश्किल काम यही है कि जिसकी कामना न की हो उसे स्वीकार न करें।

अन्ततोगत्वा यही हुआ। आपको यह बताने में कोई लाभ नहीं कि वह कौन था। इतना बताना पर्याप्त होगा कि उसने अपनी निरपेक्ष लिप्सा से मुझे आकर्षित किया था। सच बताऊँ बड़ा वाहियात अनुभव

था वह जैसा कि मुझे समझ लेना चाहिए था कि होगा। पर मेरे स्वभाव में कोई जटिलताएँ नहीं थी और जिस व्यक्ति को मैं दुबारा देखना नहीं था उसे शीघ्र ही भुला देता था। मैंने सोचा था कि उसका ध्यान ही उधर नहा गया है और यह तो कल्पना भी नहीं की थी कि उसके कोई विचार भी होंगे। उसके अलावा मेरा दृष्टि में उसका निरपेक्ष आचरण उसे संसार से अलग कर देता था। पर कुछ हफ्ते बाद मुझे पता चला कि उसने मेरी कमियों का वर्णन किसी तीसरे व्यक्ति से किया है। फ़ौरन मुझे लगा कि मैंने कुछ धोखा खाया है। वह उतनी निरपेक्ष नहीं थी जितना कि मैंने सोचा था और निर्णय करने का विवेक उसमें था। तब मैंने सोचा 'अरे, हटाओ' और हँसी में टालने की कोशिश की। मैं ठहाका मारकर हँसा भी पर यह स्पष्ट था कि घटना महत्त्वहीन थी। अगर ऐसा कोई क्षेत्र है जहाँ संकोच का नियम होना चाहिए, तो क्या वह यौन सम्बन्धों का क्षेत्र नहीं है अपनी सभी अपूर्व-नैयताओं के साथ? पर नहीं, हममें से हर एक अपना श्रेष्ठतम पक्ष सामने रखना चाहता है अकेले में भी। कह तो दिया मैंने कि 'अरे हटाओ' पर मेरा आचरण कैसा था? मेरी मुलाकात उस औरत से कुछ दिन बाद फिर हुई और मैंने हर तरह से उसे आकर्षित करने और वास्तव में पुनः प्राप्त करने की चेष्टा की। यह बहुत मुश्किल नहीं था क्योंकि उन्हें यह पसन्द ही नहीं है कि समाप्ति विफलता में हो। उस क्षण में बिना किसी इरादे के, मैं वास्तव में हर तरह से उसके मान को ठेस पहुँचाने लगा। मैं उसे त्याग देता और फिर स्वीकार कर लेता। उसे बाध्य करता कि वह अनुपयुक्त समय और अनुपयुक्त स्थितियों में आत्म-समर्पण करे। हर दृष्टि से मैं इतना क्रूर व्यवहार उससे करता था कि अन्त में मैंने उसी तरह अपने को उससे बाँध लिया जिस तरह कि मैं समझता हूँ जेलर कैदी से बँध जाता है। यह सब उस दिन तक चलता रहा जबकि व्यथा और विवशता के मिश्रित सुख की उग्र अस्त-व्यस्तता में उसने उस तथ्य को मुखर श्रद्धांजलि अर्पित की जो शासन के पाश में उसे बाँधे हुए था।

उसी दिन से मैं उससे दूर हटने लगा। और अब मैं उसे भूल चुका हूँ।

मैं आपसे सहमत हूँगा यद्यपि आपने शालीनतावश कुछ कहा नहीं है, कि यह दिल-बहलाव बात बहुत सुन्दर नहीं था। पर, अपने जीवन के बारे में ज़रा सोचिए मेरे प्यारे स्वदेशवासी बन्धु! अपनी स्मृतियों को ज़रा कुरेदिए शायद आपको भी ऐसी कोई घटना याद हो आए जो आप बाद में मुझे बताएँगे। रही मेरी, जब जब मुझे वह तुच्छ घटना याद हो आती थी मैं हँस पड़ता था। पर यह हँसी दूसरी तरह की थी—कुछ-कुछ उस तरह की जैसी मैंने पोंडआर्ट से पर सुनी थी। मैं न्यायालय में दिये गए अपने भाषणों और दलीलों पर हँस रहा था—औरतों के सामने दिये गए अपने भाषणों की अपेक्षा अपनी दलीलों पर ज्यादा। उनसे कम-से-कम मैंने बहुत झूठ नहीं बोला था। मेरे भाव बिना किसी छल-कपट के मेरे आचरण में स्पष्ट व्यक्त हो जाते थे। प्रेम की प्रक्रिया एक स्वीकरण है। स्वार्थ चीख उठता है दम्भ अपना प्रदर्शन करता है और सच्ची उदारता उद्घाटित हो जाती है। निदान उस शोचनीय कहानी में अपने अन्य सम्बन्धों से अधिक मैंने जितना समझा था उससे ज्यादा स्पष्टवादी हो गया था मैंने इसकी घोषणा कर दी थी कि मैं कौन हूँ और कैसे जी सकता हूँ। दूसरों में जो भी लगता रहा हो अपने व्यक्तिगत जीवन में मैं श्रेष्ठ रहा था—तब भी और विशेषकर तब, जब मैंने उस प्रकार का व्यवहार किया था जो मैंने आपको अभी बताया है—न्याय और सचाई के विषय में अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी-बड़ी उड़ान जब भर रहा था उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ। कम-से-कम इतना तो था कि दूसरों के प्रति स्वयं को साधारण करते देख मैं अपने सच्चे स्वभाव के विषय में अपने को भुलावा नहीं दे सकता था। कोई भी व्यक्ति अपने आनन्द के क्षणों में पाखण्डी नहीं होता—यह मैंने कहीं पढ़ा है मेरे स्वदेशवासी बन्धु या खुद ही मैंने निकाला है?

जब इस प्रकार मैंने इस बात का पता लगा लिया कि औरतों से हमेशा के लिए नाता तोड़ने में मुझे कितनी कठिनाई होती थी—जिस कठिनाई

के कारण ही मैं एक साथ कई समस्याओं में फँस जाता था—तो मैंने अपनी कोमल-हृदयता को दोषी नहीं ठहराया। जब मेरी एक प्रेमिका ने हमारे प्रेम-व्यापार के चरम शिखर तक पहुँचने की प्रतीक्षा में अधीर होकर मुझे छोड़कर चले जाने की बात की, उस समय जिस भावना ने मुझे प्रेरित किया था वह यह नहीं थी। मैं ही था जिसने तुरन्त आगे कदम बढ़ाया, जो झुका, जिसकी वाक्पटुता जागी। रही कोमल-हृदयता और अनुराग। इन्हें मैंने उसमें जगा दिया और मैंने स्वयं केवल उनके प्रतिबिम्ब रूप को ही अनुभव किया—केवल इस अस्वीकरण से कुछ उत्तेजित होकर और एक अनुराग-सम्बन्ध की सम्भाव्य हानि से घबराकर। सच है कि मैं कभी कभी सोचता था कि मैं वास्तव में व्यथित हूँ पर विद्रोहिणी के वापस चले जाने की देर थी कि बिना कोई चेष्टा किये, मैंने उसे भुला दिया—ठीक उसी तरह जैसे उसके निश्चय बदलकर लौट आने पर मैं यह भूल जाता था कि वह मेरे अंक में है। जी नहीं, वह प्रेम या उदारता नहीं थी जो मेरी भावनाओं को जगाती थी, जब इसका खतरा मुझे होता था कि कोई मुझे छोड़कर जा रहा है, वह केवल प्रेम पाने की और जिसे मैं अपना समझता था उसे पाने की आकांक्षा थी। ज्यों ही मुझे प्रेम प्राप्त हो जाता था और संगिनी भुला दी जाती थी, मैं फिर चमक उठता था, मैं चोटी पर पहुँच जाता था, मैं पसन्द करने योग्य बन जाता था।

और यह भी कहा जाए कि जैसे ही मैं वह अनुराग पुनः प्राप्त कर लेता था वैसे ही मुझे उसके बोझ का अनुभव होने लगता था। अपनी खीझ के क्षणों में मैं अपने आपसे कहता था कि समस्या का आदर्श हल तो यह है कि जिस व्यक्ति में मुझे दिलचस्पी है उसकी मौत हो जाए। उसकी मृत्यु एक ओर तो हमेशा के लिए हम दोनों के सम्बन्ध पर मोहर लगा देती और दूसरी ओर उसकी निहित बाध्यता को दूर कर देती। पर कोई भी व्यक्ति हर एक की मृत्यु की कामना तो कर नहीं सकता और न ही भूमण्डल को जनशून्य करने की हद तक जा

सकता है—सिर्फ उस स्वातन्त्र्य को भोगने के लिए जो अन्यथा कल्पना तीत है। मेरी संवेदनशीलता इसके विरुद्ध थी और मानव-जाति के लिए मेरी सहृदयता भी।

इन प्रेम-व्यापारों में कभी-कभी जो गहरा संवेग मेरे मन में उठता था वह केवल क्षणिक या होता था। जब सब-कुछ मजे में चल रहा होता और मुझे न केवल शांति मिल जाती वरन जान आने की स्वतन्त्रता भी—किसी एक के साथ इतना उदार मैं कभी नहीं होता था जितना कि तब जब सीधे दूसरी के पलंग से उठकर आया होता मानो मैं एक के प्रति सदा ऋणी होकर अन्य सभी स्त्रियों का भी ऋणी हो गया होऊँ। जो भी हो, प्रकट रूप से मेरे भाव कितने ही उलझे हुए क्यों न रहे हों जिस परिणाम की मैं प्राप्ति करता था वह स्पष्ट था। मैं अपने सारे प्रेम-सम्बन्धों को अपनी पहुँच के भीतर रखता था ताकि जब चाहूँ तब उनका उपभोग कर सकूँ। मैं स्वयं स्वीकार कर चुका हूँ कि मैं सुखी तभी रह सकता था जब कि पृथ्वी के सब प्राणी या जितनी अधिक संख्या में सम्भव हो उतने मेरी ही ओर उन्मुख हों सदा-सर्वदा के लिए बन्धनहीन किसी भी पृथक अस्तित्व से वंचित और किसी भी क्षण मेरे इंगित पर तत्पर—संक्षेप में उस दिन तक के लिए वन्ध्यात्व से अभिशप्त जब तक कि मैं उन पर कृपा-दृष्टि न डालूँ। थोड़े शब्दों में मेरे सुख से जीने के लिए अनिवार्य था कि जो व्यक्ति मेरे कृपापात्र चुने जाएँ वे जियें ही न। उन्हें जीवन की उपलब्धि हो यदा कदा और केवल मेरा इशारा पाकर।

आपको यह सब बताने में मुझे कोई संकोच नहीं होता, आप सच मानिए। जब मैं उस काल की याद करता हूँ जब कि मैं स्वयं कोई मूल्य चुकाए बिना हर चीज की माँग किया करता था जब मैं अपनी सेवा के लिए इतने सारे लोगों को नियोजित करता था जब मैं या कहूँ कि उन्हें रेफ्रिजरेटर में रख देता था ताकि जब भी मेरी मर्जी हो तभी हाथ बढ़ा कर उन्हें निकाल सकूँ तो मैं नहीं जानता कि उस भाव को क्या कहूँ

जो मेरे ऊपर छा जाता है। शायद वह लज्जा का भाव है, क्यों? आप बताएँ मुझे मेरे मित्र, लज्जा क्या चुभती है? तो शायद लज्जा ही है या उन सूक्ष्मतापूर्ण भावनाओं में से कोई है जिसका सम्बन्ध मान-मर्यादा से रहता है। जो भी हो, मुझे लगता है कि जब से अपनी स्मृति के अन्तराल में छिपी उस घटना की मुझे याद हो आई है तब से इस भावना ने मुझे छोड़ा नहीं है—और उस घटना का वर्णन करना अब मैं टाल नहीं सकता। कितना ही क्यों न इधर-उधर बहकता रहूँ या कुछ-न-कुछ गढ़कर सुनाने की चेष्टाएँ करता रहूँ। इसके लिए तो आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे ही।

लीजिए, बारिश रुक गई है। मेरे साथ घर तक चलने की कृपा करें। मैं कुछ अजीब तरह से थका-सा गया हूँ। इतनी देर तक बातें करने की वजह से नहीं, पर इस ख्याल से ही कि अभी मुझे कितना और बताना है। खैर, अपनी असली खोज के बारे में बताने के लिए तो कुछ-एक शब्द ही पर्याप्त होंगे। और बहुत कहने से फायदा ही क्या? प्रतिभा को अनावृत रूप प्रकट होने के लिए आवश्यक है कि अलंकृत भाषा पलायन कर जाए। तो लीजिए। नवम्बर की एक रात को उस शाम के दो-तीन साल पहले, जिस शाम मुझे यह लगा था कि मेरे पीछे कोई हँस रहा है, मैं पों रोयाल होता हुआ बाएँ किनारे अपने घर लौट रहा था। आधी रात से एक घंटा और ज्यादा बीत चुका था। बड़ी हल्की फुहार पड़ रही थी जिससे सड़कों पर के इक्के-दुक्के लोग भी तितर-बितर हो गए थे। मैं सीधे अपनी एक प्रेमिका को छोड़कर आ रहा था, वह तब तक शायद नींद में डूब चुकी होगी। मुझे उस समय का चलना अच्छा लग रहा था, कुछ निर्वेद की स्थिति में मेरा शरीर अनुद्विग्न गिरती हुई फुहार के जल रक्त प्रवाह से सिंचित। पुल पर मैं किसी के पीछे से गुज़रा। वह छाया रेलिंग के ऊपर झुकी नदी को एकटक देखती हुई-सी लगी। पास से देखने पर मैं काले कपड़े पहने एक युवती के आकार का अनुमान कर सका। उसके बालों और कोट के कॉलर के बीच गरदन का पिछला हिस्सा दीखता था भीगा हुआ और ठंडा। उसने मुझे कुछ उत्तेजित किया, पर एक क्षण

टिम्बन के बाद में आगे बढ़ गया। पुन पार करके मैं घाट के किनारे किनारे मा मिशेन की तरफ चलने लगा, जहाँ मैं रहता था। मैं कोई पचास गज ही आगे गया था जब वह आवाज मुझे सुनायी पड़ी, जो दूरी के बावजूद आधी रात के सन्नाटे म बड़ जोर की मालूम हुई—किसी शरीर के पानी पर आघात की आवाज। मैं ठिठक गया पर घूमा नहीं। उसी क्षण मैंने एक पुकार सुनी जो कई बार दोहरायी गई, जिसे प्रवाह की आर जाती हुई फिर अचानक मूक हो गई। जो चुप्पी उसके बाद फली जब रात सहसा स्तब्ध हो गई मुझ लगा कि जसे अन्तहीन है। मैं चाहता था कि दौड़ पड़ूँ पर इच भर भी बढ़ नहीं सका। मैं काँप रहा था मेरा विश्वास है कि ठड और घटना के आघात से मैं अपने आपसे कह रहा था कि जल्दी करनी है। पर एक बलवती दुबलता अपने शरीर म फलती हुई मालूम पड़ी। मुझे याद नहीं है कि मैंने उस समय क्या सोचा दर बहुत हो गई दूरी बहुत है या इसी तरह का कुछ। निष्क्रिय खड़ा मैं तो भी कान लगाए सुन रहा था। फिर धीरे धीरे बरसते पानी म मैं आगे बढ़ गया। मैंने किसी को बताया नहीं।

अरे, हम लोग आ पहुँचे! यही मेरा घर है मेरा आश्रय। कल? हाँ जरूर, अगर आप चाहते हैं तो मैं आपको मार्केन के द्वीप ले जाना चाहूँगा ताकि आप जवाइडरजी देख सकें। तो हम लोग कल ग्यारह बजे मेक्सिको सिटी में मिलें। क्या? वह औरत! मुझे मालूम नहीं। सच मुझे नहीं मालूम। अगले रोज और उसके कई रोज बाद तक मैंने अख बार नहीं पढ़े।

कितनी सकुल गुड़िया का गाँव है है न? यहाँ अनोखापन की कोई कमी नहीं है। पर मेरे दोस्त मैं आपको इस द्वीप म मनोरंजन दिखाने नहीं लाया हूँ। किसानी टोपियाँ लकड़ी के जूते और गज सजाए मकान जिनके सामने मछुआ, तम्बाकू-कोलतार की गंध मे

घिर गए, उत्तम तमाकू न रह हो वह तो आपको कहीं भी दिखा सकता था। पर मैं इन पहाड़ों के भागों में हूँ जो आपको वे चीजें दिखा सकते हैं जो वास्तव में महत्त्व रखती हैं।

अब हम चोटी पर पहुँचने वाले हैं। उसी के किनारे-किनारे हमको चलना पड़ेगा ताकि इन अनिश्चय मनोहर मकानों से दूर पहुँच सकें। आइए, हम बैठ जाएं। कहिए, क्या राय है आपकी? क्यों क्या नहीं है यह एक सुन्दरतम, निर्जीव दृश्य? उधर दक्षिण जरा, राह के उस टेर का चिह्न है साग बालू का टीला कहते हैं बाद तरफ छितरी बाँध है हमारे पैरों के नीचे नीलाभ धूमिल समुद्र-तट और हमारे सामने है समुद्र जिसका पानी हल्की राख मिश्रित द्रव के समान दीख पड़ता है और उसके ऊपर विस्तृत आकाश जिसमें पानी का फीका सा प्रतिबिम्बित हो रहा है—सचमुच गीला, पसरा हुआ नरक! हर चीज लेटी, पड़ी हुई, कहीं कोई दृश्यान्तर नहीं अनन्त निवास है और नावश निस्तार। क्या यह विश्व-व्यापी विलुप्ति नहीं, एक अनन्त शून्य जो प्रत्यक्ष हो उठा हो! कहीं कोई मनुष्य नहीं! सबसे बड़ी बात कि कहीं कोई मनुष्य नहीं। आप और मैं सबसे द्वारा परित्यक्त इस लोक के एकाकी दावा! आकाश जीवन्त है क्या? आप ठीक कहते हैं, मेरे मित्र! वह लहराता है मनोहर होता है वायु के नीचे लोटता है और मेघ कपाट बंद करता है। वह कहता है! आपने कभी ध्यान दिया है कि टापिन्ट नामों कपोतों से भरा रहता है? अपनी ऊँचाई के कारण अदृश्य वे अपने पर फड़फड़ाते हैं एक साथ उठते गिरते हैं और इन्द्र धनुष्य अन्तराल का सिन्दूरी रंग के पर्णों का घना रंग से भर देते हैं—जिन्हें हवा इधर-उधर उड़ाती रहती है। ये कपोत वहीं ऊपर वध-पर्यन्त प्रतीक्षा करते हैं। पृथ्वी पर का चक्कर काटते हैं नीचे दृष्टि डालते हैं और उतरना चाहते हैं पर नीचे समुद्र और नहरों के अतिरिक्त कुछ नहीं है, दुकानों के साइनबोर्डों से ढका घर हैं पर पाँव रखने योग्य एक भी शिखर कहीं नहीं।

आपकी समझ म नहा आया कि मेरा मतलब क्या है ? मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं थक गया हूँ । मेरी बात का तार टूट जाया करता है , मरे मित्रा का मरे विचारा की जिस स्पष्टता का आदर करना रुचिकर लगता था वह मैंने गवा दी है । मैं कह रहा हूँ 'मरे मित्र , पर यह केवल सिद्धान्त और अभ्यास की बात है। अब मरे कोई मित्र नहा हैं मर अब केवल साझीदार हैं । कमी पूरी करने के लिए सख्या बढ़ गई है, व सब समस्त मानव-जाति तक विस्तृत है। और मानव-जाति म सबसे पहल हैं आप । जा भी अपन पास हा वही सवप्रथम हा जाता है। कैसे मालूम मुझे कि मेरे काई मित्र नहीं हैं ? बहुत आसान है । मुझे यह उस दिन पता चला जिस दिन मैंने उन्हें बेवकूफ बनाने के लिए या कहूँ कि सजा देने के लिए अपनी आत्महत्या करने का विचार किया था। पर सजा किसे ? कुछ एक को आश्चय हाता, पर दण्डित ता काई भी अनुभव न करता । मैंने तब जाना कि मरे कोई मित्र नहीं है । और अगर हात भी ता मेरी स्थिति कुछ बहतर न हाती । अगर मैं आत्महत्या करने के बाद उनकी प्रतिक्रिया देख पाता तब काई बात भी हाती । पर मरे प्यारे दास्त पृथ्वी अधकारमय है, ताबूत मोटा है और कफन अपारदर्शी है। आत्मा की आँखें ? हाँ यदि आत्मा है और उसक आँख होती हैं पर हम जानत ता नहीं और न जान हा सकते हैं । नहा ता समस्या का काई हल होता , कम-स-कम आदमी स्वय का गभीरता से ग्रहण करवा पाता कि लोग उसका बातो को गम्भीरता स ग्रहण कर । लोग आपके तर्क का कभी स्वीकार नहीं करत न आपकी सचाई को न आपकी वेदना की गम्भीरता का—जब तक नहीं जब तक कि आपकी मृत्यु न हा जाए । जब तक आप जीवित हैं आपका मामला सन्दिग्ध है आपका अधिकार है केवल उनका सन्देह मिश्रित विश्वास पाने का । इसलिए अगर जरा भी इसका निश्चय होता कि आदमी खुद अपनी मौत के नाटक का रस ले सकेगा ता यह बात करने योग्य होता कि वह उनके सामने उन तथ्यों का प्रमाणित करे जिन पर विश्वास करने का वे तयार नहीं हैं—और इस प्रकार

उन्हें अचम्भे में डाल द। पर आपने तो कर ली अपनी हत्या उसके बाद इसमें रस ही क्या रह गया कि वे आपकी बात पर विश्वास करते हैं या नहीं ? आप तो मौजूद होंगे नहीं जो उनका अचम्भा और सतोष (बहुत हुआ तो भी क्षणिक) देख सकें, अपनी अन्त्येष्टि-क्रिया के साक्षी हो उर्वे—जैसा हर पागल का स्वप्न हर व्यक्ति देखता है। मदिग्ध न बने रहने का केवल एक उपाय है कि आदमी बना ही न रहे।

क्या यही बेहतर नहीं है ? एक लड़के ने अपने बाप से कहा, 'आपको इसका मूल्य चुकाना पड़ेगा। बाप ने उसे कुछ जरूरत से ज्यादा मुस्तद चाहने वाले से शादी करने से रोका था। लड़की ने आत्महत्या कर ली। लेकिन बाप को किसी चीज का मूल्य नहीं चुकाना पड़ा। उसे छोटी मछलियों के शिकार का शौक था। तीन इतवार बाद जान के बाद वह फिर नदी-किनारे पहुँच गया—जाना उसने कहा, 'सब-कुछ भुला देने के लिए'। ठीक ही कहा उसने, वह भूल गया। सच बात तो यह है कि इसके विपरीत होता तो आश्चर्य होता। आप सोचते हैं कि आप अपनी बीवी को दण्ड देने के लिए मर रहे हैं, पर सच तो यह है कि आप उसे मुक्ति दे रहे हैं। पर इस बात को न देख पाना ही श्रेयस्कर है। मौत के बाद यदि आप सुन पाते तो सिवा इसके कि आपके कृत्य के क्या प्रेरक कारण दिये जाते हैं और क्या सुनते ? जहाँ तक मेरा प्रश्न है मुझे तो अभी ही उनकी आवाजें सुनायी पड़ रही हैं—'उसने आत्म-हत्या कर ली क्योंकि वह यह सहन न कर पाया कि ... आह मेरे मित्र मनुष्य की कल्पना-शक्ति कितनी दुर्बल होती है! वे हमेशा यही समझते हैं कि आदमी किसी एक ही कारणवश आत्महत्या करता है पर किन्हीं दो कारणों के वश होकर भी तो आत्महत्या करना सम्भव है। किन्तु नहीं, यह उन्हें कभी नहीं सूझता। तो फिर जान-बूझकर करने में क्या धरा है—उस बात पर अपना बलि चढ़ाने में जो आप चाहते हैं कि लोग आपके बारे में सोचें ! जब आप मर ही गए तो वे इसका लाभ उठाकर कोई बेहूदा या भद्दा कारण आपके कृत्य के लिए ढूँढ लेंगे। शहीदों को

मर दोस्त, भुला दिए जाने, हमें जाने और इस्तेमाल किए जाने के बीच चुनाव करना पड़ता है। रहा इसकी बात कि लोग उन्हें ठीक समझें सब—सो कभी नहीं होता।

पर हम लोग बेकार इधर उधर न बहकें। मुझे जीवन प्यारा है यही मेरी असली कमजोरी है। मुझे जीवन इतना ज्यादा प्यारा है कि मैं इसकी कल्पना करने में असमर्थ हूँ कि वह क्या है जो जीवन नहीं है। आप नहीं समझते कि इतनी लिप्सा में कुछ गँवारपन है? आभिजात्य यह कल्पना नहीं कर सकता कि उसका और उसके जीवन का पर हुए एक अन्तराय नहीं है। अगर जरूरत पड़े तो वह मर मिटता है, वह झुकता नहीं टूट जाता है। पर मैं झुकता हूँ, क्योंकि मैं अब भी अपने से प्रेम करता हूँ। मिसाल के लिए मैंने जो कुछ आपको बताया उसके बाद आप क्या समझते हैं कि मेरे अन्तर में किस भाव का विकास हुआ? अपने प्रति जुगुप्सा का? जी नहीं, जो कुछ क्षोभ मुझे था वह ज्यादातर दूसरों के प्रति ही था। सच है कि मैं अपनी कमजोरियाँ जानता था और उनके लिए अफसोस भी करता था। तो भी मैं एक कमाल की जिद के साथ उन्हें भुलाता ही रहा। इसके विपरीत दूसरों पर अभियोग लगाने की प्रवृत्ति मेरे मन में निरन्तर क्रियाशील रही। बिलकुल क्या आपको बुरा लगा? शायद आप यह सोचने लगे कि यह तर्कसंगत नहीं है? पर सवाल तर्कसंगत रहने का तो है नहीं। सवाल तो बच निकलने का है और इससे भी ज्यादा—हाँ इससे भी ज्यादा—इसका कि निर्णय से कैसे बचा जाए। मैं दण्ड से बचने की बात नहीं कहता, क्योंकि बिना निर्णय के दण्ड तो सह्य है। उसका एक नाम है जो हमारी निर्दोषिता का आश्वासन कर देता है—उसे कहते हैं दुर्भाग्य। नहीं उसके विपरीत यह तो निर्णय से बचे-बचे रहने का प्रश्न है—उस स्थिति से बच रहने का जिसमें निरन्तर निर्णय तो होता रहता है पर दण्ड की कभी घोषणा नहीं की जाती।

पर इतनी आसानी से बचा नहीं जा सकता। आज तो हम निर्णय

करने के लिए उतने ही तत्पर रहते हैं जितना कि व्यभिचार करने के लिए। केवल अन्तर इतना है कि इसमें अग्राम्य या अपमान्य होने का कोई डर नहीं है। अगर आपको कोई सन्देह हो तो अगस्त के महीने में उन ग्रीष्मकालीन होटलों में, जहाँ हमारे दानवार सह-नागरिक अपनी ऊब दूर करने के लिए पहुँचते हैं मेजों पर बैठे लोगों की बातचीत जा कर सुन लीजिए। अगर फिर भी आप किसी निश्चय पर पहुँचने में संकोच करें तो हमारे आज के नरपुंगवों के लेखन का पाठ कर लीजिए। नहीं तो अपने परिवार का ही अध्ययन कर लीजिए, दो-एक पाठ आप अवश्य सीख जाएँगे। मेरे प्यारे दोस्त, हम उन्हें कोई भी बहाना—चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो—अपने पर फबती देने का न दें। नहीं तो हमारी धज्जियाँ उड़ाकर रख दी जाएँगी। हम लाचार होकर वही सावधानी बरतनी होगी जो जानवर को काबू में करने वाले को बरतनी पड़ती है। अगर कटघरे के अन्दर जाने के पहले हजामत बनाते वक्त दुर्भाग्य से वहीं उस्तरे से चेहरा कट जाए तो सोचिए ज़रा पशुओं की क्या बन आएगी! मुझे यह चीज़ उस दिन अकस्मात समझ में आ गई जिस दिन मुझे यह लगने लगा कि शायद मैं तारीफ के काबिल नहीं हूँ। तब से मैं सशंक रहने लगा। चूँकि मेरे थोड़ा-सा खून बह रहा था, मेरे लिए कोई छुटकारा नहीं था, वे मुझे खा जाते।

अपने समकालीनों से मेरे सम्बन्ध देखने में तो ज्यों-के-त्यों थे पर लय कहीं ज़रा-सा टूट गई थी। मेरे मित्रों में कोई अन्तर नहीं हुआ था। कभी-कभी वे अब भी मेरी संगत में मिलने वाली समन्विति और सुरक्षा की सराहना कर लेते थे। पर मुझे केवल अपने अन्दर में भरी बेसुरता और अस्त-व्यस्तता का ही भान होता था। मुझे लगता था कि मैं भेद्य हो गया हूँ मानो मुझे सर्वसाधारण द्वारा अभियोग लगाए जाने के लिए सौंप दिया गया हो। मेरी दृष्टि में मेरे साथी वह आदर से भरी जनता नहीं रह गए थे जिसका मैं आदी था। वह वृत्त जिसका मैं केन्द्र था, छिन्न-भिन्न हो गया था और वे सब मानो एक पंक्ति बनाकर न्यायासन

पर बढ गए थ। तभी ही यह बात मरी पकड म आई कि मुझम ऐसा कुछ है जिस पर निणय दिया जा सकता है तभी यह भी मैं समझ गया कि असल म निणय दन का क्रिया उनका अनिवाय धम है। व थ ता वहा पहल का तरह ही, पर अब व हँस रह थ। या यों कहूँ कि मैं उनम स जिनका स मिलता था मुझ लगता था कि हर एक हँसी छिपाए मुझ दख रहा है। उस समय मुझ यह भी लगा था कि लोग मुझे लगी मारन की कोशिश म हैं। दो-तीन बार सावजनिक भवना म प्रवेश करते समय मैं सचमुच गिरत गिरत बचा। एक बार तो मैं चारा खाने चित गिरा भी। मरे अन्दर जो इसाई का अनुयायी फ्रांसीसी था उस अपने को सभाल न म दर नहीं लगी न उन दुघटनाओं के लिए एकमात्र युक्ति-सगत दैवी शक्ति अर्थात सयोग का उत्तरदायी ठहरान म। तो भी मर मन म शका बनी ही रही।

एक बार जब मरा ध्यान आकर्षित हो ही गया तब मुझ यह पता लगात दर न लगी कि मरे दुश्मन भी हैं पहल तो मेरे व्यवसाय म और फिर मरे सामाजिक जीवन म भी। उनम से कुछ पर मैंन कृपा की थी कुछ पर करनी चाहिए थी। वह सब तो स्वाभाविक ही था और यह सब जानकर मुझे कोई बहुत दुःख भी नहीं हुआ। पर दूसरी तरफ यह स्वीकार करना ज्यादा कठिन और कष्टदायक था कि जिन लोगों को मैं नाम-मात्र के लिए जानता था या जानता ही न था, उनम भी मेरे दुश्मन थ। मैं हमशा यही समझता रहा था उस सरलता क साथ जिसका उदाहरण मैं आपको द चुका हूँ कि जो मुझ जानत नहीं थे वे मुझ जानने पर पसन्द किय बिना रह नहीं सकत थ। पर ऐसा भी नहीं। मुझ विशेष विरोध तो उन्हीं लोगों स मिला जो बिना मरे स्वय उन्ह जान हुए दूर स मुझ जानत थ। निसन्देह उन्ह शका थी कि मरा जीवन भरा-पूरा है और पूरी तरह सुख क प्रति समर्पित है और यह अपराध अक्षम्य था। सफलता क भाव जब एक खास तरीक स प्रदर्शित किय जाएँ तो गधा भी क्रोध स तिलमिला उठगा।

इसके अलावा मेरा जीवन आवेष्ठ सा हुआ था। इसलिए समय के अभाव के कारण मैं दूसरों की समीप आने की चेष्टाओं को अमान्य कर दिया करता था। और बाद में अपनी अस्वीकृतियों को इसी कारण भूल जाया करता था। पर समीप आने की वे चेष्टाएं उन लोगों द्वारा की गई होती थीं जिनके जीवन भरपूर नहीं थे और जो इसी कारण मेरी अस्वीकृति को याद रखते थे।

इसीलिए ऐसा हुआ कि एक ही उदाहरण ले लें, और अन्त में मेरे लिए बहुत महंगी पड़ी। जिस समय मैं उन्हें अपमानित करता था वह पुरुषों को नहीं देख पाता था और पुरुष हर बार इसे क्षमा नहीं करते थे। इसमें क्या कोई रास्ता है? आपकी सफलताएं और सुख तभी क्षम्य होंगे जब आप उदारता से उनमें हिस्सा बंटाने के लिए तैयार हों। पर सुखी होने के लिए अनिवार्य है कि आदमी दूसरों के साथ ज्यादा फंसा न रहे। फलतः कोई रास्ता है ही नहीं। सुखी और निर्णीत अथवा विभाजित और दयनीय! और मेरे प्रति तो अन्याय और भी अधिक। मैं अतीत की सफलताओं के लिए अपराधी ठहराया गया था। बहुत दिन तक मैं इस भ्रम में रहा कि सामान्य सहमति मुझे प्राप्त है जब कि चारों ओर से फैसले, व्यंग्य और नीले बाणों की बौछार मेरे ऊपर होने लगी थी और मैं उनकी उपेक्षा करता हुआ मुस्कराता जा रहा था। जिस दिन मुझे सावधान किया गया, मेरे ज्ञान-चक्षु खुले, सारी चोटें एक साथ लगीं और एकदम अपनी सारी शक्ति मैंने खो दी। सारा ब्रह्माण्ड तब मेरे ऊपर हँसने लगा।

और यह वह बात है जो कोई भी व्यक्ति (उन्हें छोड़कर जो वास्तव में जीवित नहीं हैं—दूसरे शब्दों में कहें तो ज्ञानी) सहन नहीं कर सकता। परिणाम सम्भव प्रदर्शन विद्वेष का होता है। लोग इसलिए दंड के लिए उतावले इसलिए रहते हैं कि कहीं उन्हें स्वयं भी फैसला न सुनना पड़ जाए। क्या सोचते हैं आप? आदमी के मन में जो विचार बिलकुल स्वाभाविक ढंग से उठता है मानो उसकी सहज प्रकृति से ही उठा हो,

वह है उसके अपने निर्दोष होने का भाव। इस दृष्टि से हम सब वृद्ध काल्के के उस फ्रांसीसी की तरह हैं जो इस बात की ज़िद कर रहा था कि कलक के पास अपनी शिकायत जरूर लिखाएगा। क्लर्क स्वयं भी कैदी था। वह इस फ्रांसीसी के आगमन का रिकार्ड भर रहा था। शिकायत ? क्लर्क और उसके साथी हँसे— क्या है भाई यहाँ शिकायत कोई नहीं लिखाया करता।' पर श्रीमान वह फ्रांसीसी तना, मेरी बात ही और है। मैं निर्दोष हूँ।

हममें से हर एक की 'बात ही और' होती है। हम सब किसी न किसी के विरुद्ध अपील करना चाहते हैं। हममें से हर एक किसी भी मूल्य पर निर्दोष बना रहना चाहता है चाहे हम सारी मानव-जाति और देव-लोक पर भी दोषारोपण क्यों न करना पड़ जाए। आप किसी व्यक्ति को उसकी बुद्धिमत्ता या उदारता की सराहना से प्रसन्न न कर पाएँगे। पर अगर आप उसकी स्वभावजन्य उदारता की प्रशंसा करें तो उसकी बाछें खिल उठेंगी। उसके विपरीत अगर आप किसी अपराधी से कहें कि उसके अपराध का कारण उसका स्वभाव अथवा चरित्र की प्रवृत्ति नहीं बल्कि परिस्थितियाँ हैं तो वह आपका बहुत ही आभार मानेगा। अपने वकील के भाषण में यही वह स्थल होगा जहाँ वह आँसू बहाने की सोचेगा। लेकिन जन्म से ईमानदार या बुद्धिमान होने में श्रेय कोई नहीं है, और वैसे ही परिस्थितियों से विवश होकर या स्वभाव से अपराधी बनने में व्यक्ति के दायित्व में कोई विशेष अन्तर नहीं है। पर इन बदमाशों को तो चाहिए छूट, यानी अनुत्तरदायित्व, और वे बेशर्मी से स्वभाव अथवा परिस्थितियों की विवशता की आड़ लेते हैं चाहे ये परस्पर विरोधी हों क्यों न हों। जरूरी तो यह है कि वे निर्दोष रहें और उनके सद्गुणों पर जन्मजात होने के नाते सन्देह न किया जाए और उनके पाप-कर्म की प्रवृत्ति दुर्भाग्यजन्य होने के कारण अस्थायी से अधिक कभी न मानी जाए। जैसा मैंने कहा प्रश्न तो निर्णय से बचे रहने का है। चूँकि बचे रहना मुश्किल है और अपने स्वभाव की एक ही साथ स्तुति कराना

श्रौर उस क्षेत्रान्य स्तर पर रहना कष्ट-साध्य है इसलिए वे सब धनवान बनने की चेष्टा करते हैं। क्या ' आपने कभी अपने आपसे यह पूछा है? शक्ति प्राप्त करने के लिए, और नहीं तो क्या? पर खास तौर से इसलिए कि समृद्धि तात्कालिक निर्णय पाने के विरुद्ध ढाल का काम करती है अडम्प्राज्ञ्य की भीड़ से हटाकर आपको शानदार मोटर कार के भीतर पहुंचा देता है विमान में रक्षित स्थान 'पुलमन' वर्ग और फ्रन्ट-क्लास केबिनों में ले जाकर आपको औरों से पृथक् कर देती है। समृद्धि मेरे दाम्न, एकदम छुटकारा तो नहीं है पर दण्ड-स्थगन अवश्य है और इसलिए निश्चय ही ग्राह्य है।

अपने मित्रों पर उस समय कभी विश्वास न कीजिए जब वे आपसे अपने प्रति सच्चे व्यवहार का आग्रह करें। वे केवल इसकी आशा करते हैं कि उनको अपने बारे में जो अच्छी राय है उसे आपकी सच्ची मित्रता की प्रतिज्ञा द्वारा एक और आश्वासन पाकर प्रोत्साहन मिलेगा। मित्रता का आधार सच्चा व्यवहार कम हो सकता है ' कितनी भी दामाचार का आग्रह एक ऐसा भावावेग है जो न जरा भी छूट देता है और न जिसका बाद प्रवराध करता है। वह एक अवगुण है जो कभी-कभी ही सान्त्वनाप्रद होता है या या कहें कि एक स्वाद है। इसलिए अगर आप उस स्थिति में हों तो सचाई न करिए वादा करिए सच बोलने का, और जितने बढ़िया तरीके से हो सके नाटक बोलते जाइए। आप उनकी छिपी हुई इच्छाओं का तुष्ट करेंगे और अपने प्रेम का दूना प्रमाण दे सकेंगे।

यह बात इतनी सच है कि हम उन लोगों से अपने मन की बात कम ही कहते हैं जो हमसे बढ़कर हैं बल्कि हम उनकी संगत से दूर-दूर भागते हैं। अधिकतर हम उनसे अपने मन की बात कहते हैं जो हमारी ही तरह हैं और जो हमारी दुर्बलताओं के साझीदार हैं। अतः हम अपनी उन्नति करना या कराना नहीं चाहते क्योंकि इस चेष्टा में भी यह निहित होगा कि अगर न कर सके तो असफलता पर हम निर्णयात्मक बनना

पडेगा। हम तो केवल चाहते हैं कि जो राह हमने चुनी है उसी पर हम सहानुभूति प्राप्त होती रहे और हमारा उत्साहवर्धन किया जाता रहे। संक्षेप में हम चाहते हैं कि एक ही साथ हम दोषी भी रहें और हमें अपने को पवित्र बनाने की चेष्टा भी न करनी पड़े। न तो हम पापी रानवों ही हैं न काफी पुण्यवान। न तो हममें दुष्कर्म करने की अपेक्षित शक्ति है और न सत्कार्य करने की। आप दाँते से परिचित हैं? सचमुच? अरे वाह! मैंने कभी न सोचा था। तब तो आपको मालूम होगा कि दाँते ने ईश्वर और शैतान की लड़ाई में निष्पक्ष स्वदूतों का अस्तित्व स्वीकार किया है और उन्हें वह निम्बो में स्थापित करता है जो उसके नरक के दालान की तरह है। हम उसी दालान में हैं, मेरे प्यारे दोस्त!

धीरज? आप शायद ठीक कहते हैं। कयामत का इन्तजार करने के लिए धीरज ही अपेक्षित है। पर बात तो यह है कि हम जल्दी में हैं—इतनी जल्दी में कि मुझे अपने आपको अनुतापी निर्णायक बनाना ही पड़ा। पर पहले मुझे अपनी नयी खोजों के साथ किसी प्रकार काम चलाना पड़ा और अपने समकालीनों की हँसी के साथ अपना तालमेल बिठाना पड़ा। उस शाम के बाद जब मुझे पुकारा गया था—क्योंकि वास्तव में मुझे पुकारा गया था—मुझे उत्तर देना था, या कम-से-कम उत्तर खोजना तो था ही। यह आसान नहीं था और कुछ समय तक मैं लड़खड़ाता रहा। पहले तो उस अनवरत हँसी और हँसने वालों के द्वारा मुझे यह शिक्षा मिलती थी कि मैं अपने अन्तर में स्पष्ट देख सकूँ जिससे अन्तत यह समझ जाऊँ कि मैं सरल-व्यक्तित्व नहीं हूँ। मुस्कराइए नहीं, वह सत्य इतना सारभूत नहीं है जितना दीखता है। जिन्हें हम सारभूत सत्य कहते हैं वे और कोई नहीं सिर्फ वे ही हैं जिनका पता हम औरों के बाद लगाते हैं।

जो भी हो, अपने बारे में लम्बी खोज-बीन करने के बाद मैंने मनुष्य की मौलिक द्विविधता का पता लगाया। तब अपनी स्मृतियों को खोदने के परिणामस्वरूप मैं समझा कि विनयशीलता ने मुझे चमकने में सहायता की, नम्रता ने विजय पाने में और सद्गुणों ने अत्याचार करने में।

मैं शान्तिपूर्ण साधना से युद्ध करता था और अन्त में निर्लिप्तता की विधियों में जो चाहता था प्राप्त कर लेता था। उदाहरण के लिए अपने जन्मदिन के उपेक्षित होने की मैंने कभी शिकायत नहीं की इस विषय पर मेरी बुद्धिमानी से लोगों को आश्चर्य होता था—कुछ आदर मिश्रित भाव के साथ। पर मेरी निर्लिप्तता के कारणों में तो और भी अधिक बुद्धिमानी थी, मेरी तीव्र उत्कण्ठा थी कि लोग मुझे भूल जाएँ ताकि मुझे शिकायत का अवसर मिले। उस विख्यात तिथि के (जिसे मैं अच्छी जानता था) कई दिन पहले से मैं चौकन्ना रहता था, ध्यान से देखता था कि कोई ऐसी बात न हो जिससे उन लोगों को, जिनका भूल के अवसर मैं बैठा था, स्मृति जाग उठे। मैंने क्या एक बार यह तक नहीं सोचा कि अपने मित्र के कलेण्डर की तारीख गलत कर दूँ? एक बार मेरा अकेलापन पूरी तरह प्रमाणित हो जाता तो मैं शक्तिशाली आत्म करुणा के प्रति आत्म-समर्पण कर देता।

इस प्रकार मेरे समस्त सद्गुणों का पृष्ठभाग इतना भव्य न था। यह सच है कि एक और तरह से मेरी कमियाँ मेरे लिए लाभदायक सिद्ध हुई। अपने जीवन के दूषित अंशों को छिपाने की जो बाध्यता मैं अनुभव करता था उसने मेरी आकृति पर एक निर्वेद की मुद्रा ला दी थी, जिसे लोग सदाचारिता की मुद्रा समझने की भूल कर बैठते थे। मेरी उदासीनता मेरे प्रति प्रेम जगाती थी मेरी स्वार्थपरता की चरम परिणति मेरी उदारताएँ थी। यहीं मैं रुकूँगा नहीं तो अतिशय साम्य मेरे तर्क को गड़बड़ा देगा। पर बात तो यह है कि बाहर से मैं बड़ा कठोर भासता था फिर भी कभी एक प्याला शराब या किसी औरत के आम त्रण को मैं अस्वीकार नहीं कर सका। मैं क्रियाशील और उद्यमशील समझा जाता था और मेरा साम्राज्य था शयनागार। मैं अपनी सचाई का विज्ञापन तो करता था, पर मैं नहीं समझता कि ऐसा कोई भी व्यक्ति है जिससे मैंने प्रेम किया हो और जिसे अन्त में धोखा न दिया हो। पर इसमें सन्देह नहीं कि मेरे विश्वासघात मेरी सचाई में बाधक

नहा यने। अकर्मण्यता की असीम अवधियों में मैं काफी काम निपटा लिया करता था, और मैंने पड़ोसी की सहायता करना कभी नहीं छोड़ा, मुझे उसमें सुख जो मिलता था, इसी कारण। पर इन तथ्यों को मैं कितनी ही बार अपने से क्यों न दुहराता रहा होऊँ, मुझे उनसे केवल सतही सान्त्वना भर मिलती थी। किन्हीं किन्हीं दिनों मैं अपने विरुद्ध अभियोग भली भाँति तैयार करके इस परिणाम पर पहुँचता था कि मेरा प्रधान दोष रहा है तिरस्कार करना। वे ही लोग जिनकी मैं सबसे ज्यादा सहायता करता सबसे ज्यादा तिरस्कृत भी थे। मानो मैं शिष्टतापूर्ण संवेगरहित दृढ़ता के साथ, प्रतिदिन सबों के मुँह पर थूकता रहा होऊँ।

मुझे साफ-साफ बताइए क्या इसके लिए कोई समुचित कारण हो सकता है? है तो एक पर वह इतना वाहियात है कि उसे पेश करने की कल्पना भी नहीं कर सकता। खैर जो भी हो लीजिए बताता हूँ— मैं कभी इस बात पर विश्वास नहीं कर सका कि मानव-व्यापार कोई गम्भीर विषय है। यह मैं बिलकुल नहीं जानता था कि गम्भीरता यदि है तो किसमें, जानता केवल इतना ही था कि अपने चारों ओर जो मैं देखता था उसमें तो नहीं ही थी—वह मुझे दिखावा-सा लगता था, मनोरंजक या उबाने वाला। सचमुच ऐसे बहुत से प्रयास हैं, बहुत से विश्वास हैं जिन्हें मैं कभी नहीं समझ पाया हूँ। मैं उन विचित्र जीवों को अचम्भे से और सन्देह से देखता था जो रुपए के लिए जान देते थे या किसी पद या प्रतिष्ठा के खो जाने से घोर नैराश्य में डूब जाते थे, या अपने परिवार की सम्पन्नता के हेतु बड़े ही शोर शराबे के साथ आत्म बलिदान करते थे। मैं उस मित्र को ज्यादा अच्छी तरह समझ पाता था जिसने एक बार सिगरेट न पीने का निश्चय किया और मात्र इस निश्चय के कारण सफल भी हुआ। एक दिन सुबह उसने अखबार खोला, पढ़ा कि पहले उद्जन-बम का विस्फोट हो गया है, उसके चमत्कारी प्रभावों के बारे में जाना-समझा और फिर भागता हुआ तम्बाकू की दुकान की तरफ बढ़ा।

यह सच है कि कभी-कभी मैं जीवन के प्रति गम्भीर बनने का बहाना किया करता था, पर शीघ्र ही मुझे गाम्भीर्य की निरर्थकता का ध्यान हो आता था और मैं केवल यथाशक्य अपना पार्ट अदा करता रहता था। मैं पार्ट अदा करता था काम-कुशल होने का, बुद्धिमान होने का सदाचारी होने का, अच्छा नागरिक होने का, सम्माहृत होने का, क्षमाशील होने का, दायित्व-परायण होने का, मनीषी होने का—संक्षेप में, इन सब की तो कोई आवश्यकता नहीं है, यह तो आपकी समझ में आ ही गया होगा कि मैं अपने उन हाउडन्वानिया की तरह था जो वहां होते हुए भी नहीं हैं। अपने अधिकतम विस्तार के क्षणों में मैं सर्वथा अनुपस्थित रहता था। मैं कभी भी बहुत गम्भीर या उत्साही नहीं रहा हूँ, केवल खेल में भाग लेते समय को छोड़कर, और उस समय को छोड़कर जब मैं फौज में था और अपने ही मनोरंजन के लिए किए गए नाटकों में भाग लेता था। दोनों में ही खेल के नियम थे जो गम्भीर नहीं थे, पर जिनके प्रति गम्भीर रहने में हम रस लेते थे। अभी भी रविवार के खेलों के वक्त खचाखच भरे हुए स्टेडियम में और नाट्यशाला में—जिसके प्रति मेरा अप्रतिम अनुराग है—संसार में ये दो ही स्थान ऐसे हैं जहाँ मैं निर्दोष अनुभव करता हूँ।

पर कौन इस प्रकार के दृष्टिकोण को उचित मानेगा, प्रेम, मरण और अकिंचनता-जैसे विषयों के समक्ष? पर इनके बारे में किया ही क्या जा सकता है? मैं स्त्रियों के प्रेम की कल्पना स्वप्नलोक में अथवा नाटक में ही कर सकता था। कभी-कभी मुझे लगता था कि मृत्यु-शय्या पर पड़े लोग अपने पार्ट को अन्त तक निभा रहे हैं। मेरे बजाय मुवक्किल जो कुछ बोलते थे वह मुझे लगता था कि इसी नमूने ने बात रहे हैं। इन लोगों के साथ रहते हुए, बिना उनकी रुचि की वस्तुओं में रस लिए मैं जो काम करता था उन पर मेरी आस्था नहीं हो पाती थी। मैं इतना आलसी भी था और शालीन भी कि अपने व्यवसाय में, परिवार में अथवा नागरिक जीवन में मुझसे जो भी अपेक्षित था वह पूरा कर देता था, पर हर

वार इतनी उदासीनता के साथ कि बात बिगाड़ देता था। मेरा समस्त जीवन दोहरे सिद्धान्तों के अधीन रहा और मेरी गम्भीरतम क्रियाएँ बहुधा वे होती थीं जिनमें मेरा न्यूनतम लगाव रहता था। मेरी सारी भूलों के ऊपर क्या यही वह बात नहीं थी जिसके लिए मैं अपने को क्षमा नहीं कर सका, जिसने मुझमें उस निर्णय के विरुद्ध तीव्र विद्रोह की प्रेरणा दी जिस निर्णय को मैं अपने अन्तस् में और परिवेश में मूर्त होता हुआ अनुभव कर रहा था, और जिसने मुझे पलायन करने के लिए बाध्य किया।

कुछ दिन तक तो देखने में मेरा जीवन वैसा ही चलता रहा जैसे इसमें कोई परिवर्तन न आया हो। मैं जैसे रेल की पटरी पर आगे दौड़ता ही चला जा रहा था। लोगों की प्रशंसाओं में वृद्धि होती गई—मानो किसी उद्देश्य से। और वहीं से विपत्ति का आरम्भ हुआ। आपको वह उक्ति याद है— 'दुर्भाग्य होगा तुम्हारा जब सब तुम्हारी प्रशंसा करने लगें?' आह, जिसने यह कहा था उसने कितनी बुद्धिमानी की बात कही थी। दुर्भाग्य मेरा! परिणामतः इंजन मनमानी करने लगा और उसमें अजीब अजीब खराबियाँ पैदा होने लगीं।

उसी समय मेरे दैनन्दिन जीवन में मृत्यु के विचार का विस्फोट हुआ। मैं अपने जीवन का मृत्यु के समय से पृथक् करने वाली अवधि का अनुमान करने लगा। उन लोगों के उदाहरण ढूँढ़ने लगा जो मेरे समवयस्क थे और जिनकी मृत्यु हो चुकी थी। और मुझे इस विचार से यन्त्रणा होने लगी थी कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे अपना काम पूरा करने का समय न मिले। कौनसा काम? मैं बिलकुल नहीं जानता था। साफ बात तो यह थी कि जो मैं कर रहा था वही क्या करते रहने योग्य था? पर एकदम यही बात नहीं थी। वास्तव में तो एक हास्यास्पद आशंका मेरा पीछा कर रही थी—अपने सारे झूठ स्वीकार किए बिना कोई कैसे मर सकता है? ईश्वर के सामने या उसके किसी प्रतिनिधि के सामने नहीं, इस समय तो मैं ऊपर था जैसा कि आप आसानी से समझ सकते

हूँ। नहीं, बाल मनुष्य के सामने स्वीकार करने की थी किसी मित्र के सामने, किसी प्रेयसी के सामन। नहीं तो अगर जीवन में एक भी झूठ छिपा रह गया तो मृत्यु उस मुन्दरानन्द कर देगी। कभी भी, कभी फिर न जान सकेगा कि उस तथ्य के बारे म सच क्या है क्योंकि जो एक व्यक्ति जानता था, वह वही मत व्यक्ति था जो अपने रहस्य को लिये सो गया था। सत्य की उस पूर्ण हत्या के विचार-मात्र स मेरा सिर चक्कर खाने लगा था पर आज उसके बजाय यह विचार मुझे एक सूक्ष्म सुख ही देता। मैं ही एक अकेला व्यक्ति हूँ जो वह बात जानता हूँ जिसे बाकी सब ढूंढ रहे हैं और मेरे घर म एक ऐसी चीज छिपी है जिसके लिए तीन देशों की पुलिस वृथा भागती फिर रही है यह विचार मुझे परम आनन्द देता है। पर इसमें हम जा न पड़ें। उस समय मुझे यह नुस्खा नहीं मिला था और मैं परेशान था।

बहरहाल, मैंने अपने को सँभाला। पीढ़ी-दर-पीढ़ी के इतिहास म एक व्यक्ति के झूठ का क्या महत्त्व ? और यह भी कितनी धृष्टता थी कि सत्य के पूर्ण प्रकाश में एक छोटी मोटी बदमानी को घनीदार जान की इच्छा हो, जो सदियों के सागर में उसी तरह खो गई थी जैसे समुद्र में बालू का एक कण! मैंने अपने आपको यह कहकर भी समझाया कि शरीर की मृत्यु—जो मौतें मैंने देखी थीं उनके आधार पर कहूँ तो—अपने म ही पर्याप्त दण्ड है और उसमें सम्यक् परिमार्जन हो जाता है। मुक्ति प्राप्त होती है (अर्थात हमेशा के लिए अन्तर्धान होने का अधिकार) अन्य-यातना के स्वर से। फिर भी असन्तोष बना रहा मेरी निष्ठापूर्वक मेरा जान्या के साथ जारी रहो मुबह मैं आँखें खोलता था तो उनके साथ। प्रतिमा की गन्धवती मेरे लिए अधिकाधिक असह्य होती गई। मुझे लगता था कि उसके साथ मेरा असत्य इतने अनाधारण रूप म विशाल होता जा रहा है कि मैं कभी अपने को सँभाल न पाऊँगा।

एक दिन आया जब मेरे लिए सहन करना असम्भव हो गया। मेरी

पहली प्रतिक्रिया अत्यन्त उग्र हुई। क्योंकि मैं असत्यवादी था इसलिए मैं इस बात को प्रकट कर दूंगा और अपनी द्विविधता उन सब मूर्खों के सामने ला पटकूंगा इसके पहले कि वे खुद उसका पता लगा सकें। जब मुझे सत्य के लिए ललकारा गया है तो मैं चुनौती स्वीकार करूँगा। इसके पहले कि लोग मुझ पर हँसना शुरू करें मैंने चारों तरफ से उठते हुए उपहास के बीच अपने को झोंक देने की सोची। वास्तव में तब भी प्रश्न निर्णय से बचने का ही बना रहा। मैं चाहता था कि हँसने वाले मेरी तरफ हो जाएँ या कम-से-कम मैं उनकी तरफ जा मिलूँ। मैंने सोचा एक यही उदाहरण ले लें, कि सड़क पर चलते अन्धों को धक्का देता चलूँ और इस विचार से जो गुप्त, अप्रत्याशित उल्लास मेरे मन में जगा उससे मैंने जाना कि मेरे मन का एक अंश उनसे कितनी ज्यादा घृणा करता रहा था। मैंने पंगुओं की पहियेदार कुर्सियों के पहिये पंचर करने की योजनाएँ बनाईं, जिस मकान पर मजदूर काम कर रहे हों उसके नीचे जाकर "गन्दे प्रोलिटेरियन!" चिल्लाने की बात सोची, अण्डरग्राउण्ड में शिशुओं को चपतियाने का विचार किया। मैंने इन सबके अपने दम पर किया कुछ भी नहीं और अगर इस तरह की कोई चीज की भी हो तो अब सब उसे भूल गया हूँ। जो भी हो 'न्याय' शब्द मात्र से क्रोध का अजीब तूफान मेरे मन में उठ आता था। न्यायालय में अपने भाषण देते समय आवश्यकतावश मैं उसका उपयोग करता रहा, पर इसका बदला मैं निकाल लेता था खुले आम मानवतावादी भावना की निन्दा करके। मैंने घोषणा की कि मैं एक विज्ञप्ति छपाऊँगा, जिसमें शोषितों द्वारा भले लोगों पर किये गए अत्याचारों को खोलकर रख दूँगा। एक दिन जब मैं एक सड़क के किनारे के रेस्तराँ में बैठा मछली खा रहा था और एक भिखमंगे ने मुझे तंग करना शुरू किया तो मैंने रेस्तराँ के मालिक को पुकारकर कहा कि उसे भगा दे और न्याय के उस व्यवस्थापक के इन शब्दों का जोरों से समर्थन किया कि भाई तुम लोगों को क्या परेशान कर रहे हो? उसने कहा, 'अरे जरा, इन

भद्र महिलाओं और सज्जनों की जगह अपने को तो रख के देखो।' और अन्त में मैं उन लोगों में, जो सुनने को तैयार हो जाते, कहता था कि मुझे इसी बात का अफ़सोस है कि अब यह सम्भव नहीं रहा कि उस इसी दर्जीगर की तरह आचरण किया जाए जिसका मैं बहुत आदर करता था। वह अपने उन किसानों का भी कोने लगवाता था जो झुक कर उसे सलाम करते थे और उन्हें भी जो नहीं करते थे, ताकि वह उस दुस्साहस को दण्डित कर सके जिसे वह दोनों दशाओं में समान रूप से घृष्ट समझता था।

लेकिन मुझे अनिरुद्ध के अधिक गम्भीर अवसर भी याद आते हैं। मैंने एक स्तुति का काव्य 'पुलिस के प्रति' और एक 'गिलोटीन वन्दना' लिखना शुरू किया। इनसे भी ज़्यादा—मैं अपने को बाध्य करता था कि नियमित रूप से उन विशिष्ट कैफ़े में जाऊँ जहाँ हमारे व्यावसायिक मानवतावादी स्वतन्त्र विचारक नास्तिक इकट्ठे होते थे। मेरे विगत सदाचरण के कारण मेरा स्वागत तो खूब निश्चित रहता था। वहाँ किन्हीं प्रत्यक्ष प्रयास के मैं कोई निषिद्ध बात हवा में उछाल देता था, जैसे 'ईश्वर को धन्यवाद है' या केवल इतना ही कि 'हे भगवान्!' 'आप तो जानते ही हैं कि हमारे कैफ़े के नास्तिक कितने सकोची बालकों की तरह होते हैं। मर्यादा का उल्लंघन करने वाले इस शब्द के बाद कुछ स्तम्भित क्षण बीत जाते थे और भौचक्के-से वे एक-दूसरे की तरफ़ देखते थे और फिर कोलाहल फूट पड़ता था। कुछ तो कैफ़े छोड़ भाग निकलते थे, कुछ किसी बात पर ध्यान दिए बिना बड़बड़ाते ही जाते थे और सब-के-सब धार्मिक यन्त्रणा से उसी तरह ऐंठने-तड़पने लगते थे जैसे पुनीत जल से शैतान।

आपको यह सब बहुत बचकाना लगता होगा। पर शायद इन छोटे-मोटे मज़ाक़ों के पीछे कोई ज़्यादा गम्भीर कारण रहा हो। सब बिगाड़ देना चाहता था, और सबसे ज़्यादा यह चाहता था कि अपनी नेकनामी को नष्ट कर दूँ जिसके विचार से ही मुझे ज्वार का

गुस्सा आ जाता था। लोग मीठी तरह कहते, 'आप जैसे व्यक्ति—' और मैं जल उठता। मुझे उनका सम्मान नहीं चाहिए था क्योंकि वह सार्वजनिक नहीं था और सार्वजनिक होता भी तो जब मैं ही उसमें भागीदार नहीं बन सकता था? इसीलिए बेहतर था कि सबके निर्णय और सम्मान को उपहास के आवरण से ढक दूं। जो भावना मुझे घोट रही थी, उसे किसी भी मूल्य पर मुक्त करना आवश्यक था। सबको आंखों के सामने प्रकट करने के लिए कि वह काहे का बना है, मैं उस सुन्दर मोम के पुतले को तोड़ डालना चाहता था जिसके रूप में मैं हर जगह दीखता था। मिसाल के लिए मुझे याद है कि एक बार नौसिखिए वकीलों के लिए मुझे एक अनौपचारिक व्याख्यान देना पड़ा। बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ने मेरा परिचय जिस अतिशय स्तुत्यात्मक ढंग से दिया उससे चिढ़कर मैं ज्यादा देर अपने को रोक नहीं सका। भाषण शुरू तो मैंने उसी भावातिरेक और उत्साह के साथ किया जिसकी मुझसे आशा की गई थी और जिसका आवाहन मेरे लिए कठिन नहीं था पर सहसा मैंने प्रतिरक्षा की प्रणाली के रूप में संधि-सम्बन्धों की राय देना शुरू कर दिया। वह संधि-सम्बन्ध नहीं मैंने कहा जो आधुनिक यातना-यात्रा ने पूर्णतया विकसित कर लिए हैं और जो चोर और साहूकार को एक ही तराजू में तौलते हैं ताकि दूसरे को पहले के अपराधों के बोझ से दबा दें। इसके विपरीत मैं चोर के पक्ष-समर्थन के लिए ईमानदार के अपराध प्रकट करना चाहूंगा अर्थात् इस प्रसंग में वकील के। इस बात को मैंने बड़ी स्पष्टता से समझाया

मान लीजिए कि मैंने किसी बेचारे दयनीय नागरिक के पक्ष में सच्चा होना स्वीकार किया है जो ईर्ष्या के कारण हत्यारा बन गया है। जूरी के माननीय सज्जनगण ध्यान दीजिए उस (मैं कहूंगा) भारी की द्वेष-भावना द्वारा अपनी स्वाभाविक सज्जनता की परीक्षा को जान पर आप पाना कितना क्षम्य अपराध है। उसके विपरीत क्या यह गुरुतर अपराध नहीं है कि मैं स्वयं सज्जन बने बगैर या बिना कभी भोगा गया

आदमी वकील बनकर क्या मैं बड़ा हूँ वहाँ बड़ा हो ? मैं स्वतन्त्र हूँ आपके कठोर दण्ड से सुरक्षित, पर मैं हूँ कौन ? गन्ध में लुप्त सौन्दर्य की तरह, काम-वासना में बकरे की तरह, क्रोधाग्नि में फणी की तरह और आलस्य का बादशाह। मैंने किसी की हत्या नहीं की। सच है अभी तक तो नहीं। पर क्या मैंने भले लोगों को मरने नहीं दिया ? शायद। और शायद मैं फिर वही करने को तैयार होऊँ। जब कि यह व्यक्ति—देखिए ज़रा इसे—यह व्यक्ति फिर ऐसा नहीं करेगा। जो-कुछ वह कर चला है उससे वह स्वयं ही अभी तक अभिभूत है।' इस भाषण से मेरे युवा सहयोगी कुछ घबरा गए। कुछ क्षण में उन्होंने तय किया कि इस पर हँस दिया जाए। और वे पूरी तरह आश्वस्त हो गए जब मैं भाषण की समाप्ति पर पहुँचा और मैंने व्यक्ति के स्वभाव और उसके तथाकथित अधिकारों का आवाहन किया। उस दिन अन्त में इच्छा की हार और शान्ति की जीत हुई।

इन मज़ेदार लापरवाहियों को बार-बार करके मैं अपने बारे में लोगों की राय को केवल उलझाने में ही सफल हुआ, उसे निहत्था करने में नहीं और अपना-आपको निहत्था करने में तो बिलकुल ही नहीं। अपने श्रोताओं में मुझे अचानक जो नाद अधिकतर मिले—उनका कुछ मौन-सा संकोच, कुछ-कुछ वैसा ही जैसा आप दिखा रहे हैं—नहीं, नहीं आप जवाब न दें—वे मुझे ज़रा भी शान्त नहीं करते थे। बात यह है कि अपने को निरपराध सिद्ध करने के लिए अपने ऊपर दोषारोपण करना काफ़ी नहीं है—वरना मैं तो बिलकुल ही भोला-भाला बन जाता। अपने ऊपर एक ख़ास तरीक़े से दोषारोपण करना होता है उस विधि को सिद्ध करने में मुझे काफ़ी समय लगा। जब कि मैं बिलकुल दीन-हीन अवस्था में पहुँच गया तब जाकर मुझे कहीं उसका पता लगा। तब तक हँसी की फुहारें मेरा भार वहाँ आया करती रहीं और मेरे यत्न-यत्न किए गए प्रयत्न उसे उस सदय, प्रायः कोमल गुण से, जो कि मुझे पीड़ा पहुँचाता था—पृथक करने में सर्वथा असमर्थ रहे।

पर लगता है समुद्र बढ़ा आ रहा है। हमारी नाव के छूटने में अब देर रही है, दिन समाप्ति पर है। इसलिए कपोत यहाँ इकट्ठा हो रहे हैं। भाग्य निश्चय! प्रकाश क्षीण हो रहा है। आप नहीं चाहते कि हम लोग मौन होकर इस कुछ अमंगल-मय क्षण का आनन्द लें? नहीं। मेरी बातों में आपको मज़ा आता है? आप बहुत मेहरबान हैं। इसके अलावा अब मुझे कोई इसका खतरा मालूम होता है कि कहीं मैं, मेरी बातें आपके लिए दिलचस्प न बन जाएँ। अनुलापी निर्णायक की व्याख्या करने के पहले मुझे आपसे बात करनी होगी विलासिता की—और काल कोठरी की।

आप गलती पर हैं मित्र, जहाज़ तो पूरी तेज़ी से चल रहा है पर ज़्वाइडरज़ी मृत समुद्र है या मृतप्राय। उसके समतल किनारे कुहासे में खोये हुए हैं। मालूम ही नहीं पड़ता कि कहाँ उसका आरम्भ है और कहाँ अन्त। अतः हम लोग बिना किसी मार्ग चिह्न के सहारे बढ़ रहे हैं, अपनी चाल की तेज़ी का कोई अनुमान नहीं कर सकते। हम प्रगति कर रहे हैं पर कुछ बदल नहीं रहा है। यह नौयात्रा नहीं है, सपना देखना है।

यूनानी टापुओं के समूह में मेरा अनुभव इसके विपरीत था। क्षितिज पर निरन्तर नये-नये द्वीप दीखते जाते थे। उनकी वृक्ष विहीन रीढ़ की हड्डी क्षितिज रेखा थी और उनका किनारा सागर से तीव्र विरोध में उभरता आता था। वहाँ भूल की कोई सम्भावना न थी, तेज़ रोशनी में सभी-कुछ मार्ग चिह्न था। और एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक नाव पर, जो फिर भी मन्थर गति से ही चल रही थी, मुझे निरन्तर ऐसा लगता कि हम रात दिन बढ़े जा रहे हैं ठण्डी लहरों के शीर्ष पर, फेन और हँसी की बौछारों से भरी एक लम्बी दौड़ में। तब से यूनान स्वयं ही मेरे अन्तर में कहीं प्रवाहित होता रहा है—स्मृतियों के सिरे पर,

प्रेक्षक पर गाड़िए, रोकिए मुझे ! मैं भी प्रवाह में बहा जा रहा हूँ मैं तो कविता करने लगा ! मुझे रोकिए, मित्र !

खैर आप यूनान से परिचित हैं ? नहीं ? तो और भी अच्छा है। हम लोग वहाँ चलेंगे ही क्या मैं पूछता हूँ ? वहाँ तो आवश्यकता है शुद्ध हृदयों की। आप जानते हैं कि वहाँ दो मित्र, सड़क पर एक-दूसरे का हाथ पकड़े घूमते हैं। हाँ, औरतें घर बैठी हैं और प्रतिष्ठित प्रौढ़, मूँछधारी पुरुष पटरी पर गम्भीरतापूर्वक नृत्य करते हुए, सड़कों पर घूमते हैं अपने नाच की उँगलियों में अपनी उँगलियाँ फँसाए हुए। अच्छा तो पूर्व के देशों में भी ऐसा ही होता है ? कभी-कभी ? हाँ, होगा। पर बताइए, आप पेरिस की सड़कों पर मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर घूमेंगे ? अरे मैं तो मज़ाक कर रहा था। हम दोनों में तो औचित्य के भाव रहते हैं हमारी प्राकृतिक तमन्ना ही हमारा आचरण औपचारिक बना देती है। पर यूनान के द्वीपों में प्रवेश करने से पहले तो हम भली भाँति अपना परिमार्जन करना पड़ेगा। वहाँ की हवा पावन है वहाँ सागर और ऐन्द्रिक सुख पारदर्शी हैं। और हम

आइए, हम इन डेक-चेयरों पर बैठें। क्या कोहरा छाया है ! हाँ, तो मेरा ख्याल है मैंने काल-कोठरी तक पहुँचते-पहुँचते अपने को रोक लिया था। जी हाँ मैं बताऊँगा आपको कि मेरा आशय क्या है। संघर्ष करने के बाद अपनी धृष्टतापूर्ण की सभी चेष्टाओं को चुका देने के बाद अपने सारे प्रयत्नों की व्यर्थता से हतोत्साहित होकर मैंने आदमियों की सुहबत छोड़ देने का निश्चय किया। जी नहीं, मैंने किसी मरुस्थल की कामना नहीं की थी और तो कोई स्थान भी नहीं है। मैंने तो केवल औरतों के बीच शरण ली। आप तो जानते ही हैं वे किसी भी दुर्बलता का वास्तव में तिरस्कार नहीं करतीं वे हमारी ताक़त का इस्तेमाल करती हैं हमारी शक्ति का निहत्था बना देने की या उसको मानहानि करने की। इसी कारण नारी योद्धा की नहीं अपराधी की होती है। वह उसका बन्दरगाह है उसका आश्रय। किसी औरत की शय्या में ही अभियुक्त का

गिरफ्तार किया जाता है। पृथ्वी पर स्वर्ग का क्या वही एकमात्र भग नहीं है जो अब तक हमें उपलब्ध है? आपद्काल में मैं भी अपने सहज सुरक्षा-स्थल की तरफ भागा। पर अब मैं मीठे-मीठे भाषण नहीं देता था। आदत के कारण मैं अब भी कुछ दाँव तो लगाता था, लेकिन कहानी गढ़ने की कला का अभाव हो गया था। मुझे कहने में संकोच होता है, क्योंकि मैं शायद कुछ और वर्जित शब्दावली का व्यवहार कर जाऊँ। लगता है कि उस समय मुझे प्रेम की आवश्यकता का अनुभव हुआ। अश्लील है है न? जो भी हो, मुझे एक गुप्त पीड़ा अनुभव हुई, एक प्रकार का अभाव, जिसने मुझे और भी रिक्त कर दिया और इसकी अनुमति दे दी कुछ तो जरूरत से और कुछ कौतुक समझकर, कि मैं कुछ वादे कर दूँ। जितना ही मुझे यह लगता था कि मुझे प्रेम करने और पाने की आवश्यकता है उतनी मात्रा में मैं समझता था कि मैं प्रेम में फँस गया हूँ। दूसरे शब्दों में मैं अभिनय करता रहा।

अक्सर मैं अपने को एक प्रश्न करता पाता था जिसे कि अनुभवी व्यक्ति होने के कारण पहले मैं हमेशा बचाता रहा था। मैं अपने को यह पूछता सुनता था कि तुम मुझसे प्रेम करती हो? आप जानते हैं इस तरह की बातचीत में उत्तर यही होता है और तुम?' अगर मैं कह देता था हाँ तो मैं देखता कि अपनी वास्तविक भावनाओं से अधिक गहरे में पहुँच गया हूँ। और अगर मैं ना करने की हिम्मत करता तो यह डर होता कि मैं प्रेम पाने में भी वंचित रह जाऊँ और परिणामस्वरूप मुझे पीड़ा भोगनी पड़े। जिस भावना से मुझे शान्ति पाने की आशा थी उस भावना का जितना ही अधिक मैं संकट में पड़ी देखता था उतना ही अधिक अपनी संगिनी से उसकी माँग करता था। अतः मैं अधिकाधिक स्पष्ट वादे करता गया। इस प्रकार मैं एक मोहिनी मूर्खा के प्रेम-पाश में फँस गया जिसने रद्दी रंगीन प्रकाशन इतनी अच्छी तरह पढ़ रखे थे कि वह प्रेम के विषय में उसी विश्वास और दृढ़ता से बात करती थी जैसे कोई बुद्धिजीवी वर्गहीन समाज के बारे में करे। इस प्रकार का

विश्वास आप जानते ही हैं असम्भव होता है। मैंने भी उसी तरह प्रेम की चर्चा करके देखा और अन्त में विश्वास दिला ही दिया। कम-से-कम तब तक जब तक कि वह मेरी प्रेमिका नहीं बनी और मैंने यह नहीं देखा कि रंगीले प्रकाशनों द्वारा प्रेम के विषय में चर्चा करना कितना ही क्यों न आ जाए, प्रेम की कला की शिक्षा नहीं मिलती है। तीन को प्यार करने के बाद मुझे सोना पड़ा सापिन के साथ। पुस्तकों में चर्चित वह प्रेम जो मैंने जीवन में कभी नहीं पाया था, मुझे अन्यत्र ढूँढ़ने जाना पड़ा।

पर मैं अनभ्यस्त था। तीस वर्ष से अधिक हो गए थे कि मैं केवल अपने-आपसे ही प्रेम करता रहा था। इस आदत को छुड़ाने की क्या सम्भावना हो सकती थी? मैं नहीं ही छोड़ पाया और प्रेम-व्यापार में खिलवाड़ करता रहा। वादे मैंने दुगुने चौगुने कर दिए। जिस प्रकार पहले एक साथ कई प्रेमिकाएँ रहती थीं उसी प्रकार अब एक साथ कई प्रेम-सम्बन्ध हो गए। इस प्रकार दूसरों के लिए अब मैं कहीं ज्यादा मुसीबतें इकट्ठी करता, बनिस्बत अपनी उस शानदार उदासीनता के समय के। मैंने आपको बताया कि मेरे तोते ने दुःख से घबराकर भूख से जान दे देने की सोची। भाग्यवश मैं समय से पहुँच गया और तब तक उसका हाथ पकड़कर बैठने के लिए तैयार हो गया जब तक वह इंजीनियर, जिसकी कनपटी के बाल सफेद हो चले थे और जिसके बारे में उसने अपने मनपसन्द साप्ताहिक में पढ़ रखा था, बाली की यात्रा से वापस न लौट आए। जो भी हो, यह होने के बजाय कि प्रेम में पड़कर मैं इतना उठ जाऊँ कि धाम की अनन्तता में विलीन हो जाऊँ, जैसी कि लोकोक्ति है, मैं अपने अपराधों के भार में, और सद्गुणों की राह में पथभ्रष्ट होने में ही, वृद्धि करता रहा। परिणामस्वरूप मैं प्रेम की भावना से इतनी घृणा करने लगा कि सालों तक मैं प्रसिद्ध प्रेम-गीतों 'लाबी औं रोज़' और 'लीबस्टाड' को सुनकर दाँत पीसे बिना नहीं रह पाता था। अत: मैंने औरतों का एक तरह से त्याग करने की चेष्टा की और ब्रह्मचर्य

का पालन करने की। आखिर उनकी मित्रता-मात्र से भी मुझे सन्तोष मिलना चाहिए था। पर यह तो जुआ छोड़ने के बराबर था। वासना के न होते हुए औरतों से मुझ आशातीत ऊब लगी और स्पष्टत मैंने भी उन्हें उबाया। जुआ नहीं और नाट्यशाला नहीं—शायद मैं सत्य के क्षेत्र म पहुँच गया था, पर सत्य, मेरे दोस्त, एक भयंकर ऊब है।

प्रेम और ब्रह्मचर्य से निराश होकर मैंने अपने मन मे कहा कि विलासिता के अतिरिक्त और कुछ नहीं बचा है, जो प्रेम का स्थान ले सकती है, हँसी को दबा देती है और शान्ति को फिर वापस ला देती है सर्वोपरि अमरता प्रदान कर सकती है। निर्मल उन्माद के एक विशिष्ट स्तर पर पहुँचकर, देर रात बीते, दो वेश्याओं के बीच पड़े हुए कामना से सर्वथा रिक्त आशा उत्पीड़न नहीं रह जाती बुद्धि पूरे अतीत पर छा जाती है और जीवित रहने की व्यथा सदा-सर्वदा के लिए तिरोहित हो जाती है। एक तरह से मैं हमेशा विलासता म ही डूबा रहा था अमर होने की इच्छा का मेरे मन म कभी अन्त न हुआ था। क्या यही मेरे स्वभाव की कुंजी नहीं थी और उस आत्म रति का परिणाम जो मैं आपको बता चुका हूँ? हाँ मैं अमरता की कांक्षा के मारे मरा जा रहा था। मुझे स्वयम् अपने से इतना अधिक अनुराग था कि यह तो मैं चाहता ही था कि मेरा अमूल्य प्रेम-पात्र कभी अन्तर्धान न हो। क्योंकि जागृत की स्थिति में और कुछ आत्म-बोध के फलस्वरूप इसका कोई कारण नहीं दीखता कि किसी कामुक बंदर को अमरता क्यों प्रदान की जाए इसलिए अमरता के बदले आदमी को कुछ-न-कुछ प्राप्त करना ही पड़ता है। क्योंकि मैं अमर जीवन की आकांक्षा करता था, मैं वेश्याओं के साथ सोया और शराब पीने म रातें गुजार दीं। सुबह जरूर मेरा मुँह नश्वरता के कड़वे स्वाद से भर जाया करता था पर रह तो चुका था घण्टों आनन्द म मग्न। क्या मैं आपके सामने स्वीकार करने का साहस करूँ? मैं अभी भी प्यार से कुछ रातों को याद करता हूँ जब मैं एक निकृष्ट नाइट-क्लब म वहाँ की एक नाचने

वाली औरत से मिलने जाया करता था और वह मुझे अपनी कृपा से सम्मानित करती थी और उसके पीछे मैंने एक नाम एक डींग हाँकने वाले दम्पति से नाता भी किया था। हर रात मैं शराबखाने में अकड़ कर घूमता था, उस पार्थिव स्वर्ग की लाल बत्ती और धूल में—बेहद झूठ बोलता हुआ और खूब शराब पीता हुआ। मैं उषा की प्रतीक्षा करता था और तब अन्त में अपनी रानी के अस्त-व्यस्त बिस्तर पर जा पहुँचता था जो यन्त्रवत् केलि-क्रिया सम्पन्न करके और फिर बिना किसी संभ्रम की स्थिति में गुज़रे हुए सो जाती थी। दिन चुपके-से आकर इस दुर्घटना पर प्रकाश डाल देता था और मैं उठकर आभा-मण्डित उपप्रकाश में निश्चल खड़ा हो जाता था।

मदिरा और नारी मैं मानता हूँ, ये ही दोनों मुझे वह सान्त्वना प्रदान करती थीं जिसके योग्य मैं था। मैं यह रहस्य आपके सामने उद्घाटित कर रहा हूँ मेरे दोस्त इसका उपयोग करने से आप डरें नहीं। तब आप देखेंगे कि सच्ची विलासिता मुक्तिप्रद है, क्योंकि वह विलासी पर कर्तव्यों का कोई भार नहीं डालती। उसमें डूबकर आपका स्वत्व अपने तक ही रहता है, इसीलिए स्वयं का प्यार करने वाले महान् प्रेमियों का यही प्रिय आमोद हो सकता है। यह तो अतीत और भविष्यरहित एक अरण्य है जिसमें कोई वादा नहीं, कोई तात्कालिक दण्ड नहीं। जहाँ इसका उपभोग किया जाता है वे स्थान संसार से पृथक् हैं। प्रवेश करने पर आदमी आशा और भय को पीछे छोड़ देता है। वहाँ बातचीत की आवश्यकता नहीं जिसे पाने के लिए आप वहाँ जाते हैं। वह शब्दों के बिना भी मिल सकता है और अक्सर तो रुपए के बिना भी। आह मुझे अनुमति दें आप, उन अज्ञात और विस्मृत स्त्रियों ने उस समय मेरी सहायता की थी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने की! आज भी मेरे मन में उनकी स्मृति में आदर की तरह का ही कोई भाव सन्निहित है।

जो भी हो, उस मुक्ति भाव का मैंने पूरा-पूरा लाभ उठाया इतना तक कि मैं पाप को समर्पित एक होटल में जा देखा गया, एक ही समय

म एक प्रौढ़ा वेश्या और उच्चतम समाज की एक अविवाहित युवती के साथ रहना हुआ। पहली के साथ तो मैंने रसिया होने का नाटक किया और दूसरी को जीवन के कुछ तथ्य जानने का अवसर दिया। अभाग्यवश वेश्या की बिलकुल मध्यवर्गीय मनोवृत्ति थी, बाद म उसने आत्मकथाओं वाले एक पत्र के लिए जिसमें आधुनिक विचारों के लिए रास्ता खुला था, अपने संस्मरण लिखना स्वीकार कर लिया। मुझे इसका भी कुछ कम अभिमान नहीं है कि उस समय मैं बराबरी की हैसियत से एक ऐसे पुरुष-समाज म प्रवेश पा सका जिसकी अक्सर भर्त्सना की जाती है। पर मैं इस पर जोर नहीं दूंगा। आप जानते ही हैं कि बहुत बुद्धिमान व्यक्ति भी इसमें अपना गौरव समझते हैं कि पास बैठे व्यक्ति से एक बोतल ज्यादा पी सकें। शायद अन्त म मुझे उस सुखमय विलासिता म शान्ति और मुक्ति प्राप्त हो जाती। पर वहाँ भी मुझे अपने ही अन्दर एक बाधक कारण मिला। इस बार वह था मेरा कलेजा, और एक ऐसा भयंकर अवसाद जिसने अभी तक मुझे नहीं छोड़ा है। आदमी अमरता का खेल खेलता है पर कुछ हफ्तों बाद उसे यह भी पता नहीं रहता कि अगले दिन तक भी टँगा रह सकेगा या नहीं।

उस अनुभव का एकमात्र लाभ यह हुआ जब मैं रात्रि के अपने आमोद छोड़ चुका था कि जीवन मेरे लिए अपेक्षाकृत कम कष्टदायी हो गया। जो अवसाद मेरे शरीर को कचोट रहा था उसने एक साथ अनेक कच्चे घाव बहा दिए। हरएक अति मनुष्य की शक्ति को कमकर देती है और इसीलिए व्यथा को भी। विलासिता का कोई अन्त नहीं होता—जैसा कि समझा जाता है उसके विपरीत। विलासिता सिर्फ एक लम्बी नींद है। आपने देखा होगा कि जो लोग वास्तव म सन्देह से जलते हैं उनकी सबसे तीव्र इच्छा यही रहती है कि उस औरत के साथ सोयें जिसके बारे म वे जानते हैं कि उसने विश्वासघात किया है। जिससे वे एक बार फिर अपने आपको इसका विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनकी प्रिय सम्पत्ति अभी भी उन्हीं की है। जैसा कहा जाता

है, वे उस पर अधिकार पाना चाहते हैं। पर साथ ही यह भी है कि उसके लब्ध हो जाने के अनन्तर उनके दिल की जलन कम हो जाती है। शारीरिक विद्वेष कल्पना प्रसूत तथ्य है और साथ ही आत्म निरपेक्ष भी। अपने प्रतिद्वन्द्वी पर आदमी वह नीच विचार आरोपित कर देता है जो उन परिस्थितियों में उसके अपने मन में रह चुके हैं। भाग्यवश एन्द्रिक तृप्ति की अति कल्पना और निर्णय शक्ति दोनों को क्षीण कर देती है। वेदना तब तक सुषुप्त पड़ी रहती है जब तक पुंसत्व। इसी कारण से नवयुवक अपनी आध्यात्मिक अशान्ति पहली प्रमिका के साथ खो देते हैं, और वृद्ध विवाह-सम्बन्ध, जो केवल वैध व्यभिचार हैं, दुस्साहस और काल्पनिक निर्माण की अर्थी बनकर रह जाते हैं। हाँ, मेरे दोस्त, बूर्जुआ विवाह-सम्बन्ध ने हमारे देश को स्लीपर पहनाकर तैयार कर दिया है और शीघ्र ही उसे मौत के दरवाजे तक पहुँचा देगा।

मैं अतिशयोक्ति कर रहा हूँ? नहीं, पर विषयान्तर अवश्य कर रहा हूँ। मैं तो केवल यह बताना चाहता था कि मैंने उन महीनों की घोर विलासिता से क्या लाभ उठाया। मैं एक प्रकार के कुहासे में रह रहा था जिसमें वह हँसी इतनी दब गई थी कि अन्त में मुझे उसका बोध होना ही बन्द हो गया था। जो उदासीनता पहले ही मेरे अन्तर में भर चुकी थी उसे अब कोई प्रतिरोध नहीं मिलता था, उसने अपना व्यापक प्रभाव विस्तृत कर दिया। अब कोई सवेग नहीं। एक सन्तुलित भाव, या वह कि भाव ही नहीं। क्षय ग्रस्त फेफड़े सुखाने से रोग मुक्त किए जाते हैं और धीरे धीरे अपने प्रसन्न स्वामी को ही घोट डालते हैं। मेरे साथ भी यही हुआ। मैं शान्तिपूर्वक अपनी ही औषध से मर गया। मैं अभी भी अपने व्यवसाय से जीविका निर्वाह कर रहा था, पर मेरे नाम पर भाषा की मरी उड़ाने के कारण गहरा धक्का लगा था, मेरे जीवन की अस्त-व्यस्तता से व्यवसाय को क्षति पहुँचती थी। पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि मुझे अपने रात्रि की उग्रता के कारण अपने नग्न आचरण की अति की अपेक्षा अधिक विरोध मिला। अपने भाषणों के दौरान

म "यायाधीश के सामने मेरा ईश्वर का नाम लेना, जो कि मात्र शब्द प्रयोग ही था, मेरे मुवक्किलों के मन में मेरे प्रति सन्देह पैदा कर देता था। उन्हें शायद यह शंका हो जाती थी कि परमात्मा उनके हितों की रक्षा उतनी अच्छी तरह नहीं कर सकता था जितना कि "याय शास्त्र में अजेय वकील। वहाँ से इस निष्कर्ष पर पहुँचना सिर्फ एक कदम आगे बढ़ाना था कि मैं अपनी अनभिज्ञता के अनुपात में ही परमात्मा की दुहाई देता हूँ। मेरे मुवक्किलों ने वह कदम बढ़ाया और विरल हो गए। कभी-कभार मैं किसी मुकदमे में बहस करने चला जाता था। कभी-कभी यह भी होता था कि इस बात को भूलकर कि मैं जो कह रहा हूँ उसमें मुझे विश्वास नहीं है, मैं अच्छी पैरवी भी कर देता था। मेरी अपनी वाणी नेतृत्व करती थी और मैं उसका अनुसरण। मैं पहले की तरह उड़ान तो नहीं भरता था पर कम-से-कम भूमि तो छोड़ ही देता था, और कुछ उछल-कूद कर लेता था। अपने व्यवसाय के बाहर मैं बहुत कम लोगों से मिलता था और बड़े ही कष्टपूर्वक मैंने दो-एक प्रवसन प्रेम-सम्बन्धों को जीवित रखा। यह भी हुआ कि दो एक शामें मैंने शुद्ध मैत्रीपूर्ण वातावरण में बितायीं, जिनमें वासना का कोई अंश भी न था, पर इस अन्तर के साथ कि ऊब के मारे आत्म-समर्पण करके मैं जो कहा जाता था उसे सुनता ही न था। मैं कुछ मोटा हुआ और तब मुझे यह विश्वास होने लगा कि संकट पार हो गया है। अब कुछ भी नहीं रह गया था सिवाय इसके कि उम्र बढ़ती जाए।

पर एक दिन समुद्र की सैर करते हुए जहाँ मैं अपनी एक महिला मित्र को घुमाने ले गया था उसे बिना यह बताए हुए कि अपनी रोग मुक्ति की खुशी मना रहा हूँ मैं एक बड़े जहाज पर था, ऊपर वाले डेक पर। सहसा दूर पर एक काला-सा धब्बा इस्पाती महासागर में दिखाई पड़ा। मैंने एकदम मुँह फेर लिया और मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। जब मैंने फिर बलपूर्वक अपना मुँह उधर किया तो देखा कि वह काला धब्बा नहीं था। मैं चिल्लाने को हो था मूर्खों की तरह सहायता

के लिए पुकारने को था, तभी मुझे वह फिर दिखायी पडा। वह उस कबाड का एक टुकडा था जो अक्सर जहाज समुद्र में छोड दिया करते हैं। पर मैं उसे देखते रहना सह नहीं पाया था क्योंकि तुरन्त मेरा ध्यान एक डूबते हुए व्यक्ति की तरफ गया था। तब मैंने सुस्थिर चित्त से यह समझा उसी तरह जैसे आप किसी विचार को स्वीकार कर लेते हैं जिसकी सत्यता के बारे में बहुत पहले से जान चुके होते हैं, कि वह पुकार जो साल पहले सीन नदी पर से मेरे कानों में पडी थी कभी मौन नहीं हुई, नदी ने उसे सागर तक पहुँचा दिया था—संसार भर में घूमते रहने के लिए, सागर के अनन्त विस्तार-पर्यन्त और उसने उस दिन तक वहाँ मेरा इन्तज़ार किया था जिस दिन फिर मेरा उससे साक्षात् हुआ। साथ ही मैंने यह भी जाना कि वह पुकार नदियों में और सागर में, हर जगह मेरा इन्तजार करती रहेगी—जहाँ-जहाँ मेरे सस्कार का अपवित्र जल पहुँचेगा। आज हाँ, यहाँ भी क्या हम पानी पर ही नहीं हैं? इस सपाट, एकरस, अन्तहीन जल पर जिसकी सीमाएँ पृथ्वी से अलग पहचानी नहीं जातीं? क्या विश्वास होता है कि हम लोग कभी भी एम्स्टरडम पहुँच सकेंगे? पुनीत नगर के इस विशाल पात्र में हम लोग कभी बाहर नहीं निकल सकेंगे। सुनिए, सुनिए! आपको क्या अदृश्य जल-पक्षियों के स्वर नहीं सुनायी पडते? यदि वे हमारी ही दिशा में पुकार रहे हैं तो क्या किसके हेतु?

ये वही जल-पक्षी हैं जो अतलान्तिक महासागर पर उस दिन पुकार रहे थे जिस दिन मैंने हमेशा के लिए यह जाना कि मुझे रोग-मुक्ति नहीं मिली कि मैं अभी भी जाल में फंसा हुआ हूँ और मुझे बस पड़े बस ही निभाना है। शानदार जीवन का अन्त हुआ साथ ही उद्वेगों और प्रति रवा का भी। मुझे घुटने टेक देने पड़े और अपना अपराध स्वीकार करना पडा। मुझे काल-कोठरी में रहना पडा। निश्चय ही आप उस काल-कोठरी से परिचित नहीं हैं जिसे मध्य युग में 'लिटल ईज' कहा जाता था। साधारणतः यह होता था कि उसमें पड़े आदमी का जीवन भर

के लिए भुला दिया जाता था। अन्य काल-कोठरियों में और उसमें अन्तर उसके विलक्षण आयाम का था। वह इतनी ऊँची नहीं होती थी कि कोई उसमें खड़ा हो सके और न इतनी चौड़ी कि उसमें लेट सके। आदमी को विचित्र आकार बनाकर तिरछे तिरछे ज़िन्दा रहना पड़ता था। सोने का मतलब था ढेर होकर पड़ रहना और जागने का उकड़ू बैठ रहना। मेरे प्यारे दोस्त, इस सीधी-सी कारीगरी में विलक्षण प्रतिभा थी—और यह समझ लीजिए आप कि मैं अपने शब्द तोलकर इस्तेमाल कर रहा हूँ। हर रोज़ अपनी उस कभी न ढीली पड़ने वाली सिकुड़न द्वारा जिससे उसका शरीर ऐंठता ही जाता था, अपराधी को यह ज्ञापित होता रहता था कि वह दोषी है और निर्दोषिता आह्लादमय प्रसार में निहित है। आप शिखरों और ऊपरी डेक पर विचरण करने वाले व्यक्ति की उस काल-कोठरी में कल्पना कर सकते हैं? क्या? आदमी उस काल-कोठरी में रहता हुआ भी निर्दोष था? इसकी सम्भावना नहीं। बिलकुल नहीं। नहीं तो मेरा तर्क ही ढेर हो जाएगा कि निर्दोषिता को इस स्थिति में पहुँचा दिया जाए कि वह कुबड़ा होकर रहे। मैं इस परिकल्पना को एक क्षण के लिए भी स्वीकार करने को तैयार नहीं। इसके अतिरिक्त हम किसी की भी निर्दोषिता का दावा नहीं कर सकते हैं यद्यपि निश्चय के साथ हरएक के दोष की घोषणा अवश्य कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के पापों का साक्षी हो जाता है—यही मेरी आस्था है और यही मेरी आशा।

सच मानिए आप धर्म उसी समय गुमराह हो जाते हैं जब वे आचार की उद्घोषणा करने लगते हैं और उनका उपदेश देने लगते हैं। पाप का सृजन करने या दण्ड देने के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं। हमारे सहचर मानव ही इसके लिए काफ़ी हैं, हमारी सहायता के साथ। आप क़यामत की बात कर रहे थे। मुझे अनुमति दें कि मैं सादर हँस पड़ूँ। मैं उसके लिए दृढ़ होकर इन्तज़ार करूँगा क्योंकि मुझे उससे ज़्यादा बुरी चीज़ का स्वाद मिल चुका है—मनुष्यों के निर्णय का। उनके लिए

बाद परिस्थिति अपराध की गुरुता घटाती नहीं, यहाँ तक कि सत्प्रेरणा भी अपराध ठहरायी जाती है। आपने कम-से-कम थूकने वाले बन्दी-गृह की बात तो सुनी ही होगी! इसका निर्माण एक जाति ने हाल ही में किया था, यह सिद्ध करने के लिए कि वह पृथ्वी पर श्रेष्ठतम जाति है। चारों तरफ दीवारों से घिरा एक बक्सा, जिसमें कैदी बिना हिले डुले खड़ा रह सकता है। सामने के उस कोष्ठ में जो ठोस दरवाजा उसे बन्द करता है वह ठोड़ी की ऊँचाई तक का होता है। इसलिए सिर्फ उसका मुँह दिखता रहता है और उधर से निकलते हुए हर जेलर मुँह भर के उसके ऊपर थूकता जाता है। बंदी चारों तरफ से घिरा हुआ अपना मुँह पोंछ नहीं सकता—हालाँकि उसे अपनी आँख बन्द कर लेने की इजाजत रहती है। यह, मेरे दोस्त मानव की सर्जना है। इस श्रेष्ठ कृति के लिए उसे ईश्वर की आवश्यकता नहीं पड़ी।

सो क्या? ईश्वर का एकमात्र उपयोग होगा निर्दोषिता की प्रतिभूति करना और मैं धर्म को इस दृष्टि से देखता हूँ जैसे वह धुलाई का एक महान कारखाना हो। कुछ दिनों के लिए था भी—केवल तीन वर्ष के लिए। तब उसे धर्म कहकर नहीं पुकारा गया था। तब से साबुन की कमी हो गई है, हमारे चेहरे गन्दे हैं और हम एक-दूसरे की नाक पोंछते रहते हैं। सब मूढ़ हैं, सब दण्डित, आइए हम सब एक-दूसरे के ऊपर थूकें और जल्दी करें, लिटिल ईज की काल कोठरी में पहुँचने की! हर आदमी की चेष्टा रहती है कि सबसे पहले थूक सके, बस। मैं आपको एक बड़ा रहस्य बताता हूँ, मेरे प्यारे दोस्त! कयामत का इन्तज़ार मत कीजिए। वह तो हर रोज आती रहती है।

नहीं, कोई बात नहीं। इस वाहियात उमस की वजह से मैं कुछ काँप रहा हूँ। हम तट पर पहुँचने ही वाले हैं। लीजिए, आ गए। पहले आप। पर जरा ठहरिए, मेरी प्रार्थना है और घर तक मेरे साथ चलिए। मुझे और कुछ कहना है। जारी रखना ही तो मुश्किल होता है। कहिए, आप जानते हैं उन्हें, जिनके बारे में शायद उन्हें [illegible]

हैं कि उस सलीब पर क्या चढ़ाया गया था ? उसके अनेक अनेक कारण थ। किसी भी व्यक्ति की हत्या के सदा अनेक कारण रहते हैं। उसके विपरीत, उसके जीवित रहने का औचित्य प्रमाणित करना असम्भव है। इसीलिए पाप का परोकार तो हमेशा मिल जाते हैं और निर्दोषिता का कभी कभी ही। लेकिन उन कारणों के अलावा, जो हम पिछले दो हजार वर्ष से समझाए जाते रहे हैं उस भीषण यन्त्रणा का एक प्रधान कारण और भी था। मालूम नहीं क्यों उसे इतनी सावधानी से छिपाया गया है। असली कारण यह है कि वह जानता था कि वह पूर्णतया निर्दोष नहीं है। जिस अपराध के लिए वह दोषी ठहराया गया था अगर उसका भार उस पर नहीं था तो भी उसने और दूसरे अपराध तो किये ही थे—चाहे उसे मालूम भी न रहा हो कि कौनसे। क्या सच म वह नहीं जानता था ? आखिर वही तो भूल म था। उसने निर्दोषों की कम-से-कम एक हत्या के बारे म सुना ही होगा—जूडिया के बच्चों की हत्या, उस समय जब कि उसके माँ-बाप उसे सुरक्षित स्थान को ले जा रहे थे। वे बच्चे उसकी वजह से नहीं मरे तो क्यों मरे ? वे खून से सने सिपाही वे दो टुकड़े म काटे गए शिशु। पर मान ले कि वह वसा ही था जसा कि हम समझते हैं तो मुझे विश्वास है कि वह उन्हें भुला नहीं सकता था। और रही उस उदासी की बात जो उसके हर काम म दीखती थी क्या वह उस व्यक्ति का अनिवार्य विषाद नहीं था जिसे हर रात रेचल की आवाज अपने बच्चों के लिए रोती हुई और हर प्रकार की सांत्वना अस्वीकार करती हुई सुनायी पड़ती थी ? वह हाहाकार रात को चीर देता था रेचल अपने बच्चों को पुकारती थी जो उसके कारण म मारे गए थे और वह स्वयं जीवित थी।

उन सबको जानते हुए जिसको वह जानता था मनुष्य की हर बात म परिचित—आह कौन यह विश्वास करेगा कि दूसरों को मरने देना स्वयं न मरने की अपेक्षा अधिकतर अपराध है ! दिन रात उस निर्दोष अपराध का सामना करते हुए उसके लिए अब म बने रहना कठिन हो

गया। वेहतर था कि इस दशा का अन्त कर दे—प्रतिवाद न कर मर जाए ताकि वही अकेले जीवित रहने वाला न बचे और चला जाए जहाँ शायद उसे मान्यता प्राप्त हो सके। उसका समर्थन नहीं किया गया, उसने शिकायत की और आखिरी चीज़ यह हुई कि उसे दोषी ठहराया गया। हाँ, मैं सोचता हूँ शायद वह तीसरा इवेंजलिस्ट था जिसने उसकी शिकायत को पहले पहल दवाया था। 'तूने क्या मेरा साथ छोड़ दिया है ?' —यह विद्रोह का स्वर था या न ? 'तो चलाओ कची !' आप इतना समझ लीजिए कि ल्यूक ने अगर कुछ न्याया न होता तो शायद किसी का उधर ध्यान भी न जाता, मगर जो भी हो उसका इतना महत्व तो न ही होता। इसी तरह नियन्त्रक जिसे वर्जित करता है उसी का स्वयं पुकार-पुकारकर विज्ञापन करता है। समाज की व्यवस्था भी इसी तरह व्यर्थ है।

कुछ भी हो निर्णीत अपराधी के लिए चलते रहना असम्भव हो गया। और मैं जानता हूँ दोस्त कि मैं क्या कह रहा हूँ। एक समय था जब मुझे किसी एक क्षण ज़रा भी पता न होता था कि मैं दूसरे तक कैसे पहुँचूँगा। हाँ आदमी इस संसार में युद्ध छेड़ सकता है प्रेम का स्वांग कर सकता है, अपने सह-मानव को यातना दे सकता है और केवल बुनाई की सलाई चलाते चलाते पड़ोसी की निन्दा कर सकता है। पर किन्हीं दशाओं में चलते रहना सिर्फ चलते रहना ही एक अति-मानवीय कार्य हो जाता है। और वह अतिमानव नहीं था, आप मेरा ज्ञान मानें। उसने अपनी यन्त्रणा पुकारकर बतायी और इसीलिए मैं उसे प्यार करता हूँ मेरे मित्र उसे जो बिना जाने ही मर गया।

दुर्भाग्य यह है कि वह हम अकेला छोड़ गया चलते रहने के लिए कुछ भी होता हो चलते रहने के लिए तब भी जब हम 'लिटिल इज' की कालकोठरी में गिरफ्तार हों—अपनी तरफ से यह सब जानते हुए जो उसे मालूम था पर उसने जो किया उसे करने में असमर्थ और उसकी तरह मरने में असमर्थ। स्वाभाविक था कि लोगों ने उसकी मृत्यु से

कुछ मवल पाा की चप्टा की। आखिर हमग यह कहना तो एक विल क्षण बुद्धिमत्ता की बात थी कि "इतना तो निश्चय है कि देखन म तुम सुन्दर नहा हो ! मर हम इससे अधिक न जाएँगे। सब-कुछ एक बार ही मलीव पर समाप्त कर देंगे ! पर अब तो बहुत ज्यादा लोग सलीब पर चढ़ने लग हैं, ताकि दूर दूर से देखे जा सकें—चाहे यह भी हो कि जो वहाँ इतनी देर म है उस कुछ रौन्सा ही पड । बहुत ज्यादा लोगों ने यह निश्चय किया है कि बिना उदारता के काम चलाएंगे ताकि दान शील हो सकें। आह कितना अन्याय, कितना घोर अन्याय उसके साथ किया गया है ! दिल पर चोट लगती है।

ओफ कितनी आसानी से आदमी अपनी लीक पर लौट जाता है—मैं तो बिलकुल कचहरी मे भाषण देने के करीब पहुँच गया। मुझे क्षमा कर और समझे कि इसके पाछे कारण है। यहाँ से दो चार मोड आगे एक मयखाना है जिसका नाम है 'अटारी म हमारे प्रभु'। उस समय उस अटारी म कब्र थी क्योंकि यहाँ के तहखाना म पानी भरा रहता है। पर आज—आप निश्चिन्त रहे—उनके प्रभु न अटारी म हैं और न तहखान म। उन्होंने उन्हे उठाकर निर्णायक की कुरसी पर बिठा दिया है अपने मन के अन्तराल म और वे आघात करते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह कि वे निर्णय करते हैं उनके नाम पर। उन्होंने मृदुता से स्वैरिणी न कहा था और मैं तुझे भी दोष नहीं देता ! पर उससे क्या, वे तो किसी को नहीं छोड़ते सबको दोषी ठहरात हैं "प्रभु के नाम पर यह लो जो तुम्हे मिलना चाहिए। प्रभु ? उन्होंने मेरे शब्द, इतने की आशा नहीं की थी। वे तो केवल चाहते थे कि लोग उन्हें प्यार करें बस और कुछ नहीं। बात है कि एक लोग जो उन्हें प्यार करते हैं ईसाइयों म भी हैं। पर उनकी संख्या बहुत कम है। उन्होंने ना यह भा जान लिया था उनम हँसने का क्षमता थी। पीटर जानते हैं आप उस कायर उस पीटर न उन्हें अस्वीकार किया "मैं नहीं जानता इस व्यक्ति को मैं नहीं जानता तुम क्या कह रहे हो आदि आदि।

सचमुच वह मीमा का पार कर गया था। और मेरे वे मित्र ग्न्दा मे उन्न हैं 'तुम पीटर हो और इसी शिला पर मैं अपना गिरजाघर बनाऊँगा। व्यग्य इसमें आगे नहीं जा सकता था नहीं सकता आप ? पर नहा विन्य ग्न्हीं का होना है।' मुनिए इन्होंने क्या था । उन्होंने क्या था निश्चय ही उह प्रश्न की पूरी जानकारी थी। और फिर वह हमेशा के लिए चले गए, उन्हें छोड गए निणय और निन्दा करने के लिए आग पर क्षमा और मन म दण्ड के भाव लिए हुए।

यह नहा कहा जा सकता है कि कम्या नेप नहीं है अगर नहीं हम उसकी बात कह सकते नहीं। बग जनना हो है कि किसी का भी निर्दोष नहीं माना जाता है। निर्दोषिता के न्द क ऊपर निणायक मडराते हैं, हर प्रकार के निणायक प्रभु के नाम पर निणय करने वाले और प्रभु का न मानने वाले—जो वास्तव म एक-से ही हैं लिटल ईज की काल कोठरी न पहुँचकर धुल मिल जाते हैं। क्योंकि मारा दोष आस्थावानों के मत्थे नहीं मढ़ देना चाहिए दूसरे भी इसमें शामिल हैं। आप जानते हैं इस शहर म एक मकान की जिसमें ईसाई रहा था, क्या गति हुई ? पागलखाना बन गया है वह। हाँ, यह सामान्य प्रलाप है और उत्पीडन। हम भी स्वाभाविक ही है कि बडा पहुँचने पर प्राप्य हो। पागल तो यह दर ही लिया है कि मैं गुद छोड़ना नहीं और रही आपकी मो मैं जानता हूँ कि आप भी ऐसी तरह सोचते हैं। अन क्योंकि हम सब निणायक हैं इसलिए हम सब एक-दूसरे के सामने दोषी हैं, अपने आप को सब मसीहा हैं एक व दोस्त एक सलीब पर लटकाए हुए और हमेशा बिना जाने हुए कि क्या। और सलीब पर तो हम होना ही था अगर मैं, बकमा मैं एक शहर न पट निकालना, एक-मात्र हल सच सन्तान

नहीं मैं एक स्त्री मैं मर गया, डरिए नहीं। उसके अलावा मैं आपको साथ छोड़ना चाहता हूँ, क्योंकि मैं दरवाजे पर पहुँच गए हैं हम। अकेलेपन म और अवसाद के क्षण म आदमी का प्रवृत्ति अपने को

पगम्बर समभन की हो जाती है। सब-कुछ कह चुकने के बाद वही तो मैं हूं भी, पत्थरों के कोहरे के और स्थावर जल के रेगिस्तान में शरण लिये हुए—बुरे दिनों के लिए एक खोखला पगम्बर मसीहा के बगर गलाइजा बुखार और शराब से भरा हुआ फफूंद लगे हुए इस दरवाजे पर पीठ टेके, घिरे हुए आकाश की ओर उंगली उठाए, उन संस्कार विहीन व्यक्तियों पर अभिशापों की बौछार करता हुआ, जो निर्णय सहन नहीं कर पाते हैं—क्योंकि वे नहीं सहन कर पाते हैं, परम प्रिय मित्र और यही तो सारा प्रश्न है। जो किसी विधि में आस्था रखता है वह उस निर्णय से घबराता नहीं जो उसे उसके समुचित स्थान पर रख देता है ऐसी व्यवस्था के अन्तर्गत जिसमें उसका विश्वास है। पर मनुष्य की तीव्रतम यातना पहुंचती है बिना किसी विधि के निर्णय पाने से। हम उसी यन्त्रणा को भोग रहे हैं। अपनी प्राकृतिक बल्गा के अभाव में हमारे निर्णायक जो कि खुले छोड़ दिये गए हैं बेतहाशा अपना काम निपटाते जा रहे हैं। इसलिए हम उनसे ज्यादा तेज बढ़ना है है न? और यह वाकई पागलखाना है। पगम्बर और नीम-हकीम गलियों में बढ़ते जाते हैं, वे जल्दी से कोई उत्तम कानून या कोई त्रुटिहीन व्यवस्था लेकर वहां पहुंचना चाहते हैं संसार के रिक्त हो जाने के पहले। भाग्य से मैं आ पहुंचा। मैं हूं आदि और अन्त मैं विधि की घोषणा करता हूं। सक्षेप में मैं अनुतापी निर्णायक हूं।

हां हां मैं कल आपको बताऊंगा कि इस श्रेष्ठ व्यवसाय के अन्तर्गत क्या-क्या है। आप परसों जा रहे हैं इसलिए हम जल्दी है। मेरे घर पधारेंगे न? तीन बार घंटी दीजिएगा। आप पेरिस वापस जा रहे हैं? पेरिस बहुत दूर है पेरिस बहुत सुन्दर है मैं उसे भूला नहीं हूं। इन्हीं मौसम में उसकी गोधूली-वेलाओं की सुध याद है। सूखी और खड़खड़ाती हुई संध्या छतों से नीली पड़ती हुई, नगर के ऊपर उतरती है नगर गुनगुनाता है नदी मानो पीछे को बहने लगती है। तब मैं सड़कों पर घूमा करता था। वे अब भी घूमते हैं मैं जानता हूं। वे घूमते हैं

थान्त माया और कडे अनुशासन म व्यवस्थित घर की ओर तेजी म जान का बहाना करते हुए—आह मेरे दोस्त, आपको मालूम है वह जीव क्या होता है जो बड-बडे शहरो म अकेला घूमता रहता है ?

मुझे शर्म मालूम होती है कि आप आये हैं और मैं बिस्तर म पडा हूँ। कुछ खास नहीं है थोडा-सा बुखार है जिसका इलाज मैं जिन शराब से कर रहा हूँ। मुझे इन दौरो की आदत है। मलेरिया है मेरी समझ म मुझे तब हो गया था जब मैं पोप बना था। नहीं, मैं तो यो ही मजाक कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ आप क्या सोच रहे हैं मेरी बातों म सत्य और असत्य को सुलझाकर अलग करना बहुत मुश्किल है। मैं मानता हूँ आप ठीक ही सोचते हैं। मैं स्वय एक व्यक्ति को मैं जानता था जो मानव-जाति को तीन वर्गों मे बाँटा करता था—वे जो यह समझते हैं कि झूठ बोलने पर बाध्य होने की अपेक्षा यह बेहतर है कि छिपाने के लिए कुछ हो ही न दूसरे वे जो झूठ बोलना पसन्द करते हैं, इसकी अपेक्षा कि छिपाने को कुछ भी न हो और अन्त म वे जो दोनो ही पसन्द करते हैं झूठ बोलना भी और छिपाकर रखना भी। अब आप ही तय कर लें कि मैं किस वर्ग म शामिल होने योग्य हूँ।

पर मुझे क्या परवाह ! क्या असत्य अन्ततोगत्वा सत्य तक नहीं पहुँचाता ? और क्या मेरी सारी गाथाएँ व सत्य हो या असत्य, एक ही निष्कर्ष की ओर इंगित नहीं करती ? क्या उन सबका एक ही अर्थ नहीं है ? फिर इससे क्या कि व सत्य हैं या असत्य यदि दोनो ही स्थितियो म उनका महत्त्व यह बताने में है कि मैं क्या रहा हूँ और क्या हूँ ? कभी कभी सत्यवादी की अपेक्षा असत्यवादी के मन म झाँक लेना ज्यादा आसान होता है। सत्य प्रकाश की तरह चौंधिया देता है। इसके विपरीत असत्य एक सौम्य धुधलके की तरह है जो हर चीज को उभारकर सामने कर देता है। खैर आप जसे चाहें समझें पर बन्दी-शिविर म

मेरा नाम पोप रखा गया था।

बैठ जाइए मेहरबानी से। आप कमरे का परीक्षण कर रहे हैं? बेशक खाली-खाली है पर साफ है। वरमियर की किसी कलाकृति के समान फर्नीचर और ताम्र पात्रों से रहित पुस्तकों से भी रहित, क्योंकि काफी दिन हुए मैंने पढ़ना छोड़ दिया। एक समय था जब मेरा घर अधपढ़ी किताबों से भरा रहता था। यह उतनी ही वाहियात चीज है जितनी उनकी आदत जो 'फोआग्रा' का एक टुकड़ा काट लेते हैं और बाकी फिकवा देते हैं। जो भी हो मुझे स्वीकारोक्तियों के अलावा और किसी के लिए रुचि नहीं रही और स्वीकारोक्तियों के लेखक खास इस ध्येय से लिखते हैं कि सच्चा स्वीकरण बचा जाएँ, जो वे जानते हैं उसके बारे में कुछ न बताएँ। जब वे कष्टप्रद स्वीकरण के समीप पहुँचने का दावा करते हैं तो सावधान होना पड़ता है क्योंकि तब वे शव का शृंगार करने जाते हैं। विश्वास कर आप मैं खूब जानता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ। इसलिए मैंने बन्द कर दिया। न कोई किताब न और कोई बेकार चीजें मात्र आवश्यकता की वस्तुएँ स्वच्छ और चमकती हुई जैसे ताबूत। इसके अलावा ये डच पलंग इतने सख्त इनकी निष्कलंक चादरें इनमें तो आदमी वैसे ही मर जाता है जैसे कफन में लपेटा हुआ हो पावनता का लेप लगाये हुए।

आप यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि मैंने पोप बनकर क्या-क्या कारनामे किये थे? कुछ भी असाधारण नहीं था राज मानिए। क्या मुझमें इतनी शक्ति होगी कि मैं आपको बता सकूँ? हाँ बुखार उतर रहा है। वह सब बहुत पुरानी बात है। अफ्रीका में किन्हीं मिस्टर रोमेल की कृपा से युद्ध हो रहा था। मैं उसमें फँसा नहीं था घबराइए नहीं। मैं तो यूरोप के युद्ध से ही बच निकला था। सैनिकीकरण हुआ तो था पर मैंने कभी लड़ाई नहीं देखी। एक तरह से मुझे उसका पछतावा है। शायद वह अनुभव बहुत सी चीजों में परिवर्तन ला देता। फ्रांसीसी सेना को मोर्चे पर मेरी आवश्यकता नहीं थी, उसने तो केवल पीछे

न्दन म रिम्मा तन की मुमसे माग की थी। कुछ दिन बाद मैं परिस वापस पहुँच गया नमता के बीच। मुझ प्रतिरोध आन्दोलन न आकर्षित किया उसके बारे म जान जगभग उसी समय चचा करन लगे थ जब मुझे नवरा नान हुआ कि मैं दश प्रेमी हूँ। आप मुस्करा रहे हैं? आप गलती पर हैं। मुझ यह ज्ञान मरों के गलियारों म हुआ था जहाँ स्नान पर। एक कुत्ता गलियारों की भूल भुलया म पहुँच गया था। बडा-सा झबरे बालों वाला एक कान ऊपर को उठाए, हँसती हुई आखें लिए वह ध्यान जान वालों का टाँगें सूघना फुदक रहा था। मुझ बहुत पुराना और बहुत स्थायी प्रम कुत्ता के लिए रहा है। मैं उन्हें इसलिए पसन्द करता हूँ क्योंकि वे हमेशा क्षमा कर देते हैं। इसे मैंने आवाज़ दी। वह सकाच से झिझका। स्पष्ट ही मैंने उसे जीत लिया था। मुझसे कुछ गज आगे उत्साहपूवक अपनी दुम हिलाता हुआ वडा हो गया। तभी एक युवा जमन सिपाही तज़ी से कदम बढ़ाता हुआ मेरे पास स गुज़रा। कुत्त क पास पहुँचकर उसने उसक उसके सिर पर हाथ फेरा। नि सकोच वह पशु उसके हा ल्यार क साथ कदम-स-कदम मिलाता हुआ मेरी आखों स आमल हो गया। विद्वेष और तीव्र क्षोभ के जो भाव जमन सिपाही क प्रति मरे मन म उठे उनस साफ़ ज़ाहिर हो गया कि मेरी प्रतिक्रिया दश प्रम स प्रेरित थी। अगर कुत्ता किसी फ्रांसीसी नागरिक के साथ चला जाता तो मैं ध्यान भी न देता। पर मैंने उस स्नहशील कुत्त का जमन सेना के सामने मित्र क रूप मे कल्पना की और इसस मुझे बहुत गहरा क्रोध आया। अत परीक्षण प्रामाणिक सिद्ध हुआ।

मैं दक्षिण-पश्चिम पहुँचा इस उद्देश्य स कि प्रतिरोध आन्दोलन के बारे म पता लगाऊँगा। पर वहाँ पहुँचकर और पता लगाकर मैं संकोच कर गया। यह उत्साह मुझ कुछ पागलपन-सा **लगा—एक** शब्द में कहें तो रामान्टिक। मैं सोचता हूँ कि इसके बाद **ककका** के ना मेरे स्वभाव के हो अनुरूप था और न ऊबाऊपन था मेरे मुझे ऐसा लगा कि मुझसे कहा जा रहा है किसी ०८ ।

पर बुनाई करता रहूँ—रात दिन लगातार, जब तक कि छिपी जगह से पकड़ने के लिए कुछ दानव न आ पहुँचें और मेरी बुनाई उधेड़कर मुझे घसीटते हुए दूसर तहखाने में न ले जाएँ जहाँ मार-मारकर मेरा दम निकाल दें। जो इस रसातली वीरता में भाग ले रहे थे मैंने उनकी सराहना तो की, पर उनका अनुकरण न कर सका।

फिर मैं सागर पार कर उत्तरी अफ्रीका पहुँचा। मन में कुछ अस्पष्ट सा उद्देश्य लन्दन पहुँचने का था। अफ्रीका में स्थिति साफ न थी। दोनों प्रतिरोधी दल समान रूप से मेरी दृष्टि में सच्चे उतरते थे इसलिए मैं अलग किनारे खड़ा रहा। आपकी चेष्टाओं से मुझे लग रहा है कि आपकी राय में मैं बहुत जल्दी-जल्दी इन बातों को कहे जा रहा हूँ जिनका कि कुछ महत्व हो सकता है। पर यों कहें हम कि आपका सच्चा मूल्यांकन करके ही मैं जल्दी कह रहा हूँ ताकि आप इन बातों पर ज्यादा ध्यान दें। जो भी हो, मैं ट्यूनिसिया पहुँच गया जहाँ एक स्नेही मित्र ने मुझे कुछ काम दे दिया। वह मित्र एक बहुत बुद्धिमती महिला थी जो फिल्म व्यवसाय से सम्बन्धित थी। मैं उनके पीछे पीछे ट्यूनिस पहुँचा पर उनका असली धन्धा अल्जीरिया में मित्र राष्ट्रों के उतरने के बाद के दिनों तक पता न लगा पाया। उस दिन जर्मनों ने उन्हें बन्द कर लिया और मुझे भी बिना किसी उद्देश्य के। मुझे नहीं मालूम उन महिला का क्या हुआ। रहा मेरी सो मुझे कोई हानि नहीं पहुँचायी गई और मैंने काफी परेशानी के बाद जाना कि मुझे बन्द करना मात्र सुरक्षा के हेतु था। मुझे ट्रिपोली के पास एक शिविर में नजरबन्द रखा गया था जहाँ हमने अत्याचार का अपेक्षा प्यास और दारिद्र्य से ज्यादा कष्ट पाया। उसका वर्णन मैं नहीं करूँगा। हम जो इस अर्ध शताब्दी के बालमज हैं, हम एसे स्थानों की कल्पना करने के लिए किसी चित्र की आवश्यकता नहीं पड़ता। सौ वर्ष पहले लोग झीलों और वनों के बारे में भाव विभोर हो जाते थे। आज काष्ठ-काष्ठ ही हमारी कविता है। इसलिए मैं आप पर भरोसा करता हूँ आपको खुद ही थोड़ी मोटी बातें जोड़नी होंगी—

गर्मी, सिर पर सूरज, मक्खियाँ और पानी का अभाव।

मेरे साथ एक युवा फ्रांसीसी था जो आस्थावान था। हो [illegible] यह परी-कथा-सी है डाकिला की तरह की ही सही। वह युद्ध करने के लिए नाम की सीमा पार कर स्पेन पहुँचा था। वहाँ [illegible] न उस [illegible] बन्द कर दिया और यह देखकर कि [illegible] के शिविरों में विश्राम [illegible] हो रोम का आशीर्वाद प्राप्त है इस बार विषाद हो गया। न तो [illegible] आकाश ही [illegible] वह उसके [illegible] पहुँचा था और न शिविर का [illegible] इस विषाद में उसका [illegible] समय हुआ। उसके चिन्तन ने [illegible] ने भी, उस [illegible] विभिन्न कर दिया था। एक दिन जब हम [illegible] अन्दर थे [illegible] में माना [illegible] हुआ सीला चू रहा था। हम दस-ग्यारह आदमी मक्खियों के बीच पड़े हाँफ रहे थे। उसने पाप के विरुद्ध जिसे वह [illegible] कहकर पुकारता था, अपने विषाक्त शब्द-बाण छोड़ना शुरू किया। [illegible] हमारी तरफ, अपनी एक हृष्ट की बड़ी [illegible] के ऊपर से [illegible] की तरह [illegible] देखा। कमर तक नंगा बदन पसीने में [illegible], अपनी उभरी हुई पसलियों के कुछो-[illegible] पर उसने उँगलियाँ चलाना शुरू किया। उसने हमारे सामने घोषणा की कि एक नया पाप का [illegible] है जो शीन [illegible] के बीच रह न कि सिंहासन पर बैठकर प्रभु का नाम जप, और जितनी ही जल्दी यह हो सके उतना ही अच्छा हो। उसने अपना सिर हिलाते हुए [illegible] भी [illegible] पूरा। हो, उसने फिर कहा [illegible] हो सब उन्नी [illegible]। फिर वह सहसा शान्त हो गया और [illegible] में बोला कि हम पाप के स्थान पर अपने हो नीचे में [illegible] चुन लें [illegible] और गुणों के साथ एक [illegible] पुरुष को चुनें और उस पर निष्ठा रखने की शपथ लें [illegible] कि वह [illegible] पर राजी हो कि अपने अन्दर में और दूसरा के अन्दर हमारी [illegible] का शान्ति का जीवन्त रखना। उसने पूछा, "[illegible] में किसके [illegible] मतन अधिक हैं?" [illegible] में मैंने अपना हाथ उठा लिया और [illegible] मैं

ही निकला जिसने अपना हाथ उठाया था। "ठीक है, जो-अपटिस्ट ही सही। नहीं, उसने एकदम यह तो नहीं कहा, क्योंकि उन दिनों मेरा नाम दूसरा था। उसने यह घोषणा की कि अपने का नामज़द करना जिस प्रकार कि मैंने किया था, महानतम गुण की भी पूर्व-कल्पना कर लेना है और इसलिए उसने मुझे निर्वाचित करने का प्रस्ताव रखा। दूसरों ने भी हँसी में ही मान लिया पर उनकी हँसी में गम्भीरता का कुछ पुट था अवश्य। सच तो यह है कि डुगेकलों ने हमें प्रभावित किया था। मुझे लगता है कि मैं भी केवल मजाक ही नहीं कर रहा था। पहली बात तो यह है कि मेरा विचार था कि हमारा यह छोटा सा पैग़म्बर सही कह रहा है और फिर सूरज की कड़ी धूप, पस्त कर देने वाला कठोर श्रम पानी के लिए संघर्ष—हमारी दशा कुछ बहुत अच्छी नहीं थी। जो भी हो मैंने अपनी धर्माध्यक्षता कई हफ्ता तक चलायी, निरन्तर बढ़ती हुई गम्भीरता के साथ।

उसमें था क्या-क्या ? मैं एक प्रकार का दल नेता था या सेल' के मन्त्री की तरह। दूसरों की उनकी भी जिन्हें आस्था नहीं थी, जो भी हो मेरा आदेश पालन करने की आदत पड़ गई। डगेकलों को वेदना थी। मैंने उस वेदना का उपचार किया। तब मैंने जाना कि मैं जितना आसान समझता था पोप बनना उतना आसान नहीं है, और कल ही मुझे यह बात याद आई उस वक्त जब मैंने अपने भाई निर्णायकों के बारे में इतना अवहेलना से बातें कीं। शिविर में सबसे बड़ी समस्या थी पानी का बँटवारा करना। दूसरे दल राजनीतिक या साम्प्रदायिक बन गए थे और हरएक अपने अपने साथियों के पक्ष में था। परिणामस्वरूप मुझे भी अपने दल के साथ पक्षपात करना पड़ा। शुरूआत इसी रियायत से हुई। अपने दल के भीतर भी मैं पूरी समानता नहीं रख पाता था। अपने साथियों की दशा के या जो काम उन्हें करना पड़ता था उसके अनुसार कभी एक के साथ कभी दूसरे के साथ रियायत कर देता था। आप विश्वास करें इस प्रकार के भेद भाव का बहुत दूर तक प्रभाव

पड़ता है। पर निश्चय ही मैं थक गया हूँ और उन दिनों के बारे में अब सोचना नहीं चाहता। इतना ही कह लें कि उस दिन मैं चरम सीमा पर पहुँच गया जिस दिन मैंने स्वयं एक मरणासन्न साथी के हिस्से का पानी पी लिया। नहीं-नहीं, वह डुगेरू ना नहीं था, वह तो तब तक मर चुका था—शायद इसी वजह से कि वह अपने प्रति बहुत कंजूसी बरतता था। इसके अलावा अगर वह होता तो उसके प्रति स्नेह के कारण मैं ज्यादा देर तक अपने को रोक रहता, क्योंकि मैं उससे स्नेह करता था—हाँ, मैं उससे स्नेह करता था, मुझे लगता तो कम-से-कम ऐसा ही है। पर मैंने पानी पिया, इतना तो निश्चित है, अपने को यह विश्वास दिलाते हुए कि दूसरों को उसकी अपेक्षा मेरी ज्यादा जरूरत है। फिर वह तो किसी भी हालत में मरा ही जा रहा था और दूसरों के लिए अपने को जिन्दा रखना मेरा कर्तव्य था। इसी प्रकार, प्रिय मित्र, साम्राज्य और सम्प्रदाय मरण मार्तण्ड के अधीन जन्मते हैं और मैंने कल जो कहा था उसका कुछ शोधन करने के लिए मैं आपको अपना वह महान् विचार बताऊँगा जो यह सब कहते हुए मेरे मन में उठा और जिसके विषय में मुझे अब निश्चय नहीं है कि वह अनुभूति थी या स्वप्न। मेरा महान् विचार यह है कि मनुष्य को चाहिए कि पाप को क्षमा कर दे। पहली बात तो यह है कि क्षमा का सबसे अधिक आवश्यकता उसी को है। दूसरे यही एक तरीका है उससे ऊपर अपने को स्थापित करने का।

आपने दरवाजा ठीक से बन्द कर दिया था? हाँ। जरा देख लीजिए मेहरबानी से। माफ करें मुझे मैं चिटकनी-ग्रन्थि से पीड़ित हूँ। ठीक आँख लगने के समय मुझे यह नहीं याद रहता कि मैंने चिटकनी लगाई है या नहीं। और हर रात उठकर मुझे देखना पड़ता है। जैसा मैंने आपको बताया है आदमी को किसी बात का निश्चय नहीं हो सकता। यह मत सोचिएगा कि चिटकनी के बारे में यह परेशानी एक सहमे हुए सम्पन्न की प्रतिक्रिया है। बीते दिनों में मैं न अपना घर बन्द करता था

और न अपनी मोटर। मैं अपनी धन दौलत को ताले में नहीं रखता था जो मेरा था उससे मैं चिपका नहीं रहता था। सच तो यह है कि किसी भी चीज़ का स्वामी होने में मुझे शर्म लगती थी। सामान्य बात चीत के दौरान में मैं कह उठता था, गम्भीरता से कि 'सम्पत्ति राजनीति हत्या है'। इतना बड़ा दिल न रखने के कारण कि अपनी सम्पत्ति सुपात्र मित्रों के साथ बाँट लूँ मैं उसे अनन्त चारा के प्रति समर्पित कर देता था इस आशा से कि अन्याय का संयोग से ही सही, परितोष कर सकूँ। और आज मैं किसी चीज का स्वामी हूँ भी नहीं। इसलिए मुझे अपनी सुरक्षा का ख्याल नहीं है। मुझे ख्याल अपना है और अपनी मन स्थिति का। उतना ही मैं उत्सुक हूँ अपने उस घिरे हुए प्यारे से संसार का पट बन्द कर देने के लिए जिसका कि मैं राजा हूँ धर्माध्यक्ष हूँ और निर्णायक हूँ।

खैर आप कृपा करके ज़रा उस आलमारी को खोलिए? हाँ देखिए उस चित्र को। आप नहीं पहचानते? यह है दि जस्ट जजेज़'। आपको अचम्भा नहीं होता? क्या सम्भव है कि आपकी संस्कृति में कुछ दरार पड़ गई हो? पर अगर आप अखबार पढ़ते रहे होंगे तो आपको याद होगा कि १९३४ में गाँ के सेंट-बवन गिरजाघर से वैन आइक के सुप्रसिद्ध कलाचित्र दि एडोरेशन ऑफ दि लैम्ब के एक भाग की चोरी हो गई थी। उस भाग का नाम था दि जस्ट जजेज़। उसमें निर्णायकों को घोड़ों पर सवार पुनीत पशु की आराधना के हेतु आते हुए चित्रित किया गया था। क्योंकि मूल कृति कभी मिली नहीं उसके स्थान पर एक उत्तम प्रतिलिपि रख दी गई थी। यह है वह मूल कृति! नहीं मेरा उसमें कोई हाथ नहीं था। मेक्सिको सिटी का सवार काटने वाले एक आदमी ने—आपने उस शाम को उसे देखा था—वनमानुष के हाथों शराब की एक बोतल के लिए एक रात बहुत पीकर प्यारा बेच दिया था। मैंने पहले अपने मित्र को राय दी कि उसे किसी बड़े सम्मान के स्थान पर लटकाए और बहुत दिन तक जब हमारे निष्ठावान निर्णायकों की खोज

चार हजार में मची थी, वे 'मेक्सिको सिटी' में शरणार्थियों और दलालों के ऊपर प्रतिष्ठापित बैठे रहे। फिर वनमानुष ने मेरी प्रार्थना पर उन्हें यहाँ मेरे संरक्षण में रख दिया। थोड़ी आनाकानी की उसने पर जब मैंने उसे बात समझायी तो डर गया। तब से ये आदरणीय निर्णायक मेरे एक-मात्र साथी हैं। 'मेक्सिको सिटी' में नगर की आल्मारी के ऊपर आपने देखा था वे कैसा खालीपन छोड़ आए हैं।

मैंने चित्र को वापस क्यों नहीं किया? ओहो, आपकी प्रतिक्रिया तो पुलिस वालों जैसी है? हाँ, बेशक तो मैं आपको वैसे ही उत्तर दूंगा जैसे सरकारी वकील को देता, अगर कभी किसी का ध्यान भी जाता कि मेरे कमरे में इस चित्र को शरण मिली होगी। पहली बात तो यह कि यह मेरी सम्पत्ति नहीं है बल्कि 'मेक्सिको सिटी' के स्वामी की है जो कि उसका अधिकारी होने के लिए उतना ही योग्य है जितना कि वे आर्च बिशप। दूसरी बात, कि जो लोग 'एडोरेशन ऑफ़ दि लैम्ब' के सामने से गुजरते हैं वे मूल कृति और प्रतिलिपि में अन्तर नहीं बता सकते इसलिए मेरे इस दुराचरण से किसी को हानि नहीं पहुँचती। तीसरी बात यह है कि इस प्रकार मैं महिमा-मण्डित हूँ। कृत्रिम निर्णायक पूजे जाने के लिए संसार के सामने रखे गए हैं और असली मेरे केवल मैं ही परिचित हूँ। चौथी बात, कि इस तरह कदाचित जेल जाने की सम्भावना है और यह विचार ही एक प्रकार से आकर्षक है। पाँचवीं बात कि वे निर्णायक 'लैम्ब' से मिलने जा रहे थे और अब कोई लैम्ब (या भोलापन) शेष नहीं है और क्योंकि वह चतुर बदमाश जिसने यह चित्र चुराया था, किसी अज्ञात न्याय का साधन-मात्र था, फिर न्याय के मार्ग में बाधा डालना उचित न होगा। और आखिरी बात कि इस प्रकार सब-कुछ सन्तुलित हो जाता है। हमेशा के लिए न्याय निर्लोपिता से अलग कर दिया जाता है—एक सलीब पर चढ़ा है और दूसरा आल्मारी में बन्द—फिर मेरे लिए अपनी धारणाओं के अनुरूप आचरण करने का रास्ता साफ है। निश्चिन्त मन से मैं पश्चात्तापी निर्णायक का कठिन धंधा कर सकता

हूँ जिसमें मैंने कितने ही अंतर्विरोधों और विनष्ट आशाओं के बाद अपने को स्थापित किया है और अब, क्योंकि आप जा रहे हैं, समय आ गया है कि मैं आपको यह बताऊँ कि वह है क्या।

पहले मुझे उठकर बैठ जाने की इजाज़त दें ताकि मैं ज्यादा आसानी से साँस ले सकूँ। ओफ, मैं कितना कमजोर हो गया हूँ! मेरे निर्णायक को कृपा करके बंद कर दीजिए। रही अनुतापी निर्णायक के धंधे की बात सम्प्रति मैं वही कर रहा हूँ। सामान्यतः मेरा दफ्तर 'मेक्सिको सिटी' में रहता है। पर वास्तविक कार्य तो काम करने की जगह से परे पहुँच जाता है। बिस्तर में पड़े हुए बुखार से ग्रस्त भी मैं कार्यरत हूँ। उसके अलावा इस धंधे को किया नहीं जाता, यह तो निरन्तर आदमी की हर साँस में रहता है। यह न सोचिएगा कि मैंने इतने विस्तार से पाँच दिन तक जो आपसे बातचीत की है वह सिर्फ मन-बहलाव के लिए। नहीं मैं अतीत में बहुत बक-बक कर चुका हूँ। अब मेरे शब्द उद्देश्य पूर्ण होते हैं। स्पष्ट है कि उनका उद्देश्य होना है हँसी का चुप कराने का व्यक्तिगत रूप से निर्णय से बचने का यद्यपि कोई छुटकारा है नहीं। छुटकारा पाने के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा क्या यह नहीं है कि हमीं सबसे पहले अपने आपको दोषी ठहराते हैं? इसलिए आवश्यक है कि शुरू में ही दोष को बिना भेद भाव के सबमें बाँट दो ताकि प्रारम्भ से ही उसकी सघनता कम हो जाए।

किसी के लिए कोई छूट नहीं आरम्भ से ही मेरा सिद्धान्त यही रहता है। मैं अस्वीकार करता हूँ सच्चिरत्र को आदर योग्य भूल को, क्षमायाचना को, लोप या हल्का करने वाली परिस्थितियों को। मेरे लिए क्षमादान अथवा आशीर्वाद देने का प्रश्न नहीं उठता। हर एक चीज़ को सीधे-साधे तरीके से जोड़ लिया जाता है और फिर 'इतना हुआ तुम कुकर्मी हो मिथ्यावादी हो जन्म से ही असरदगानी हो अप्राकृतिक व्यभिचारी हो कलाकार हो आदि आदि। बस, यों ही। इतने ही सूखे शब्दों में जिस प्रकार राजनीति में उसी प्रकार दर्शन

से था । मैं उसी सिद्धान्त का अनुयायी हूँ जो आदमी को निर्दोषिता प्रदान करना अस्वीकार करता है और उस आचार प्रणाली का समर्थन करता है जो उनके प्रति दासों की तरह व्यवहार करे । मुझमें मैं देख रहे हैं, आप देखते हैं गुलामी के समर्थक एवं प्रबुद्ध वकील को।

सच तो यह है कि गुलामी के दायरे कोई निश्चयात्मक रूप से हो नहीं सकता। मुझे बहुत जल्दी इसका ज्ञान हो गया था। एक समय था जब मैं हमेशा स्वतन्त्रता की बात किया करता था सुबह के नाश्ते के समय मैं उसे मक्खन की तरह टोस्ट पर लगाता दिन-भर उसे चबाता रहता और साथी-संगियों को भी आशा में स्वतन्त्रता की सुन्दर गंध मिला करता। उस मूलमन्त्र से मैं अपने हर विरोधी को धराशायी कर देता मैंने उसका अपनी कामनाओं और अपनी शक्ति के हेतु उपयोग किया। पलंग पर लेटे हुए अपनी संगिनी के कान में मैं यह मन्त्र गुनगुनाता और इससे उन्हें त्यागने में मुझे सहायता मिलती। मैं चुपके से उसे पर टरकाए, मैं आकाश में उड़ा जा रहा हूँ और अपना सन्तुलन खो रहा हूँ। आखिर कभी-कभी स्वतन्त्रता का उपयोग अधिक निःस्वार्थ भाव से भी मैंने किया था और यह भी—जरा सोचिए तो मैं कितना भोला था—कि दो-तीन बार उसकी सुरक्षा के लिए खड़ा भी हुआ, पर कायर इस हद तक नहीं कि उसके लिए जान दे दूँ। फिर भी कुछ खतरे तो मैंने उठाए ही। इस उतावलेपन के लिए मुझे क्षमा मिलना चाहिए मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं नहीं जानता था कि स्वतन्त्रता कोई पुरस्कार अथवा उपाधि नहीं है जिसकी खुशी शैम्पेन पीकर मनायी जाए। न ही वह कोई उपहार है या स्वादिष्ट मिठाइयों का डिब्बा जो ऐसा हो कि आप अपने होठ चाटते रह जाएँ। अरे नहीं! इसके विपरीत वह तो कठिन श्रम है और बड़ी लम्बी दौड़, एकदम अकेली और बहुत थकान वाली। शैम्पेन नहीं, कोई मित्र नहीं जो स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए आपके अभिवादन में अपना गिलास उठाएँ। एक कमरे में अकेले, न्यायाधीशों के सामने कठघरे में अकेले

और अपने निर्णय के समक्ष अथवा दूसरों के निर्णय के समक्ष निश्चय करने के लिए भी अकेले। सब-कुछ कहकर स्वतन्त्रता न्यायालय में सुनाया गया निर्णय है इसीलिए स्वतन्त्रता का लाभ उठाना इतना दुष्कर है, खास तौर से तब जब आप बुखार में पड़े हों या व्यथित हों या किसी से भी प्यार न करते हों।

आह मेरे दोस्त उस व्यक्ति के लिए जो अकेला है, बिना परमात्मा और बिना किसी स्वामी के, दिन प्रतिदिन का बोझा भयंकर हो जाता है। अतः आदमी को कोई स्वामी चुनना ही पड़ता है क्योंकि ईश्वर का अब फैशन नहीं रहा। उसके अलावा उस शब्द के अब कोई अर्थ नहीं रहे, उसमें अब इतना खतरा भी तो नहीं है कि किसी को धक्का पहुंचा सके। हमारे नैतिक दार्शनिकों को ही ले लीजिए कितनी गम्भीर प्रकृति के होते हैं— अपने पड़ोसी को प्यार करो, वगैरह वगैरह। धार्मिक ईसाइयों और उनमें अब कोई अन्तर नहीं है केवल इतना ही कि वे गिरजाघरों में जाकर उपदेश नहीं देते। आपकी राय में वह क्या चीज है जो उन्हें धर्म-परिवर्तन करने से रोकती है? सम्मान, शायद मनुष्यों के लिए सम्मान हाँ आत्म-सम्मान। वे अपयश नहीं कमाना चाहते, सो अपना भाव अपने तक ही रखते हैं। एक नास्तिकतावादी उपन्यासकार को मैं जानता हूँ जो हर रात प्रार्थना करता था पर उससे कुछ हुआ हवाया नहीं। अपनी किताबों में ईश्वर की कभी खबर ली उसने! क्या भाग लगाई है! एक लड़ाकू स्वतन्त्र विचारवादी से मैंने यह बात कही उसने अपने हाथ ऊपर को उठाए—किसी दुर्भावना से नहीं, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ—ऊपर स्वर्ग की तरफ 'तुम मुझे कुछ नया नहीं बता रहे हो,' उस धर्मात्मा ने लम्बी साँस लेकर कहा, 'वे सब ऐसे ही होते हैं।' उसके कथनानुसार हमारे अस्सी प्रतिशत लेखक, अगर अपनी कृति पर अपना नाम देना बचा सकें तो परमात्मा के गुणगान ही लिखा करें। उसका कहना था कि वे अपना नाम देते हैं क्योंकि वे अपने को ही प्यार करते हैं और वे किसी का भी गुणगान नहीं करते

क्योंकि वे अपने म घृणा करते हैं। पर क्योंकि वे बिना निर्णय दिये रह नहीं पाते, उसका अभाव उपदेश देकर पूरा कर लेते हैं। सक्षेप म, उनका पिशाच सदाचारी होना है। विचित्र युग है यह! कोई आश्चर्य नहीं कि लोग के दिमाग गोरखधंधे में फँस गए हैं और इसमें भी ताज्जुब नहीं कि मेरा एक मित्र जब वह आदर्श पति था तो नास्तिक रहा और व्यभिचारी बनने पर धर्मनिष्ठ बन गया!

आह वे ओछे दगाबाज, नकलब दिखावे वाले नट, पादरी, पर फिर भी कितने करुण! विश्वास मानिए व सब करुण होते हैं, उस समय भी जब दवनाव म आग लगाते हो। नास्तिक हो चाहे श्रद्धा से गिरजाघर जाने वाले, मस्कोवाइट हो चाहे वास्टोनियन, सब धर्मनिष्ठ ईसाई हैं बाप से बेटे तक। पर वास्तव म तो कोई पिता रहा नहीं कोई नियम रहा नहीं। वे स्वतन्त्र हैं इसलिए अपने ही सहारे उन्हें चलना है और क्योंकि वे स्वतन्त्रता या उसके अन्तर्गत निर्णय चाहते नहीं, वे माग करते हैं कि उनके हाथ पर बेंत लगाकर दण्ड दिया जाए। वे घोर नियम बनाते हैं वे शीघ्र सूली लकड़ियों के ढेर लगाते हैं गिरजाघरों का स्थान लेने के लिए। सवोनारोला हैं सब-के-सब मैं कहता हूँ आपसे। पर व केवल पाप म विश्वास करते हैं, क्षमा म नहीं। सोचते अवश्य हैं उसके बारे म। क्षमा ही है जो उन्हें चाहिए—स्वीकरण आत्मसमर्पण, सुख, और शायद क्योंकि वे भावुक भी हैं, वाग्दान, कुमारी वधू, ईमानदार मनुष्य और गिरजाघरों का सगीत। मुझे ही ले लीजिए—और मैं भावुक नहीं हूँ—आप जानते हैं मैं किसका स्वप्न देखा करता था? एक सम्पूर्ण प्रेम का पूरे मन और शरीर का प्रेम, रात दिन का अनवरत आलिंगन, ऐन्द्रिक सुख और मानसिक भावातिरेक—सब पाँच वर्ष तक रहकर मृत्यु म विलीन हो जाए। किन्तु हाय!

इसलिए लक्ष्यकर, वाग्दान और अविघ्न प्रेम के अभाव म होगा विवाह पाशविक विवाह शक्ति और कोड़े के आधार पर। मूल बात तो यह है कि सब-कुछ सरल हो जाए, जैसे बच्चे के लिए सरल हो जाता

है हर ग्राम का आदेश मिले और अच्छा और बुरा, किसी एक के द्वारा मनमाने ढंग से निश्चित करके (और स्पष्ट) बनाया जाए। मैं बिलकुल इसके पक्ष में हूँ चाहे ईसाइयों की तरह न होऊँ और कितना ही सिसेली या गावा की कथा न देखूँ। यद्यपि अन्तिम ईसाई के लिए मेरे मन में स्नेह है, पर पश्चिम के पुलों के ऊपर मैंने भी जाना कि मैं स्वतन्त्रता से डरता हूँ। इसलिए, जय हो स्वामी की! वह कोई भी क्यों न हो जो दैवी विधान का स्थान ले ले। 'हमारे पिता, जो अस्थायी रूप में यहाँ हैं हमारे मार्गदर्शक, पुलकित करने वाले हमारे कठोर स्वामी, और निर्दय और परमप्रिय नायक ।' संक्षेप में कहूँ तो यह कि स्वतन्त्र न रहना ही, और अनुताप में अपने से बड़े बदमाश के आदेशों का पालन करना ही मूल तत्त्व है। जब हम सब दोषी होंगे तभी यह गणतन्त्र होगा। और हाँ प्यारे दोस्त यह भी कि अकेले मरने के लिए हम कल्ला तना होगा। मृत्यु अकेली होती है जबकि दासता सामूहिक है। दूसरा को भी मिलती है और सो भी उसी समय जब कि हमें—और यही तो असली बात है। अन्त में सब साथ पर घुटने टेक और नतशिर।

क्या यह अच्छा नहीं है कि हम बाकी सब संसार की भाँति ही रहें और उसके लिए क्या जरूरी नहीं है कि बाकी संसार हमारी तरह ही हो? धमकी मान-हानि पुलिस उस कल्पना के पावन संसार हैं। उपेक्षित भाग्यहीन जन्तु की तरह दौड़ाया जाता हुआ, और बाधित मैं तभी दिखा सकता हूँ कि मेरा मूल्य क्या है। मैं जो हूँ उसमें रस ले सकता हूँ और अन्त में प्राप्त कर सकता हूँ। इसीलिए मेरे दोस्त स्वतन्त्रता के प्रति आदर करके मैंने एकान्त निर्णय किया कि जो भी आता मिल जाए उसीको जल्दी से यह स्वतन्त्रता सौंप देनी पड़ेगी। और जब भी कर सकता हूँ मेक्सिको सिटी के अपने गिरजाघर में मैं उपदेश देता हूँ। मैं उन भद्रजनों को आमन्त्रण देता हूँ कि अधिकार के प्रति आत्मसमर्पण कर दें और विनयपूर्वक दासता की सुविधाओं की याचना करें—चाहे मुझे इस सबको वास्तविक स्वतन्त्रता का रूप ही क्यों न देना पड़े।

पर मैं पगला नहीं गया हूँ, मैं खूब जानता हूँ कि दासता तत्काल नहीं प्राप्त की जा सकती। इतना ही है कि भविष्य में यह एक वरदान सिद्ध होगी। तब तक मुझे तो वर्तमान के साथ निबाह करना है इसलिए किसी कामचलाऊ समाधान की खोज करनी पड़ेगी। इसीलिए मुझे औरों तक निर्णय का विस्तार करने का दांव और साधन ढूंढना पड़ा ताकि मेरे अपने कन्धों पर उसका भार कम हो जाए। मुझे साधन मिल गए। खिड़की ज़रा खोल दीजिए। बड़ी गरमी है बहुत ज्यादा मत खोलिएगा, मुझे ठण्ड भी लगती है। मेरा विचार सरल है और उर्वर है कि किस तरह सबको फँसा दिया जाए ताकि मैं स्वयं बाहर चैन से बैठा रह सकूं? क्या मैं बहुत से सम्मानित समकालीनों की भांति उपदेश मंच पर आरूढ़ होकर मानवता को कोसूं? बहुत खतरनाक है यह! किसी दिन या किसी रात बगैर चेतावनी दिये हंसी फूट सकती है। आप जो निर्णय औरों पर कर रहे होते हैं उछल कर आपके ही मुंह पर आता है और कुछ हानि भी करता है। तो इससे क्या आप पूछते हैं। तो यह है असाधारण प्रतिभा का प्रमाण। मैंने जाना कि बेंत लिये हुए स्वामियों की प्रतीक्षा करते हुए हम लोगों को कोपरनिकस की तरह तर्क को उलट देना चाहिए ताकि जीत हमारी ही हो, क्योंकि तत्काल अपने ऊपर निर्णय दिये बिना दूसरों पर दोषारोपण नहीं किया जा सकता। इसलिए दूसरों पर निर्णय देने का अधिकार पाने के लिए आवश्यक है कि अपने को पूरी तरह अभियुक्त कर लें। क्योंकि हरएक निर्णायक किसी-न-किसी दिन अनुतापी बन ही जाता है इसलिए दूसरे छोर से राह पकड़कर अनुतापी का व्यवसाय अपनाना होगा, ताकि किसी-न-किसी दिन अन्त में निर्णायक बन सकें। आप समझ रहे हैं मेरी बात? बहुत अच्छा! पर अपनी बात और भी स्पष्ट करने के लिए मैं आपको बताऊँगा कि मैं कैसे काम करता हूँ।

पहले तो मैंने वकालत का अपना दफ्तर बन्द किया, पेरिस छोड़ा और भ्रमण किया। मैंने इरादा किया था कि नाम बदलकर दूसरी जगह जमूं जहाँ मुझे काम की कमी न हो। संसार में बहुतेरे स्थान हैं

पर मयोग, सुविधा नियति का व्यंग्य और साथ ही एक प्रकार के यात्म पीडन की आवश्यकता ने मुझे प्रेरित किया। पानी और कोहरे से भरी नहरों की मेखलाओं में बँधी, विशेष रूप से भीड़ से भरी राजधानी चुनने के लिए—ऐसी जहाँ कि पृथ्वी के चारों कोनों से लोग आते थे। मैंने अपना दफ्तर नाविकों के मुहल्ले में एक शराबखाने में स्थापित किया। बन्दरगाह में विविध प्रकार के ग्राहक मिलते हैं। गरीब धनाढ्यों के मुहल्लों में नहीं जाते लेकिन सभ्य समाज के लोग चक्कर काटते हुए एक बार इन कुत्सित स्थानों में पहुँच ही जाते हैं, जैसा कि आप स्वयं देख चुके हैं। मैं खासतौर से बूर्जुआ की राह देखता हूँ और पथभ्रष्ट बूर्जुआ की प्रतीक्षा कर उसीसे मुझे अधिकतम फल की प्राप्ति होती है। किसी दुर्लभ वायलिन के पारखी की तरह मैं संगीत के सूक्ष्मतम स्वर उसी में निकालता हूँ।

इस तरह मैं अपना उपयोगी व्यवसाय कुछ दिनों से 'मेक्सिको सिटी' में करता रहा हूँ। उसके अन्तर्गत पहले तो यह है जैसा आप अपने अनुभव से जान गए हैं कि सार्वजनिक पाप स्वीकरण जितनी बार हो सके किया जाए। मैं अपने को पुकार पुकारकर कोने-कोने में अपराधी घोषित करता हूँ। कुछ मुश्किल नहीं है क्योंकि अब मुझे स्मृति का वरदान प्राप्त हो गया है। पर इतना कह दूँ मैं आपसे कि मैं बहुत ढंग से छाती पीट-पीटकर अपने को दोषी नहीं ठहराता। नहीं मैं कुशलता से काम लेता हूँ मेरे विभेद और इधर-उधर की बातों का समावेश करते हुए—या यह कि अपने श्रोता के अनुरूप मैं अपने शब्दों का चयन करता हूँ और उसे जताता हूँ कि मुझसे बढ़ चढ़कर वह। जिन बातों का दूसरों से सम्बन्ध है और जिनका मुझ ही से सम्बन्ध है उन्हें मैं मिला जुला देता हूँ। मैं उन विशेषताओं को चुनता हूँ जो समान रूप से हम सबकी होती हैं उन अनुभवों को जो हमने साथ सहे हैं उन कमजोरियों को जो हम सबों में हैं—सब-कुछ बढ़ ढंग का होता है अक्सर के उपयुक्त मनुष्य वास्तव में जो मुझमें और दूसरों में

शासन करता है। इन सबको लेकर मैं एक चित्र का निर्माण करता हूँ जो सबका प्रतिरूप है और किसी का भी नहीं। यों कहूँ कि वह एक मुखौटा है कुछ-कुछ वैसा जैसा मेलों में इस्तेमाल किया जाता है जो सजीव और विशिष्ट भी होता है और निष्प्राण और रीति-बद्ध भी जिसे देखकर लोग कह उठते हैं "अरे इसमें तो मैं भी चित्रित हूँ।" जब चित्र बनकर तैयार हो जाता है, जैसा आज शाम हो गया है, तो मैं बड़े दुख के साथ उसे दिखाता हूँ, 'यह हूँ मैं, हाय!' आरोप की ओर से दोषारोपण समाप्त होता है। पर साथ ही जो चित्र मैं अपने समकालीनों को दिखाता हूँ वह दर्पण भी बन जाता है।

अपमान से लदा, बाल नोचता, चेहरे पर नाखून के निशान लिए, लेकिन पैनी वाली दृष्टि से देखता हुआ मैं समस्त मानवता के सामने खड़ा होता हूँ, अपने कदाचारों की कहानी दुहराता हुआ—पर बिना इस बात को भुलाए हुए कि कैसा प्रभाव डाल रहा हूँ और यह कहता हुआ कि 'मैं नीचों में निम्नतम हूँ'। तब चुपके से मैं 'मैं' की जगह 'हम' कहने लगता हूँ। जब तक मैं इस स्तर पर पहुँचता हूँ कि कहूँ 'हम ऐसे हैं' तब तक खेल खत्म हो जाता है और मैं औरों को धता बता सकता हूँ। निश्चय ही मैं उन्हीं जैसा हूँ। हम सब एक ही गड्ढे में साथ हैं। लेकिन मैं उनसे श्रेष्ठ हूँ इस बात में कि मुझे यह मालूम है और इसलिए मुझे बोलने का अधिकार प्राप्त है। निश्चय ही आप इसका आशय समझ पाते होंगे। जितना ही मैं अपने ऊपर दोषारोपण करता हूँ उतना ही मुझे आपके बारे में निर्णय करने का अधिकार मिलता है। इससे भी अच्छा मैं आपको उकसाता हूँ कि आप स्वयं अपने विषय में निर्णय दें और इससे मेरा उस हद तक भार कम हो जाता है। ओह, मेरे दोस्त, हम अजीब वाहियात जीव हैं और अगर हम अपने ही जीवन पर दृष्टिपात करें तो ऐसे अवसरों की कमी न होगी जिनसे हमें अचम्भा हो और जो हम आत्मनिरीक्षण कर दें। जरा देखिए आप। और सच मानें, मैं बड़े ही ध्यान मात्र से आपकी स्वीकारोक्ति सुनूँगा।

हँसिए मत ! हाँ, आप बडे बेढब मुवक्किल हैं, यह तो मैंने तुरन्त ताड लिया था। पर अनिवार्यतः आप पहुँचेंगे वहीं। अधिकतर लोग बुद्धिमान होने की अपेक्षा भावुक ज्यादा होते हैं, वे एकदम विचलित हो जाते हैं। बुद्धिमानों के साथ कुछ समय लगता है। उनके लिए तो पर्याप्त है कि प्रणाली उन्हें पूरी तरह समझा दी जाए। वे उसे भूलते नहीं मनन करते हैं। देर-सवेर, कुछ तो खिलवाड में, कुछ भावावेग में वे समर्पण करके सब-कुछ बता देते हैं। आप न केवल बुद्धिमान हैं अनुभव से मँजे मँजाए भी दीखते हैं। पर मान लीजिए कि आज आप अपने से उतने प्रसन्न नहीं हैं जितने कि पाँच दिन पहले थे। अब मैं इंतजार करूँगा कि आप मुझे पत्र भेजें या यहाँ वापस लौटें क्योंकि आप लौटेंगे इसका मुझे निश्चय है। आप मुझमें कोई अन्तर नहीं पाएँगे और मैं बदलूँ भी क्या जब कि मुझे वह आनन्द प्राप्त हो गया है जो मेरे अनुरूप है ? मैंने द्विविधता को स्वीकार कर लिया है, बजाय उससे परेशान होने के। मैं तो उसमें जम गया हूँ और वहाँ मुझे वह आराम मिला है जिसे मैं जीवन भर ढूँढ़ता रहा हूँ। मैं गलती पर था जब मैंने आपसे कहा कि मूल बात यह है कि निर्णय से बचो। मूल बात तो यह है कि अपने को हर चीज की छूट दो, चाहे यह भी हो कि समय समय पर अपनी ही क्षुद्रता को जोर-जोर से घोषित करना पड़े। मैं फिर से अपने को हर चीज की छूट देता हूँ और इस बार बिना उस पर हँसी के। मैंने अपने जीवन का ढंग बदला नहीं है मैं अब भी अपने को प्यार करता हूँ और दूसरों का उपयोग करता हूँ। बस इतना ही है कि अपने पापों का स्वीकरण मुझे फिर से हल्के दिल से श्रीगणेश करने की सुविधा प्रदान करता है और दोहरी प्रसन्नता देता है—पहली तो अपने स्वभाव की ओर दूसरे एक मनमोहक पश्चात्ताप की।

जब से मैंने समाधान ढूँढ़ लिया है तब से मैं हर चीज के सामने झुक जाता हूँ—औरतों के दम्भ के ऊपर, आक्रोश के और यहाँ तक कि उस बुखार के भी जो यह मुझ में इस समय बढ़ रहा है। मतलब मैं

अनुभूति प्राप्त कर लेता हूँ—हमेशा के लिए। एक बार फिर मैं उस ऊँचाई पर पहुँच गया हूँ जहाँ तक केवल मैं ही चढ़ पाया हूँ और जहाँ से मैं हर एक पर निर्णय दे सकता हूँ। लम्बे-लम्बे अन्तरालों के बाद किसी सुनहली रात का सुख किन्हीं रंगीन-बनी रूप पर हँसी सुनायी पड़ जाती है और मैं फिर भ्रम में पड़ जाता हूँ। पर शीघ्र ही मैं सब-कुछ कुचल देता हूँ। लोगों को और बातों को, अपनी हीनता के बोझ के नीचे, और फिर मैं तुरन्त चमक उठता हूँ।

तो मैं आपका इन्तज़ार करूँगा 'मैक्सिको सिटी' में जितनी देर आवश्यकता होगी उतनी देर। यह कम्बख़्त जग हटा दीजिए, मैं साँस लेना चाहता हूँ। आप आयेंगे न? मैं आपको अपनी शादी की कुछ बातें बताऊँगा क्योंकि मुझे आपके प्रति एक प्रकार का स्नेह हो गया है। आप रात रात मुझे उनको यह सिखाते पाएँगे कि वे पतित हैं। आज ही शाम को मैं फिर शुरू कर दूँगा। मैं उसके बिना रह नहीं सकता और न ही अपने को उन क्षणों से वंचित रखना चाहता हूँ जब शराब की सफलता में तनाव कोई एक ढेर हो जाता है और अपना छाती पीटना शुरू कर देता है। तब मैं और लम्बा हो जाता हूँ मेरे प्यारे दोस्त और लम्बा! मैं खुलकर साँस लेता हूँ। मैं पर्वत-शिखर पर आरूढ़ होता हूँ और मेरी आँखों के सामने समतल भूमि का विस्तार होता है। परम पिता परमात्मा के समान अनुभव करना और दुश्चरित्रता और बुरी आदतों का प्रमाण-पत्र बाँटना कितना मादक होता है! मैं अपने दुष्ट देवदूतों के बीच सिंहासन पर आरूढ़ होता हूँ ऊँचे स्वर्ग के शिखर पर और मैं देखता हूँ जनसमुदाय को उठता और बढ़ता आता हुआ मेरी ओर धुँधलके में से निरन्तर-निरन्तर। वे धीरे धीरे ऊपर बढ़ते हैं जिनमें से सबसे पहला वाला अभी पहुँचता ही रहा है। उसके अन्धकारयुक्त हाथ के माथे पर के चिह्न में मैं पढ़ सकता हूँ—मनुष्य सामान्य दशा का निवास और उसमें पलायन न कर पाने की हताशा। और यहाँ तक मैं बिना जान-बूझकर व्यभिचार करता हूँ बिना क्षमा किए अपरानुमति प्रदान करता

हूँ और इससे बड़ी बात—कि मैं यह अनुभव करता हूँ कि मेरी आशा घना हो रही है।

हाँ, मैं चल फिर रहा हूँ। एक अवरुद्ध मशीन की तरह मैं पलंग पर लेटा कब रह सकता था? मुझे तो आपसे ऊँचा होना जरूरी है और मेरे विचार मुझे ऊपर उठाते हैं। ऐसी रातों का, या वह कि ऐसी सुबह (क्योंकि पतन उषाकाल में ही होता है) मैं बाहर जाकर ताज़ी मनहरी के किनारे टहलता हूँ। सुरमई आकाश में परों की तहें भीना पड़ती जाती हैं कपोत कुछ और ऊपर चल जाते हैं और छतों के ऊपर से एक गुलाबी प्रकाश मेरी सृष्टि के नये दिन की घोषणा करता है। डोमरेन पर पहली ट्राम गाड़ी नम हवा में अपनी घंटी बजाती है और यूरोप के इस छोर पर प्राणियों के जागने की सूचना देती है—इस छोर पर जहाँ उसी क्षण हज़ारों-लाखों मनुष्य मेरे प्रजाजन, कष्टपूर्वक बिस्तर छोड़ बाहर निकलते हैं मुँह में कड़वाहट भर, अपने अपने आनन्दहीन धंधों पर जाने के लिए। तब इस महाद्वीप पर उड़ान भरते हुए, जो सारे-का सारा अनजाने ही मेरे अधीन है उगते हुए दिवस की स्वर्णिम आभा का पान करते हुए दुःखों के मध्य में चूर मैं सुखी होता हूँ मैं कहता हूँ आपसे कि मैं सुखी हूँ मैं आपको यह न सोचने दूँगा कि मैं सुखी नहीं हूँ मैं मृत्यु-पर्यन्त सुखी हूँ! ओह सूर्य सागर व्यापारी वायुओं वाले द्वीप और यौवन जिसकी स्मृतियाँ मनुष्य को नैराश्य में डुबा देती हैं।

मैं फिर बिस्तर पर लेटा जा रहा हूँ मुझे माफ़ करें। मुझे डर है कि मैं आवेश में आ गया था पर मैं आँसू नहीं बहा रहा हूँ। कभी कभी आदमी बहक जाता है तथ्यों पर शंका करते हुए उस समय भी जब कि उसने सद्जीवन के रहस्य का पता पा लिया होता है। अवश्य मेरा समाधान आदर्श नहीं है। पर जब आपको अपना जीवन पसन्द न हो जब आपको मालूम हो कि जीवन बदलना ही पड़ेगा तो पसन्द का कोई प्रश्न नहीं रह जाता है या रह जाता है? कोई दूसरा व्यक्ति

बन जाने के लिए क्या कर सकते हैं आप ? असम्भव है। आदमी को कुछ भी होने की स्थिति त्याग देनी पड़ेगी, अपना स्वत्व दूसरे के लिए भुला देना पड़ेगा। कम-से-कम एक बार। पर कैसे ? मेरे प्रति ज्यादा कठोर न हों आप। मैं उस बूढ़े भिखारी की तरह हूँ जो एक दिन कैफ़े के चबूतरे पर मेरा हाथ छोड़ ही नहीं रहा था। "आह, श्रीमान इतना ही नहीं है कि मुझमें कोई अच्छाई नहीं है, पर आदमी से डर लगता ही है कि कहीं प्रकाश की गन्ध को भी न खो बैठे।' हाँ, हमने प्रकाश को खो डाला है, वे सुबहें भी और उनकी वह पुनीत निर्दोषिता भी जो अपने को क्षमा कर देते हैं।

देखिए, देखिए, बर्फ गिर रही है। ओह मैं जरूर बाहर जाऊँगा। श्वेत रात्रि में सोया हुआ एम्स्टर्डम, बर्फ से ढंके पुलों के नीचे गहरी हरी नहरें, सूनी सड़कें मेरी दबी हुई पगध्वनि—वह होगी पावनता चाहे वह क्षणिक ही क्यों न हो, कल के कीचड़ के पहले। देखिए, बड़े-बड़े गुच्छे खिड़की के शीशे पर उतरकर आ रहे हैं। जरूर ही ये कपोत होंगे। अन्त में निश्चय करते ही हैं नीचे उतरने का, वे प्यारे पक्षी वे पानी को और छतों को परों की मोटी तह से ढक देते हैं, हर खिड़की के सामने फड़फड़ाते हैं। क्या आक्रमण है! आशा है कि अच्छी खबर ही लाए होंगे। हर एक व्यक्ति तर जाएगा ? हाँ, क्यों ? केवल गिने चुने ही नहीं। सम्पत्ति और कठिनाइयों का साझा होगा और आप, उदाहरण के लिए, आप आज से हर रात मेरी खातिर जमीन पर सोयेंगे। मान जाइए कि अगर स्वर्ग से मुझे ले जाने के लिए कोई विमान उतर आए या बर्फ में आग लग जाए तो आप स्तम्भित रह जाएँगे! आपको विश्वास नहीं ? न मुझे हो। पर तो भी बाहर जाना मेरे लिए जरूरी है।

अच्छा-अच्छा मैं चुप हुआ जाता हूँ, घबराइए नहीं। मेरे भावावेश और प्रलाप को इतना गम्भीर न समझिए। वे नियन्त्रित हैं। अब जब आप मुझसे मेरे बारे में बातें करने वाले हैं तो मैं देखूँगा कि

मेरे तन्मय कर देने वाले स्वीकरण का मेरा उद्देश्य पूरा हुआ या नहीं। असल मे मैं हमेशा आशा करता रहता हूँ कि मेरे साथ बातें करने वाला कोई पुलिस वाला होगा और मुझे 'दि जस्ट जजज' की चोरी के अपराध में गिरफ्तार कर लेगा। सही कह रहा हूँ न कि बाकी बातों के लिए कोई मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकता? पर जहाँ तक उस चोरी का सवाल है वह कानून के शिकंजे में है और मैंने सब व्यवस्था इसकी कर ली है कि मैं उसका सह-अपराधी माना जाऊँ। मैं उस कला-कृति को रखे हुए हूँ और जो देखना चाहता है उसे दिखाता हूँ। तो आप मुझे गिरफ्तार करेंगे यह तो शुभारम्भ होगा।

पर आप पुलिस वाले तो हैं नहीं होते तो बड़ी आसानी हो जाती। क्या? आह मुझे यही तो शंका थी। तो जो अजीब सा लगाव मुझे आपके लिए महसूस होता था उसका कुछ आधार था। तो आप पेरिस में वकालत का गौरवशाली पेशा करते हैं। मुझे लगा था कि हम एक ही जाति के हैं। हम सब क्या एक-से नहीं होते, निरन्तर बोलते रहते हैं पर किसी व्यक्ति विशेष से नहीं हमेशा उन्हीं सवालों का सामना करते रहते हैं यद्यपि उनके उत्तर पहले से ही हम मालूम होते हैं। तो कृपा करके बताइए मुझे सेन नदी के घाटों पर उस रात आपको क्या अनुभव हुआ था और कैसे आप अपनी जान खतरे में न डालने से बच सके? आप स्वयं वे शब्द कह जो मेरी रातों में निरन्तर प्रतिध्वनित होते रहे हैं और जिन्हें आपके मुँह से आखिर मैं कह सकूँगा ओ युवती एक बार फिर पानी में कूद जा ताकि मुझे तुझे बचाने का एक अवसर फिर मिले। दूसरा अवसर! आप कैसा खतरनाक सुझाव है! कल्पना कीजिए मेरे मालिक कि हमारी बात असल में मान ली जाए तो? तब तो हमें यह सब करना ही पड़ जाएगा—आह—पानी कितना ठंडा है! पर हम क्या कर सकते हैं? अब तो बहुत देर हो गई। हमेशा के लिए बहुत देर हो गई—भाग्यवश!

'पतन' में आए विशिष्ट संदर्भों का अर्थ

क्रोमैग्नों एक प्रागैतिहासिक जाति-विशेष, जिसके अवशेष १८६८ में फ्रांस में क्रोमानान नामक गुफा में पाये गए थे।

बेबल की मीनार बाइबिल की एक कथा के अनुसार जल प्रलय के बाद नूह के जहाज में जो मनुष्य बच गए थे उन्होंने बेबल में एक ऐसी मीनार बनाने का बीड़ा उठाया जो आकाश को छू ले। पर सबकी भाषा अलग-अलग होने के कारण यह मीनार कभी न बन सकी। इस लिए आलंकारिक भाषा में ऐसी जगह को जहां सब अपनी अपनी बात कहते हों पर कोई किसी दूसरे की बात समझता न हो, 'बेबल की मीनार' कहते हैं।

सद्दूसी ईसा के जीवनकाल में यहूदियों का एक सम्प्रदाय जो भूत प्रेत, फरिश्तों और पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखता था।

क्वाडग्विर स्पेन की सबसे बड़ी नदी।

वैक्यूम-क्लीनर बिजली की झाड़ू जो सारी गर्द खींच लेती है।

लोहेन्ग्रिन 'हंसों का नायक' (नाइट ऑफ द स्वॅन) नामक जर्मन दंत-कथा में पर्सिवाल नामक पात्र का पुत्र।

लीजन ऑफ ऑनर फ्रांस की सर्वोच्च सम्मानसूचक उपाधि।

साल्वेशन आर्मी (मुक्ति सेना) धार्मिक परोपकारी संस्था।

फ्रांसिस्कन ईसाइयों का एक सम्प्रदाय विशेष जिसकी स्थापना सन्त फ्रांसिस ने १२०६ में की थी।

पर्नोद एक प्रकार का मादक पेय।

सेन फ्रांस की नदी जिसके किनारे पेरिस नगर बसा हुआ है।

एटना सिसिली द्वीप पर एक ज्वालामुखी पर्वत।

व्यापारी वायुएं भूमध्य रेखा के निकट चलने वाली हवाएं जिनके सहारे पुराने जमाने में व्यापारी जहाज चला करते थे।

जेनस रोमन देवता जिसके दो मुंह थे, एक आगे और एक पीछे।

प्लस फोर घुटनों तक पजामे जैसा एक पश्चिमी पहनावा।

द गॉल फ्रांस के वर्तमान राष्ट्रपति जो द्वितीय महायुद्ध में बहुत प्रसिद्ध सेनानायक रह चुके हैं।

आइन्स्टाइन बीसवीं शताब्दी के महानतम वैज्ञानिक और दार्शनिक जिन्होंने सापेक्षता के सिद्धान्त की स्थापना की।

देकार्त (१५९६-[illegible]५०) प्रख्यात फ्रांसीसी वैज्ञानिक और दार्शनिक।

बुखेनवाल्ड नात्सियों का कुख्यात नजरबन्दी कैम्प जहां हजारों-लाखों

यहूदियों को यन्त्रणाएँ देकर मौत के घाट उतार दिया गया था।

दांते (१२६५-१३२१) प्रख्यात इतालवी कवि।

लिम्बो रोमन कैथोलिक धर्म-प्रथा के अनुसार वह जगह जहाँ ऐसे लोग मरने के बाद भेजे जाते हैं जिन्हें जीते जी गिरजाघर की कृपा प्राप्त नहीं हुई, पर जो इतने पापी भी नहीं थे कि उन्हें जान-बूझकर पाप करने वालों का दण्ड दिया जाता।

इसोल्डे किंग आर्थर से सम्बन्धित एक प्रेम-कथा की पात्रा जो सर ट्रिस्टन से प्रेम करती थी। अपनी पत्नी के विश्वासघात के कारण (पत्नी का नाम भी इसोल्डे था) सर ट्रिस्टन को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। अपने प्रेमी के वियोग में इसोल्डे ने भी अपने प्राण दे दिये। दोनों को एक कब्र में दफनाकर उस पर गुलाब और अंगूर की दो बेलें लगा दी गईं जो एक दूसरे में इस तरह मिल गईं कि उन्हें अलग करना असम्भव हो गया।

गिलोटीन फ्रांस की क्रान्ति के समय क्रान्तिकारियों ने अपने विरोधियों के सर काटने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग किया था।

लुई चौदह (१६३८-१७१५) फ्रांस का बादशाह।

फेरो प्राचीन मिस्री बादशाह।

डेक चेयर्स जहाज की खुली छत पर इस्तेमाल की जाने वाली कुर्सियाँ।

लिटल ईज़ टावर आफ लंदन में यातनाएँ देने के लिए बनायी गई काल-कोठरियाँ।

इवेन्जेलिस्ट एक ईसाई सम्प्रदाय।

ल्यूक ईसाई सन्त जिन्होंने ईसा का जीवन-वृत्त लिखा है।

पीटर ईसाई सन्त जिन्हें स्वयं ईसा ने सन्तों का नेता चुना था।

एसाइजा इसराइल के बादशाह आगाज़ के समय के एक पैगम्बर।

वेर्मियर एक प्रख्यात चित्रकार।

फोआ ग्रा एक फ्रांसीसी पकवान।

टोस्का चौदहवीं शताब्दी के बाद प्रख्यात गणपति।

दि जस्ट जजिज़ चित्रकला की एक प्रख्यात कृति।

गां (घेंट) हालैंड का एक प्रसिद्ध नगर।

मस्कोवाइट मास्कोवासी।

बोस्टोनियन अमरीका के प्रख्यात बोस्टन नगर के निवासी।